मयंकमंजरी

महानाटक

श्रृंगाररसका एक अपूर्व दृश्य

"वीणावादनतत्त्वज्ञः स्वरजातिविशारदः ॥
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गंप्रयच्छति १
काव्यालापाश्चयेकेचित् गीतिकान्यखिलानिच ॥
शब्दरूपधरस्यैते विष्णोरंशामहात्मनः" २

श्रीनिम्बार्कसंप्रदायाचार्य्य श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी
सम्पादक आर्य्यपुस्तकालय (आरा) विरचित

बाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई,) के छापेखाने में छपी
जूलाई सन् १८६१ ई० ॥

इस छापेख़ाने में जितने प्रकारकी नाटककी पुस्तकें छपीहैं वहनीचे लिखी जाती हैं

श्रीहनुमन्नाटक भाषा

इसपुस्तकको रतलाम निवासी श्रीमहन्त रामानन्द चतुरदासने निर्मित कियाहैं–इस पुस्तकमें श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र जन्मसे लेकर राजगद्दी पर्य्यन्त अत्यंत लालित्य पदों व रोचक छंदोंमें कहा गयाहै–देखनेके योग्यहै–

रामाभिषेक नाटक

नाटकोंमें महाउत्तमोत्तम नाटक यही है–अव्वल तो इसमें श्री मर्यादा पुरुषोत्तम दशरथकुमारजीके राज्यतिलकका सामान होकर पश्चात् बनगमनहै-दूसरे उसीकेअन्तर्गत क्याहीधूमधामसे नवोरसों कीआकृति दर्शाईगईहै कि बर्णनकरते नहींबनता-कैसाही कठोरचित्त पुरुषहो इसके पढ़ने से अवश्यही अश्रुपतन करदेगा–हास्य रसकी बार्ताभी ऐसीही है कि पढ़ते २ जरूर हँसपड़े–अधिकतर कहाँ तक लिखें इसका मज़ा अवलोकन करनेहीसे मिलैगा–

भ्रमजालक नाटक

एक नवीन प्रकारकी रचना कीहुई नाटकहै–नाट्य रस रसिक पुरुषोंको अवश्य देखनी चाहिये—

नागानन्द नाटक

लाला सीताराम निर्मित– संस्कृतसे देशभाषामें वर्ण प्राति वर्ण उल्था कियागयाहै नाटक करनेवाले पुरुषोंको बड़ाही आनन्दी है–

पंचतनन्त्र

अर्थात् इसमें पांचतंत्र संयुक्तहैं–यहभी लाला सीतारामने संस्कृतसे देशभाषामें नाटक के तौरपर बनायाहै–



मयंकमंजरी नाम महानाटक ॥

श्रीपण्डितकिशोरीलाल गोस्वामी प्रकाशक

प्रस्तावना ॥

नान्दी

छप्पै

लोल कपोलनि जोरि मोरि बाहीं गर भ्राजत ।
पिय दक्षिण तिय बाम बेनु मुद्रा कर राजत ॥
कटि लपेटि पद बाम श्याम तिय दक्षिण गेरयो ।
पद्मासन तिय उपरि तरे पद नटवर फेरयो ॥
मोर मुकुट बंशी लकुट नील पीत पट फरहरै ।
देखुसखी छबिआजुकी तरुकदम्बतर मनहरै १ ॥

पुनर्यथा ॥

जटाजूट मधि गंग हलाहल कण्ठ गसै किमि ।
आननेन्दुयुत मुंडमाल गल व्याल बसै किमि ॥
केहरिपट कटि माहिं शूल कर द्युति दरसै किमि ।
माया त्रिभुवनविदित बामदिशिबामलसैकिमि ॥
जिमिजलकनजम्बूजलज औजंवालसुरूसनुसासि ।
इमिशूलीशितकंठशिव शम्भुईशममहृदयबसि २ ॥

सूत्रधार—(घूमकर) बस ! अब विशेष मंगल की आवश्यकता नहीं हम किसलिये यहां आये, और हमारा मुख्य कर्त्तव्य क्या है ? इसे बिल्कुल भूल इधर उधर भटकरहे हैं. (ठहरके) ओहो ! यह भी समयकी खूबी है, जिसदेशमें इस विद्याका प्रथम २ प्रादुर्भाव भया, और संगीत-साहित्य परिपक्क होकर पृथ्वीभर में व्यापगये, आज वहीं के निवासी नाटक का नाम तक नहीं जानते. यदि है तो इन्द्रसभा-पारसियों के शतरंजी मशालवाले भ्रष्ट खेलहीपर नाटकोंकी इतिश्री है. खेलना तो दूर रहै, जो नाटक रचे, या अभिनय करे, वह हास्यास्पद गिनाजाताहै. छि छि !! (सहर्ष) हां ! यदि श्रीकृष्णचन्द्र ने स्वयं अपने पुत्रों को रम्भाभिसार आदि नाटक खेलनेकी आज्ञा न दीहोती, और महाकवि कालिदास आदि इसके रचयिता न होते तो सत्यही आज यह विद्या सब लोप होजाती, या नीच विद्या गिनीजाती, (चारोंओर देखके) अहह! प्रायः थोड़े दिनोंसे रसिकोंकी इधरभीदृष्टिपड़ी है. यद्यपि अभी भी इसका प्रचुर प्रचार और तादृश आदर नहीं भयाहै, पर होनहार बातका प्रकाश पहलेही भासजाता है. (घूमता है) ओहो ! क्या ! सब दर्शकमण्डली एकत्र होगई ? ठीक, अहा ! इनके मुख से ऐसा अनुराग प्रकट होरहा है के मानो अभिनय देखनेके लिये चातककीन्याईं एकटक हमारे सुधाबुन्द पीनेको अकुलारहेहों. तो अब देर करना उचित नहीं प्यारीको बुलाऊं (घूमताहै)

(गातीहुई नटीका स्वयंप्रवेश)

राग-देस

सबैबिधि समै सराहन योग।
जाके सासनतें विरोधकरि लहै न नीके भोग ॥
जो चाहै सो करै निडर ये बिन औषधको रोग।

श्रीकिशोरियाके बन्धनतें बँधे जगतके लोग १॥

सूत्रधार–(नटीके मुखकीओर सविस्मय देखके स्वगत) वाह! यह घड़ी धन्य है के प्यारी बिना बुलाये आपही गाती बजाती आपहुँची, इसकी प्रसन्नता से जानपड़ता है कि अब कुछ शान्तहुई होगी (प्रकट) क्यों प्रिये! आज कुछ खेल तमाशा होगा?

नटी–(सहर्ष सूत्रधारका हाथ थांभके) हां! नाथ! आज मैं ऐसी प्रसन्नहुईहूं कि "मयंकमंजरी" रूपक खेलनेका जीचाहताहै.

सूत्रधार–कौनसा? (सोचके) जिसे श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी ने बनाया है?

नटी–हां! ठीक अब तुम समझे. उन्हींके मित्र पण्डित जगन्नाथ प्रसाद त्रिपाठी ने इसके खेलने का अनरोध भी किया है.

सूत्रधार–परन्तु तुम्हें इसीके खेलने में इतना आग्रह और अनुराग क्यों है?

नटी–यही कि इसमें मयंकमंजरीने स्वयंवराहो के सतीधर्मकी मर्यादा रक्खी है, और हमारी बेटीने भी आज ऐसाही किया (हँसतीहै)

सूत्रधार–(क्रोधसे लाल २ आँखेंकर उसकाहाथ झटकके) ऐं! पापीयसी तैंने मेरी सबबात नीची करदी, दुष्टा! तभी तू आज इतनी फूली है. रह, दुश्चारिणी! आज तुझे कैसा इसका मजा चखाताहूं. ठहर, ठहर!!!

(नटीको मारने दौड़ता है, और वह सिमटके आगे निकल जाती है इसीतरह आगे पीछे दौड़ते २ दोनों नेपथ्यमें चले जाते हैं)

इतिप्रस्तावना



अथ प्रथमाङ्क ॥

सुमंतदेवके पुष्पोद्यानकी बारहदरी

(मयंकमंजरी, कामिनी, और सौदामिनी बैठी हैं)

सौदामिनी–सखी! देखो! पावसकी कैसी सुंदर सोभा सुहाय रही है, अहाहा! अकासमें पँचरंगे बादल एक दूसरेपर कलैयाखाते, बिजुली चमकाते, गुर्गुराते, फुहीबरसाते, इन्द्रधनुष टंकारसे विरहीजनोंके जीको जलाते, हवाके झोंकेखाते, इधर उधर उड़ेजाते हैं–

कामिनी–अरी! यहदेख! चारोंओर बगीचेमें कैसी सुन्दर हरियाली छाई है, सब तरुलता नए पल्लवोंसे हरीभरीहो, फल फूल के भारसे झूमरही हैं. अहा! पेड़ोंपर बैठे प्यारेपंछी कैसी मीठीबोली बोल रहे हैं, वो भौंरे गुंजार कररहे हैं, यह मोर पंख उठाए नाच रहे हैं. हाय! यह रांड़कोइल कूक रही है. ओहो! सीतल समीरसे शरीरके रोंगटे खड़े हो आए हैं.

सौदामिनी–तू ठीक कहे है!–

(सवैया) बरखा की अवाई भई चहुँ ओरतें, घोरघटा घुमड़ान लगी।
गरजै नभमेघन सोर किये, चहकै चपला चमकान लगी।
नभमण्डलतें छितिलों छिनमें, नवबूँदनकी झड़आनलगी।
कोऊकाह किशोरीजू वारैबिथा, विरहीजनके डरवान लगी १

कामिनी–अहा! तूतो निरी कविकी नाक बनगई, भई! ये कौनकी सेवाका प्रसादहै? अच्छा, तो देख! मैं अपनी बनाई कविता भी सुनाऊँ!–

(सवैया) पियकी नअवाईभई अबलों, अँग अंग मेरे सिहरान लगे।
कसि कंचुकीहूमें मरोरमढ़े पै, उरोज अहा थहरान लगे।

कहोकौन किशोरि उपाय अबे, नथके मुकताल्लहरानलगे।
करिसोरचलै वरसातहिवा, चुनरी के झवा झहरानलगे १

मयंकमंजरी—(कामिनीको चुटकी काटके) उजेरेकी, ऐसे साफ २ कोई अपनी बीती उगल देय है ? बीबी ! जराढकी कविता छांटती, अच्छा, सुनः—

(सवैया) नई आई बहू करिगौन तऊं, घर बालमको ठहराने लगी।
सिसिकीनको सोर मनोजमरोर, अथोर अबै कहरानेलगी।
बहुभांतिन सों न रुकी जबहीं, नवलाजलता लपटानेलगी।
गहरानेकिशोरिलगी जियकी, बतियां छतियांछहरानेलगी १

कामिनी—(मयंकमंजरीसे) ऐंहै ! यह बात है, सौदामिनी ! क्यों ? येढकी कविता सुनी

सौदामिनी—(मयंकमंजरी से कटाक्षकरके) हाँ हाँ ! इसीका नाम कविता है क्यों ? ओहो ! अब मैं समझी, क्यों कामिनी ?

कामिनी—ठीक. पर भाई मुझसे पूछो तो मैं तो यह समझीः—

(सवैया) पियके मिलबेसों भईछिति सुन्दर. वीरबधू बहरान लगी।
सरिता सिगरी नहिं धीरधरैं. ठहरैं न छिनों हहरान लगी॥
नवबारिद बुन्द विलोकतही. चाहेचातिकीहू चहरान लगी।
यह रंग बिरंग किशोरी बिजै. पचरंग ध्वजा फहरान लगी॥

सौदामिनी—आली तूने सचकहा. और खूबहीकहा (मयंकमंजरीसे) क्यों प्यारी कामिनी ने अच्छाकहा न ? देखोः—

(सवैया) बरसात सखी बरसाथ नहीं. कुललाजसबै पगपान लगी।
भरिअंकमिटावहु बेगिबिथा. कहे कामबधू तियकान लगी॥
सुनि ज्ञानतहै जियमेरोअली. जब रंगरली गली गानलगी।
करिमान किशोरि कहाकरिये. जिनके उरमीनज बानलगी॥

मयंकमंजरी—(सौदामिनीसे) क्यों सखी तू यों न कहः—"बरसात सखी बरसात नहीं"(इत्यादि पढ़देती है और सब हँस पड़ती हैं)

कामिनी-(मयंकमंजरी से) तो यह बड़े साहस की बात तुमने कही ? क्यों ?

मयंकमंजरी-(रिससे) चलहट, तू तो योहीं बके है (कुछ मुख फेर लेती है)

सौदामिनी-(मयंकमंजरीका हाथ पकड़कर) क्यों सखी! इतनी खफा (झटकादेके) अच्छा जाने भी दे. चल मेरे जीमें ऐसा आवे है कि झूलाझूलें और मलार गावें.

कामिनी-आली मैंभी तो सोचतीथी. ठीककही (गानेलगी)

(मलार)

आली यह पावस को दिन आयो।

गरजि गरजि घन बूंदनबरसत चपलाचहि चमकायो। दादुर मोर पपीहराबोलें कोयल कूक सुनायो ॥ आली० १ नदी नाल तल ताल बावली उमडि अवनितल धायो।श्रीकिशोरि पिय कहां विराजे. सुखको दिन छिति छायो ॥ आली. २

सौदामिनी-वाहवाह! कामिनी ने तो "रम्भा" कोभी मात करदिया

मयंकमंजरी-(हँसकर) ठीक है औतूने "तिलोत्तमाको" ?

सौदामिनी-(पर "उरवशी") तो सबके मनबसी है (तमूंरा उठाकर गाती है)

(मलार)

हमारे मन पावस सुख न लये।

जबसे सखी श्याम सुधिभूले सौतिन सुदिन भये॥

लिखिलिखितिय पतियाँ पहुँचाई पियपढ़ि चितनदये।

हियकी बिथा विचारैको इत. बिरहिन प्रानगये॥

बिरहानल में हियो जरायो. तन मन ताप तये।

श्रीकिशोरि अब आस जालमें जुवतिन प्रान छये॥

मयंकमंजरी-अहा तुम दोनोंने तो खूबही समा जमाया, यह देख मेरे रोएँ खड़े होगये पसीना होआया, शरीर कांपनेलगा, आँखों

में आँसू न जाने कहाँसे क्यों आगये. आली अब मेरा मन भी गाने को चाहे है.

कामिनी—हाँहाँ सखी गाओ औ मैं बजाऊं.

(दोनों मृदंग तमूरा बजाती और मयंकमंजरी गाती है)

(मलार गौड़)

बहुरि बन बोलत दादुर मोर ॥
चमकै चपला चारु चहँकि बहु. चितै चितै चितचोर।
बहु बूँदन बरसै बारिद बन उपबन भये सरबोर ॥
बहे पौन पुरवाई पापी दै अथोर झकझोर ।
काढ़िलेत चितचोर कोइलिया कुहू कुहू करिसोर ॥
बान तानके मारत बिरहिन हिय भये छेद कड़ोर।
श्रीकिशोरि सब सावनको सुख सौतिन लियो बटोर ॥

कामिनी (आँखें चमकाके) अहा नये नये प्रेमके तो येई सब उमंग हैं फिर भी आजकल तो तुझे चैन है और तूँ जो न कहे और जो न करे सो थोड़ा है. सखी सौदामिनी! नया प्रेम हैं न? (चुटकी लेती है)

मयंकमंजरी—(सौदामिनीपर आक्षेपकरके) अरी बावली! कहीं प्रेम भी पुराना होय है? यह तो ज्यों ज्यों दिन बीते है त्यों त्यों नीली रागकी तरह पक्का और सुरंग होताजाय है (कामिनी को झोकादेके) तेरी इसटीपटापसेजानपड़े है कि तूभी प्रेम रंगमें रँगाचुकी है.

कामिनी-(हँसके) क्यों सखी अपने मनका बुखार मेरेही ऊपर निकालोगी सचहै जो जैसाहोयहै.उसे संसारभी वैसादीखैहै.

सौदामिनी—(कामिनीसे) तभी तो पियप्यारे की बातें तू चित्तलगा के सुने है? क्यों सखी सच हैन? जाने मैं कुछ जानूहीं नहीं (इषत्हास्य)

कामिनी—सखी मुझे भी तूँ उसी खेतकी मूली जानना, फिर तू इतनी उड़ी २ क्यों डोले है

मयंकमंजरी—(सौदामिनीपरभ्रूक्षेपकरके) तभीतो कलनपड़ी, विकल होके कलही छलबल से सकल संदेसा पहुँचायारहा यदि वक्तपर सब सामग्री जुटजाती तो प्रेमपाती भी पहुंचीरहती (मध्यस्मित)

सौदामिनी—(मयंकमंजरीसे हँसकर) आली तुमे चिठ्ठीपत्री लिखनाहो तो मने कौन करे है; और वे बातही मेरेपर क्यों खेलखेलो हौ ? जानौं मैं तुमारी सैनावैनी कुछ जानूहीं नहीं (कटाक्ष करती है)

कामिनी—(सौदामिनीको झोंकादेकर) हां हां रे बहिना ठीकहै तू तो जमाना देखेबैठीहै अब बाकी क्याहै जो तू फिर नये सिरसे''

सौदामिनी—(कामिनीसे) हां हां उगलदे २ मुखमें जादे लियेरहेगी तो

मयंकमोहिनी—अच्छा भाई जानेदो चलो हिंडोला झूलें. फिर तुम दोनों की सीतारामी देखीजायगी (सौदामिनीकाहाथ थामकर) क्यों री ! रोज तो तू हमसे सब काम सलाह से करतीरही आज क्या है जो निरी गंगाजल बनीजाय है ?

सौदामिनी—(मयंक मंजरी से हँसकर) अरी मैं तो तुमसे कमही चिकनी चुपड़ी हूं

कामिनी—(सौदामिनी से) राम राम ! यह कौन कहेहे कि नहीं अरी बीबी तू तो पांचपानीकी पखारी है.

सौदामिनी—(कामिनी से) सच है आली मैं पांच पानीकी पखारी और तू अभी अछूती है.

मयंकमंजरी—(सौदामिनी से हँसकर) अहा सखी तेरे ऊपर मुझे यह कवित्त याद आया है—

(सवैया) चतुराईलखात अबै तुममें. लरिकाईकथा छिन छोरेलगी।
निसिआवतजातअकेलीलली. बरवामिसकुंजअगोरेलगी॥
लखिकेथलसूनो सनेहसनी. मुसुकाय किशोरिकेकोरेलगी।
सब आनँद आपबटोरेलगी. दिनद्वैते पियूष निचोरेलगी॥

सौदामिनी—पर सखी ! सच पूछो तो ऐसी तुमी हो.

(सब हँसती २ ठिठोलेकरती हिंडोलेपर बैठती हैं)

(और एकओर से कामिनी और दूसरी ओरसे सौदामिनी झोंका देती है)

मयंकमंजरी—(झूलते २ दोनों सखियोंसे) अरी कोई गीत भी गाओगी कि खाली २ पेंग बढ़ाय २ योंही घुमाओगी—

सौदामिनी—(परिहाससे) तो कहो तुम भी तो सहारा लगाओगी न ? क्योंकि मुझे तो तुमाराही आसराहै.

कामिनी—(सौदामिनी से) आली तेरे सहारा लगानेवाले तो....

सौदामिनी—(शीघ्रता से) अरी तो—जो—क्या बके है. खुल के क्यों नहीं खेलती ?

कामिनी—(हाथचमकाकर) ऐ है. यह अनुरागबल्लभका चाव ! सखी वे कौन हैं—

सौदामिनी—(हँसके) क्या तेरा भी मन ! तो मैं पक्की पकाय दूंगी .

मयंकमंजरी—(स्वगत) हा ! इससमय येसब कैसी मदमातहिो, इतराती और आपसमें बातें बनारही हैं, मेरे तो सुनसुनके रोंगटें खडेहोआये हाय इतनी बातेंभईं पर मेरे प्रानप्यारे का तो किसीने नामतक नहीं लिया; यही और भी दुःख है, ठीक है सिवा मेरे कौन उनका ध्यानकरे ? (निश्वासत्याग)

सौदामिनी—(मयंकमंजरी का भाव जानकर परिहास से) हैं ! हैं !! यह क्या सखी ! वीरेन्द्र नारी होके निगोड़े पावस के डरसे डरने लगी, यह देखो, वाह ? अरे तनिक से भौंरे के आने से इतनी चिहुंक उठी ? (भौंरे को उड़ाने के मिससे कपोल स्पर्शकरके) अरे नीच भौंरे ! ठहर निगोड़े मैं अभी तेरी मूँड़ी मरोड़ूहूं. नीच ये अछूते होठोंका रस तूही पहिले लेगा ?

(दोहा) अरे अछूतो अधररस . पियहित धरयो चुराय ।
जाको सौरभ सलिलतू . निदर न छूवै आय ॥

मयंकमंजरी—(सलज्ज) चलदूरहो, योंही बके है, तेरी आँख मैं पहिचानतीहूं—

(दोहा) भये चारही यार के. बारत करें न बार।
जार देत दुखभार पिय. तार देत हियमार॥

(कुछ मुख फेरके स्वगत) देखो इतनी देरभई अब प्रान प्यारे के कब दर्शन होंगे, जी घबरानेलगा (प्रकट) कामिनी–तुमने सचकहा प्यारी–

(दोहा) अति चंचल चोखे चतुर. चितै चाहि बश कीन।
लोल विलोल विलोकिजग. जियै कौन मतिहीन॥

सौदामिनी–हाँ हाँ! तुम लोग जो न कहो सो थोड़ापर प्यारी! (मयंकमंजरीसे) अपनी ओर तो देखो.

(दोहा) लोल ललित लोने लसैं. लाल लाल दृग कोर।
कोमल अमल मराल अलि. छलि लपेट लखिडोर॥

(कुछ ठहरकर) हाँ बात तो यह कि कईदिनसे प्यारेसे भेंट नहीं भई इसीलिए प्यारी इतनी उदास है. और अकार न हमलोगों के ऊपर त्योरी चढ़ाए है.

कामिनी–(सौदामिनी का हाथ पकड़कर) एरी तैंने तो सचकहा, क्योंकि हिंडोलेपर तो जुगल जोड़की झाँकीहीकी बहार होयहै. (दोनो हँसती हैं)

मयंकमंजरी–(मुसकाकर) तुम लोग आजकल नई २ तरंगें लेरही हो. देखो कहीं उन्मादनी न होजैयो.

सौदामिनी–वोतो सूरतही गवाही देहै; पर छिनभरमें तुम भी प्रेमलहरी में गोते मारोगी; और तब यादकरियो. मतघबराओ. भगवान चाहे तो वो घड़ी भी आयचली–

मयंकमंजरी–(कृत्तिमरिससे) ले! जो तूं योंहीं व्यर्थ की पंचाइतकरे तो मैं नीचे उतरजाऊं फिर पेटभर बकले (झूले से उतरना चाहती है)

सौदामिनी–(मयंकमंजरी का हाथ थामकर) जबताईं तुम उत ..

कामिनी–अरी रहने भी दे, व्यर्थ क्यों बोले है (मयंकमंजरीसे) अच्छा प्यारी आओ सब मिलि गतिगाओ. (फूल गजरे की

डाली लिए मालिन आती है)

सौदामिनी—अहा! यह तो चंपा मालिन चली आवे है.

चंपामालिन—(मयंकमंजरीसे) प्यारी यह लो आज हरियालीतीज है. तुमारेलिये अच्छे२ फूलोंके गहने बनालाईहूं (डाली लिये झूलेही पर चढ़जाती है और कामिनी, सौदामिनीके साथ मयंकमंजरीका खूब सिंगार करती है)

कामिनी—देखो प्यारी तुमारी कैसी शोभा होरही है (आरसी दिखाती है)

सौदामिनी—इसी शोभापर प्यारे ने रीझके जो उस दिन दोहा कहा था वो मेरे कलेजे में अभीतक लिखा है. ॥ चंपा - कैसा २ मैं भी तो सुनूं.

सौदामिनी—(दोहा) तेरे नैंना रस भरे. खरे करें इतवार।
क्यों अनीति ठानी तिया. मारमार पर मार॥

चंपा—वाह वाह! खूबही कहा है इसे तो मैं भी याद करूंगी.

सौदामिनी—और सुनः—(दोहा)वैनवैनसोउमगिचित. गड़ेनैनसोंनैन।
लूटेसरस सरोजरस.क्यों न हियेलगि ऐन॥

कामिनी—तैंने फिर वही बे बात की बात छेड़ दी (सौदामिनी को चुटकी लेती है)

चंपा—यह तो बहुत भली बात है. इसे कौन निकम्मी कहे है.

मयंकमंजरी—(भौंह मरोरके) क्यों री चंपा तू भी वैसीही होगई—

चंपा—(हँसके) मैं ने क्या बिगाड़ा रानी! तुम जानों तुमारी सखी जाने लो! यह मैं चली (झूले परसे उतरना चाहती है पर कामिनी थाम लेती है)

कामिनी—और चंपकलता "नौ" जाने "छ" न जाने ? (हँसती है)

चंपा—(भ्रूक्षेपसे) भला अनोखी मैं देखलूंगी. अबतूँ पतियां लिखियो. (कई गजरे मयंकमंजरीको और कामिनी तथा सौदामिनी को देके जाना चाहती है और मयंकमंजरी एक अंगूठी उसे पहिरा देती है)

(चंपकलता जानेलगी)

मयंकमंजरी—अरेचंपा! कलतू जरूरऐयो. कुछकामहै—

कामिनी—भरसकबने तो अँधेरी रातमें—

चंपा—तेरे ऐसी चंपा निलज्जी नहीं है. जो रात बिरात इधर उधर मारीचले. (गई)

सौदामिनी—प्यारी! देखो अब चंपा बहुत सिर चढ़गईहै—

मयंकमंजरी—(हँसके) आलीकहो इसमें उसका क्याकसूरहै? तुम ने चढ़ाया तबचढ़ी—

कामिनी—(हँसके) प्यारीचढ़ाउतरीका ध्यानछोड़कर अबकुछगाओ.

कजरी—नई आमद

सौदामिनी—गोरी जोबनापै सोहै दोऊ काले भँवरा
कामिनी—काले भँवरा मतवाले भँवरा—गोरी० ॥ १ ॥
मयंकमंजरी—मेरेउरमें डसत उड़िजाले भँवरा
रस रँगके उमंगमें डेराले भँवरा—गोरी० ॥ २ ॥
सौदामिनी—रतिरसिक लखत थहराले भँवरा
कुचकमल मुदित मुँदजाले भँवरा— गोरी० ॥ ३ ॥
कामिनी—पिय जियमें नगिनसे जड़ाले भँवरा
रहेडसत सनेही सुधिवाले भँवरा—गोरी० ॥ ४ ॥
मयंकमंजरी—मिसजाले भँवरा घिसजाले भँवरा
कामिनी—काले कठिन किशोरी उरसाले भँवरा—गोरी० ॥ ५ ॥

मयंकमंजरी—वाह वाह! यह तो खूब भई. अब ऐसही कोई और मलार होय—

धुरिया मलार

(पेंगे बढ़ाती और मलार गाती हैं)

सौदामिनी—नभमें उमड़ि घुमड़ि घनछाए ॥
पड़ैंबूंद छितिहरीभरीभइ. चपला चमकि डराए ॥ १ ॥
कामिनी—बोलतमोर चकोर सोरकरि. कोकिलकूक मचाए ॥

करि झिल्लीगन घोरसोरइत. बीरबधू छितराए ॥ २ ॥
मयंकमंजरी—सुरभीसनी समीर धीरहरि. दुरिदुरि बसन दुराए ॥
पियापियाकहि रटतपपीहा. पियाकौन बिलमाए ॥ ३ ॥
सौदामिनी—तजिदुरंत इतहंत कंतहँसि. अबलहि कंठन लाए ॥
भरीनिशामें दिसानदीखै. दुखबियोगिनी दाए ॥ ४ ॥
कामिनी—अजहूँ दरस न नेकुलालको. इनअँखियनने पाए ॥
स्वातिबूँद चातकचकोरशशि. इमिदृग पियपगधाए ॥ ५ ॥
मयंकमंजरी—व्याकुलहाल बिहालबालको. कोउपियको समुझाए ॥
कौनहेत अब निठुरभये इत नव अभिलाष बढ़ाए ॥ ६ ॥
(सहसावीरेन्द्र प्रवेशकर उसस्विरमें गाताहै)
वरिन्द्र—छिनछिन बीततमोहिं कल्पसम. तुवदरसन बिनुपाए ॥
नैननिगोड़े नीरबहावें. बपुबरसात बनाए ॥ ७ ॥
कलनपरै पलछिन सखिमोपैं. मनसिजबान तनाए ॥
सोइजातहै नींदमोंहितजि. जागतनाहि जगाए ॥ ८ ॥
(दोनों सखी संकुचितहो झूला ढील देती हैं और लज्जित हो मयंकमंजरी झूलेसे उतरना चाहती है)
सौदामिनी—(मयंकमंजरी का हाथ पकड़के) ऐं यह क्या ? प्यारी ! उतरती क्यों हो ? बहुत दिनोंसे तो आराधना करते करते बड़े भागसे आज देवताने प्रसन्नहो दरसन दियाहै, तो अब बिना वरपाएही क्यों चली ? (सब मंदहास्य करतेहैं, और मयंकमंजरी लज्जितहो हाथ छुड़ालेती है)
कामिनी—सच कहा सखी, अरे देवता भी कैसे कि "हृदयेश्वर"! जिन्होंने कृपा पूर्वक आज सन्मुख आय सुन्दर दर्शन दिया—
(मयंकमंजरीकी ओर सस्मित कटाक्षकरके)
(दोहा) अरी सलोनी लाजतजि. विहँसि चितौनिन चाय।
आए लाल विलोकु इत. बसीकरन कर भाय ॥
मयंकमंजरी—(लज्जितहो बदन समेट और मुख नीचाकरके) चल रहने दे तू अपनी कविता मतगढ़ !! कामिनी!—

(दोहा) अरी बावरी अटपटी. चलन चाल अकुलाय।–

कामिनी–(रोकके) ठीक ठीक, पर तुम–

चन्द चकोरहुंसो मिले. सुभ औसरको पाय ॥ =

वीरेन्द्र-(स्वगत) अहा! यह सरल सुभाव सुन्दरी का. वो संकोच लाजभरी टेढ़ी चितवन, विभ्रम विलासभरे मनोहर हाव भाव और विनोदभरे मीठे अमीसे वचन, और अद्वितीय अनोखापन–

हमारे चंचल चित्तको कैसा प्रबल आकर्षित कररहा है; हाँ ऐसी अबलाओं के अंग आयुध के रहते कामदेव को बिरही जनोंके बधकरनेके लिये अपने तीक्ष्ण शरासन की ज्याको कान तक नहीं खींचना पड़ता (ठहरकर) अहा!

(दोहा) बिमल रसीले नयन यह. ऐन अमी की खान।
होत बावरे रस भरे. करि सुचारु हिय पान ॥

हाय! यह कुटिल कटाक्ष ··

(दोहा) देखतही मुख फेरके. दै घूँघट की ओट।
नैननचाय दुरायदृग. करैकुलिशसी चोट ॥

अरे कामदेव! धन्य है तेरी महिमाको (निश्वास त्यागकर प्रगट)

सौदामिनी–(हँसके) प्रिय सखियो! हमारे आनेसे तुम सब ऐसी मौनव्रतावलम्बिनी क्यों बनगईं? क्या तुमलोगों के आमोद प्रमोद में व्याघात तो नहीं हुआ? यदि सत्य है तो इस समय हम ·· (गमनोद्यत)

मयंकमंजरी–(स्वगत) अरे! यह तो बुरीभई! हाय! इतने दिनोंसे देव पितर मनाते नीठ २ आज बड़े भागन से तो प्यासी अँखियाँ सीतल भईं और फिर ये निपट निठुराई से मन मरोर के चले! जान पड़े हैं कि ये क्या कुछ उलटी तो नहीं समझे; हाय! ऐसी लाज निगोड़ीपै गाजपड़े; अरे! इससमय तो मुझसे कुछ बन भी नहीं पड़ता और कितनाहीं चाहूंहूं

पर एकाएक कुछ खुलके कहाभी नहीं जाता, और न किसी प्रकार सेवाही बनपड़ती है–

(सखियों की आँख बचाकर प्रिय बीरेन्द्रकी ओर विलोल कटाक्षकरती है)

कामिनी–(शीघ्रतासे) हैं! महाराज यह क्या? कि किसी के घर पधारकर बिना उसका आतिथ्य स्वीकार किये योंही चले जाना चाहिये?

सौदामिनी–और फिर कृपा निधान! आपसे हानि कौनसी भई, वरन रत्न कांचनके संयोगसे तो और भी दूनी शोभा होय है.

कामिनी–और क्याः–(दोहा) कौमोदनीविलोकिविधु. रविहिं कमलिनीपेखि। खिलीछबीलीलालखि.मनिकंचनअवरेखि॥

सौदामिनी–और भाई मैं तो यों कहूंगीः–

(दोहा) आवै निज अभिलाष लखि. पै बिन कहे न जाय।
ज्यों विसारि सुख शैल अलि. नलिनी रहैलुभाय॥

वीरेन्द्र–(कामिनी से) अरी! तेरे घर आवैं तब तू पूजियो.

कामिनी–(हँस के) वाह! कृपानिधान! यह तो खूबही रुखावट का जवाब दिया. दयानिधे! यदि यह मेरी सखीका घर है तो क्या मेरा नहीं?

वीरेन्द्र–(हँसके) ठीक है तो अब समझे, कि तुम लोग हरबातों में अपनी सखीकी प्रतिनिधि बनी हो, जो तुम सो सखी और जो सखी सो तुम?

कामिनी–(लज्जित हो) आपजो कहिये.

वीरेन्द्र–(सस्मित) हमारी "जो" कहने की सामर्थ्य नहीं. पर यदि हमारा आना तुमारी सखीको अच्छा लगता तो क्या वो अबतक अचल प्रतिमा बनी रहती.

सौदामिनी–अच्छा मैं विनती करूंहूं. आप दयाकरके विराजिये. मैं सखी को अभी अचलसे चलाचल-नहीं नहीं-चंचल बनाएदेतीहूं.

वीरेन्द्र–(हास्यपूर्वक) हमें यहनया २ चोचला अच्छानहीं लगता;

भलाहम किसकी २ बिनतीसुनें, किसका २ सत्कारकरें. और किसके २ अतिथिबनें ?

कामिनी—महाराज यह आपने ठीककहा. संसारमें एकदिनेशसे लाखों नलिनियोंका हृदय प्रफुल्लहोताहै और एकचंद करोड़ों चकोरियोंके चित्तको प्रसन्न करताहै.

मयंकमंजरी—(कामिनी और सौदामिनी से) सखियो ! क्योंव्यर्थ सिरखाली करतीहो ?

(दोहा) चाहै रविनहिं कमलिनी चंदन कुमुदिनी भाय।—

वीरेन्द्र—(रोककर) क्यों ? यहकटेपर नोनछिड़कना नहीं है तो क्या है (हँसके) जियैमरैचाहेभ्रमर. नलिनीनाहिंसुहाय॥ =

तबभी (दोहा) तूबड़भागीरी अरी. याजगमाहिंसुजान। —

सौदामिनी—(रोककर—सस्मित) सत्यतोहै, तभीतोः—

जानजानके जानलै. जानतदेखि अजान॥ =

मयंकमंजरी—(तीव्रकटाक्षकरके वीरेन्द्रसे) प्रियतम ! क्यों,जलेको जलाना आज कितने दिनोंपरतो आपके दुर्लभ दरसनसे इतनी प्रसन्नताभई परसाथही यहदुःख चित्तको उद्विग्नसा कियेरहताहै कि ये दर्शन दीर्घदर्शन होजाते हैं (लज्जासे) तोअब दयाकरके .. (लज्जितहोजाती है)

कामिनी—(हँसके) हां ! हां ! यह कि आपअब दयाकरके इसीभूले पर आजाते

मयंकमंजरी—(कामिनीका हाथदाबकर) अरी ! कितनाबोले है ? जरा चुपभीकर—

सौदामिनी—महाराज ! हमें नहीं समझपड़ता कि यह संसार का खेल कैसा है ?

(दोहा) लोचन लोचनसों लरैं. हरैं सैनमन मार।
परे परेही रहिजरैं. तरे खरे रिझवार॥

वीरेन्द्र—यहीकि (मयंकमंजरी की ओर कटाक्ष करके)

(दोहा) लखि लोने लोचन लली. लगी लीकसी लेख।

लरिलरि लोल विलोल लर. पलपल कलन बिसेख ॥
(सादर मयंकमंजरी से) क्यों प्यारी ! हमारी अब योंही ख्वारी करोगी ?

(दोहा) मतवारे कारे कुटिल. गरल सरल की खान।
मायल घायल मरिजियत. हिय चितौनिमदपान ॥

मयंकमंजरी–(स्वगत) अहा ! ये बड़े चतुर और रसिक हैं. जैसेही ये बीर मूर्ति हैं वैसेई श्रृंगार रसके अवतार भी हैं. जैसा नाम वैसाही गुन इन्हीं में दीखपड़ता है (प्रकटमीठेस्वरसे) मेरे ऊपर ऐसा विद्रूप कटाक्ष क्यों ? आप कृपा पूर्वक अपनी ओर देखिये .

(दोहा) अति सुढार सुकुमार सर. अति उदार मन मार।
भरे खुमार अपार यह . दृग सुधार रतनार ॥

दोनों सखी–वाह वाह खूबही उत्तर दिया. जैसा मुंह वैसा बीड़ा!

वीरेन्द्र–सत्यहै . आज हमारे भागके मानपर एक विकारी और पड़ गई. सौदामिनी–(झूलेसे उतर) महाराज ! अब बिलम्ब क्यों ? आइये (मयंकमंजरीसे) प्यारी अपनी आधी जगह महाराज को भी दे ?

(हाथ थाम वीरेन्द्रको झूलेपर बैठाती. और मयंकमंजरी लज्जा से संकुचितहो सिमटजाती है)

वीरेन्द्र–(स्वगत) अहा ! सोनामें सुगंध, और नित नव पूर्णचन्द्र में अकलंक यही, देखपड़ा; संसारमें इस सुन्दरीकी उपमा यदि है तो यही है, और आज इस परम सुन्दरीका क्याही अपूर्वभाव नेत्रोंको शीतल कर रहा है.

(दोहा) सोन लता पग सीसलों. फूली फूल अनूप।
ज्यों विधिरची बनायइहि. रमा रिझावनरूप ॥

(सौदामिनी और कामिनी, हिंडोला झुलाती हैं) (प्रकट) प्यारी–

(सवैया) अनमोल अदाअबहीं तुममें. छिनदेखतप्रान निकारतीहो

हम यों तलफें दिल घायलसे. तबहू न दया उरधारतीहो॥
बिथुरीअलकैंझलकैंमुखपै.मनुव्यालिनीसीजियमारतीहो।
जगमेंधनवेहीकिशोरीअली. जिनको निजनैननिहारतीहो॥
(मयंकमंजरी लज्जितहो सिरनीचा करलेती है)

कामिनी–(हँसके) वाह वाह! महाराज! भला आपकी आँखें क्या कुछ कम हैं?)

(सवैया) लेत लपेट नवेलिनको मन. नेक निगाह किए तिरछीसी।
देतनहीं दिलफेर कभी तरसावत रात दिना बिरचीसी॥
त्योंहि किशोरि करेजनमें तिनके फिरे रात दिनाकरछीसी।
सैन नहीं यह मैन नहीं मम नैनन आन धसी बरछीसी॥

वीरेन्द्र–(मुसक्याकर–मयंकमंजरी की ओर झुक, कामिनी से) अरी! अब आगे न बढ़ो. क्या तुम लोग इन आँखों से घायलकर प्रलय मचाओगी.

(दोहा) भौंकमानमें बानदृग. कानन तानन मार।
सदा म्यान बाहर रहे. नैनधार तलवार॥

औरभीः-(सवैया) नैनकमानमेंबानदिये मनरंजन अंजनसानसेपागे।
घायलही करिडारत हैं करि सैनसनेह सनेलखि आगे॥
आनफसावतहै जियजालमें जालिमजोर जवानअभागे।
तोपलगे तलवारलगै परनेकहु नैनसे नैन न लागे॥

मयंकमंजरी–येतुमारी कपटभरी बातें बहुत सुनीहैं, किसी औरको सिखाना.

सचहैः–(दोहा) चंपाचितै तजो भ्रमर. रसकोमीत निरेखि।
पलछिनरस चाखतफिरै. कलिनकलिन नवदेखि॥

सौदामिनी–(हँसके) अहाहा! आपमें येभीगुनहैं? तभी! समझी।
(सवैया) जाइबिलोकतलालभला बहुभांतिनसो तिनकोगुनगावत।
लाजबिसारि निहारत डोलत बोलतबैन महासुखपावत॥
रूपनिहारि बिसारिइतै सुधिधीर सदामनमें ललचावत।
भावतवोइकिशोरि अहा पियहेतयहीनितजो नहिंआवत॥

कामिनी–भाई ! इसमें तुमने अचरज किसबातका किया ? अरे ! भौंरा रस का लोभी न हो; और एक चन्द के पीछे अनेक चकोरी न लगें, यह तो अनहोनी है; चम्पा के छोड़ने पर इसकी हानि क्या भई सखी ? (वीरेन्द्र से) आपही सच कहियेगा महाराज ! :–

(सवैया) रूप अनूप निहारतही फिर चैन नहीं जियमें कछु आवत।
ताहिसमान जहानमेंआन गुमानभरी कोऊनारि न भावत॥
काहकहूं बिधिकी गतिको वह जोबनजोर जवान कहावत।
भाग सुहागभरी बनिता मनलेत किशोरिजू बार न लावत॥

वीरेन्द्र–(आश्चर्य्यसे) ऐं आज क्या है जो तुमलोग मनमानाताना देरहीहो ? तुमलोगोंको तो धूलकी रसरी बटना और बिना परकी पतंग उड़ाना खूबही आता है (मयंकमंजरीकी ओर झुककर) परन्तु हमारी दसापर जराभी दया नहीं आती (निश्वास लेकर):–

(सवैया) जबसे तुमरो मुख देख्योसखी. जिय नेकुनहीं सुखपावतहै।
यह प्रेम सुधाधर भावभरी. रतिरूप छबी मन भावत है॥
ममओर चितैचित माँहिं तुमें. दिलदार दयानहिं आवतहै।
जुगजोबनजात अकारथही. नहिं कोऊ तुमें समुझावतहै॥

औरभी (दोहा) बिन तुवदेखे छिनघरी. तरफरात जियलीन।
कहो प्रान कैसे बचै. परी बारि बिन मीन॥

मयंकमंजरी–(समन्दस्मित) उसदिनकी भूलगये ? जब कि "आनन्दबाग" में इसारे चलतेथे, अब बात बनाबनाके निर्दोषी बनना ? और यह किसने आवाज़ा कसाथा !

(सवैया) सबसाजसँवार अटारचढ़ी. गजचालचलै बलखायलली।
तिरछीहैसुनै बतियाँ रसकी. छतियाँहू मनोहर मैनमली॥
बहुबालहलाल बिहालकियो. छलछन्दछटाछितरायछली।
तुमअंचल चंचल माँहिंहहा ! गुलगातमेंफूली गुलाबकली॥

सौदामिनी–(परिहाससे)और यहभी तो आपको जरूरही यादहोगाः–

(सवैया) नवजोबनजोर जवानभई . दृगतानलई लखिछैलछली ।
परतीत कहा करिये तुमसों . नितबातबनावत सीखभली॥
कबहूंनहिंमाननी मानतज्यो. इतमोमन मूरत मोहिलली।
रसरूपकिशोरीअबैउमग्यो.मानोंमैनकीफूलीगुलाबकली॥

कामिनी-(मुसकराकर) इसे भी कृपाकर स्मरण कीजिये, यह भी आपका वेदवचन है.

(सवैया) शंभुसुधाधर मेरुमनोजको गेंदकहै कोउथान भली यह ।
बिम्बनवीन गुलाब भरेमद बोतलशाह उरोजथली यह॥
त्रासहिपाय छिप्योचकवा उरबाजहि देखअनारफलीयह।
औंधिधरी दोउदुंदुभिमैन मनोखिली खूबगुलाबकलीयह॥

वीरेन्द्र-(हँसके) तुमलोगोंकी चतुराई अब समझे; परंतु यहतो कहो कि तुमलोग क्या अपनी २ बातें भूलिही गई? जावो सब भांगका स्वांग था . क्यों कामिनी? यह श्री मुख के बचन हैं या नहीं?

(सवैया) आजुललातुमजाहुचले कलसांझहीआयकै हौस पुरैहौ ।
यों नहिंनेक किशोरिचले हकनाहक मोंसंग राररचैहौ॥
कामनएकौचलैबरजोरिसों बामकी नामनहोठन लैहौ ।
याअभिलाखसुधारसको झकझोरिबबाकी सौंबुन्दनपैहौ॥

क्यों कैसा रहस्य है? भला अब सौदामिनी क्यों हमारी बातें सुनने लगी --

(सवैया) परयंकनिशंक चढैनडरै मुखबोलकढै न सरोज मुखी के ।
कितकंतइकंतबिलोकिबिलासिनिभागीचहैझटऐंठरुखीके॥
भुजमेलिकिशोरिजूभागनसोंमनभावनलैउरलावैसुखीके।
अंबर ऊपर चंद सुधारस लेत मनोहर हीय दुखी के॥

खैर! जानेदो तुमलोगों के छलने में तो कुछ कसरही नहीं रहीथी पर कस्तूरीकी गंध सात तालेमें रहै तौ भी नहीं छिपती, क्या मैंने रातको दिन या मेघाच्छन्न निशापतिको सूर्य्य कहा था? अथवा आधीरातमें रज्जुको साँप जानके

उठाना चाहा था ? या श्वेत मरालोंको बक पंक्ति बखाना था; हमारी प्रकृतिने प्रवृत्तिके बलसे सब काम सीधाही किया; किन्तु तुमलोगों ने हमें सब तरह से धोका देने में कसर न की—(मयंकमंजरी और दोनों सखी एक दूसरेकी ओर देख अवनत हो लज्जा नाट्य करती हैं) (हँसकर) ऐ प्यारी ! शरमा क्योंगई ? क्या मैंने इसमें कुछ झूठकहा ?

(सवैया) अबक्यों सरमायछिपावती हौ मुखकोतुमइन्दुमुखी करसे।
तुमजानो नहीं अबै प्रीतको मारग रातदिना हियहीतरसे॥
इतनेह लगाय भए बदनाम तुमें अब काम नए बरसे।
सखिकाह किसोरि सुझावै कोऊइतप्रानचलेचहैं योंघरसे॥

मयंकमंजरी (भ्रूभंगकर) "क्या कहा ? ज़रा फेर कहिए ? नए बर से" (नेत्र रतिमा धारण करने हैं)

वीरेन्द्र-(स्वगत) अहा इससमय सुंदरीका आन्तरिकभाव कैसे गंभीर भावका परिचय देरहाहै, यदि ललनागनोंकी लालआंखें दावानलकी जननी कहीजायँ तो अत्युक्ति नहो. ऐसाकौन पुरुषहै जो इन आंखोंकी ज्वाला से दग्ध नहीं हो. (प्रगट प्यारीका हाथथामकर) ऐसीरुखाई एकाएक कहांसे उत्पन्न हुई. यदि हँसी न सहीजाय तो हँसी ठट्ठा करनाभी उचित नहीं. क्या यहतुमारे बे सिरपैरकी बातोंका ठिकउत्तर नहीं है ? खैर यह जो यदि अपराधहो तो इसे भी अपनेही एक अंगकाजानो और क्षमाकरौ.

मयंकमंजरी—(हाथझटककर) चलो हटो, हम रुक्मिणी परिहास अच्छानहीं लगता; क्या पुरुषोंकामुहहै जोस्त्रियोंकी बराबरी करसकें ? जोउनकेलिये सदाप्रान उपायनलिये खड़ी रहतीहैं, तौभी मनुष्योंको उनके ऐसीनिष्कपट प्रीतिकी ओर दयाका लेशतक नहींआता (अँगड़ाईलेके) अच्छाजानेदो परतुमारे इसभुलावेमें कौन आवेगा ?

(दोहा) जानिजबै मधुमंजरी, मधुपी मनकी बात।

नैन हजारन कोसपै, हिय खीराकी फांक॥

कामिनी–ठीकतो है महाराज!:–

(दोहा) कपटी जनकी प्रीतिहै ज्यों मृगमदन उलाँक।
नैन हजारन कोसपै हिय खीराकी फांक॥

वीरेन्द्र–(मयंकमंजरीकाहाथ टीपके) आह! अब यह तुमारी भाव भरी अँगड़ाईकी चढ़ाईके आगेतो हम सचमुचही हारगए (गद्गदस्वरसे) ओहो! यहभाव, अरेकामदेव! बसअबकी बारहीमें मारडाल तड़फानेसे तुझे क्या मिलेगा. प्यारी इससमय तुमारी शोभा, अहा! अनिर्बचनीयहै-

(सवैया) बिधु बिम्ब अनार सरोज सुमेरु.मनोभव गेंद गिरे थलमें।
नव बिम्बरती पतिकेदोऊ पाहरू. दुन्दुभीमार धरे दलमें॥
कर फेरतही थहरात मनो वरदेत शिवस्तुति से पलमें।
चकबाक किशोरि लिलम्बरमें मढ़े मानोतिरे यमुनाजलमें॥

(मयंकमंजरी लज्जासे सिमटजाती है)

कामिनी–(हँसके) वाह महाराज! धन्यहै!! क्याही मजेमें बात उड़ाना आपको आता है. कहा है:–

(दोहा) बातें माखनसी लसैं हिये कटारी गोद।
चतुराई चितचोरकी हियगड़िगई अखोद॥

वीरेन्द्र–(स्वगत) अहा! इन सखियोंकी अंगभंगी से कौन छिना अंगभंगी भये बचसक्ता है:–

(कबित्त) नाजुक नजाकतसे नेहिन निरेखिदन्त. दीपक दिखायकाम कसकसकायदेत। मधुर बचन ऐन अमिय अँचन ऐंचि. सुधा कुम्भ आनंद अमोघनिबहाय देत॥ कमरलचाय उर उरज हिलायअंग. अंगचमकाय रीझिरचिक हँसाय देत। श्री किशोरी रमकि झमकि तकि तकि इत. अँखियाँ नवेली तीर तरुन चलायदेत॥

औरभी (कबित्त) बातन बनाय इतआय मचलायहाय. मुरिमुसुकाय छिन सूरत भुलाय देत। दरस दिखाय ललचाय चित्तचाय

करी. नैननन चाय छिनछिन तरसाय देत ॥ लहकि २ बकि झकि तकि तकि हाय. सुनि सरमायधाय छातिन छिपाय देत। नायदेत जादू कैधों मदनजगायल्लाय. चाय देत चैन-निसों अमिय अँचाय देत ॥

सौदामिनी–महाराज यह क्या? मनहींमन क्या जपरहे हैं? यह कौन तन्त्रका मन्त्र है?

वीरेन्द्र–(हँसके) प्यारी! सम्मोहन तन्त्रका (मयंकमंजरीसे) क्यों प्यारी! उस दिनकी बात यह है?

मयंकमंजरी–(भौंह मरोरकर) कौनसे दिनकी?

वीरेन्द्र–जब हम तुम्हें छूने चले और तुमभाग चलीं और ये दोनों सखियां भी मार्ग भ्रष्टा मृगीकी भांति इधरउधर चलदीं--

मयंकमंजरी–(भ्रूक्षेपयुक्त) भला यह कौनसी नईबात है जो याद रखीजाती अरेऐसातो हमजानते हैं कईबेर भयाहोगा-फिर इससे क्या?

वीरेन्द्र–ठहरो२ अभी सब सफाई होजाती है, देखो! जब तुम उस दिन अपने नये छलभरे वेषके प्रगटहोनेके भयसे हमारे आगे २ शीघ्रता से भागीथीं, तो उससमय तुमारा भुज-बन्द क्या हुआथा? (मयंकमंजरी हाथ में भुजबन्द न देख केघबड़ाजातीहै, औरदोनों सखियां दांतोंमेंउँगुली दाबतीहैं)

मयंकमंजरी_(स्वगत) हाय! यह तो बुरी भई, प्यारेने हमलोगों की सब छलभरी बातें जानलीं; अहा! अब यहबात लेके न जाने कितना परिहास करेंगे.

कामिनी–(हौले सौदामिनीसे) अरी सखी! अबतोसबबात खुलपड़ी.

सौदामिनी–(हौले. कामिनी से) खूब भया, मैं बड़ी सुखी भई, मैं मने करती रही न कि ऐसा ऊटक नाटक न करो, पर तुम ने न माना, लो इसका फल अब देखना! कैसी ठट्ठे की साखा नई २ इससे निकलैंगी?

वीरेन्द्र–(परिहाससे) क्यों प्रिये! कुशल तो है? ऐसी चुप क्यों होगई?

मयंकमंजरी-(बातबनाके) इसमें चुप २ और कुशल मंगल पूछने से क्या ? अंगपर एकहो या दो इससे किसी को क्या काम ? एकतो यह हई है, और दूसरा घर धर आई हूं.

कामिनी-भला ! मानलीजिए कि उस समय किसीका भुजबंद गिरगयाहो, पर वो प्यारीही का आप ठहराते हैं इसमें क्या प्रमाण आप रखते हैं ?

सौदामिनी-और यह भी कि वो प्यारीही हो.

वीरेन्द्र-(हँसके) ढेर ढिठाई नहीं अच्छी लगती, बस! हाथ कंगनको आरसी क्या ? (जेबसे निकालके एक भुजबंद और एक अँगूठी जिसपर मयंकमंजरी लिखाथा, दिखलाता है) क्यों ? अब हमारी बातों का प्रमाण हुआ या नहीं ? यह अँगूठी भी हाथों के झटकने से गिरपड़ी थी. (दोनों भूषण सादर मयंकमंजरी को पहिना देती हैं, और वो लज्जा में डूबजाती है, तथा दोनों सखियाँ खिल खिलाकर हँसती हैं)

मयंकमंजरी-वाह वाह ? यह कैसा तमासा भया ? और सब इन्द्रजाल खुलगया.

वीरेन्द्र-ह ह ह ! और तुमारी परीक्षाभी पूरीभई. क्यों? अब तो हमें प्रशंसापत्र मिलेगा न ?

मयंकमंजरी-(हँसके) केवल बड़ीभारी उपाधि आपके लिए धरी है.

वीरेन्द्र-जो हो, पर भाई स्त्रियोंसे बाजी मारलेना साधारण पुरुषों का काम नहीं-

कामिनी-हाँ ठीक है, अबलाओं पर पुरुषार्थ दिखाना भी आपही सरीखे बीरोंका काम है. अहह क्यों महाराज! वाह!धन्यहै.

मयंकमंजरी-(वीरेन्द्रकी तरफ तिरछी चितवनसे देखकर-स्वगत) हाय ! बैरी बिधाताके मारेजी खोलके कोई काम भी मैं नहीं करसकती. अरे ! कैसी पराधीनताकी बेड़ी पावों में पड़ी है. मेरे लिए यह सुख न जाने विधाताने क्यों नहीं रचा ? जो हैं वो भी कांटोहीं से घिरा. हा !

कवित्त

कहाकरूं कहांजाऊं कासेकहूं कौन सुनै. सजनी निहारेठाम
कैसेकाम करती। तरसै तड़पि मेरोहियहू अनंग रंग. बढ़त
तरंगराह सूझहू न परती ॥ कबलौं निबाहूँ अब छिप न
सकैगी बात. तात इतरातमात मारगन धरती। श्रीकिशोरि
जूको प्रानप्यारी केहिठामजाय. कैसे प्रानप्यारेको निसंक
अंक भरती॥

कामिनी–(मयंकमंजरीका भाव जान-सस्मित) क्यों प्यारीदेखोः–

(सवैया) निसिबासरही इनसंगसखी. हकनाहकयों ठनठानियेना।
चितमाहिनिहारि निहोरेमेरे. यहऔगुनहू मनआनियेना॥
पियओर चितै चितदेहुअबै. हियमेंटिबिथा बिथरानियेना।
तुमलाजलजाईमिलोभुजमेलि. ललिचिरजोबनजानियेना

मयंकमंजरी–(त्योरीबदलके) चलपरेहो? क्या! यहतेरा आजरंग
है? क्या भांगका संगतो नहींभया?

वीरेन्द्र–हां हां! तभी यह उसकी तरलतरंगके रंगबिरंगकी उमंग
उठरही हैं (भ्रूक्षेपकरताहै)

सौदामिनी–क्योंसखी! यहतो वहीमसलहै "किमनमेंभावे पैमुहनहि-
लावै" यह किसकामकी बातहै? अरेजोकोई अपनेघर आवे
है उसकी यथारीति आतिथ्यकरनी योग्यहै नके तुमारे ऐसा
कोरा २ बर्ताव! जरातुम....

मयंकमंजरी (रोकके–सस्मित) चल, बडीघरवाली बनी है–

कामिनी-(चुटकीलेके) अरीमेरी ललना! बड़ीघरवालीतो तूहीहै-
भगवान् तुझे सलामत रखे, और मैंतो बिचारी गरीबिनी
छोटी घरवालीहूं–

मयंकमंजरी–अरी क्योंमुझे बेबात छेडेहै, जोतू न बैठनेदेतोमैं यहांसे
उठ जाऊँ?

सौदामिनी (श्लेषसे) हां हां! कामिनी! तुझेतो आजएकदम सुरही
चढ़ गयाहै, अच्छा तारबांधा.

वीरेन्द्र–ठीकतो है. किसीबातकीजादे रेलारेल अच्छीभी नहींहोती-

कामिनी–वाहजी ! कृपाल ! आपनेभी अच्छा उत्तर दिया. अबतो दोनों खूबही मिलखेले.

(दोहा) कहै रुखाईकी कथा सखियन नैन निरेखि।
पैपियके पाए तिया सुख पावत अन पेखि॥

जोहोलेसौदामिनी मैं जाती हूं. क्योंकि प्यारीको अकेलाही भावेतो मैंचली.

(झूलेसे उतर धीरे२ पेड़ोंमें छिपजाती है)

मयंकमंजरी–हैं हैं ! सुनोतोसखी. हाय ! कामिनी ? यहतो सचमुच चलीगई

सौदामिनी–हां प्यारी ठीक तुमनेकहा, वाहरे चलाजाना, भलाइतनी रुखाईका क्यामतलब? मानो कभीकी जानहीं पहिचान न रही होय.

बरिन्द्र–(सौदामिनी से हँसके) हमें विस्वास नहीं था कि तुमारी सखीइतनी स्यानी होगई है–

(दोहा) पहिले तो हँसिहँसि सदा बात कहत सकुचात।
पै अबछलबल से कहै बात बात में बात॥

मयंकमंजरी–(दोहा) कहे और चितमें धरे औरन नेकुलजात।
पै इतमों सँगही सदा बात बातमें बात॥

सौदामिनी–नहीं प्यारे!मेरी प्यारी तो सदा तुमारेही नामकी माला फेराकरे है पर आज आप कईदिन पर आए हैं इसीसे इसने इतना आना ताना दिया (स्वगत) ये दोनों एकदूसरे से मिल अपने २ मनकी निकालनेके लिये घबरारहेहैं. तो थोड़ीदेरके वास्ते मैं भी यहांसे टलजाऊं तो अच्छा, (प्रगटइधर उधर देखकर) न जाने कामिनी कहां चली गई भाई यह तो बड़ी कठिनहै. (घूमके) मैं उसको अभी पकड़लाऊं तो सही ! (कुछ ठहरकर औरबातटालके) महाराज ! आपको आये देरभई; हाय ! मुखसूखासा दिखलाई

पड़ताहै, रामराम! मैंभी अभीतक भूलगई थी और प्यारीने भी कुछ याद नहीं दिलाया; खैर ! छिन भर आपठहरें मैं अभी बीड़ी और शरबतलिये आऊंहूं.

वीरेन्द्र–(हँसकर) अरे प्यारी इसकी तो आवश्यकता नहीं मैं, सच पूछो तो केवल तुमारे इतने सन्मानहींसे हरा भराहोगया. और यदि तुम कुछ इसहमारे कथनको दूसरी तौर समझो तो तुम्हें अखतियार है पर शीघ्रआना क्योंकि हमें शीघ्रही जाना भी है.

मयंकमंजरी–(सौदामिनी का अंचलथाम, भयनाट्यसे) ऐं सखी ! यह क्या ? (मुझेअकेली छोड़के तूभी कहांचली ? ऐसाही है तो ले मैंभी चलूं झूलेसे उतरनेका उपक्रम)

सौदामिनी–(कुटिल कटाक्ष करके सस्मित) रहो २ (अंचलझटककर) हरेक समयकी हठ अच्छी नहीं होती. मैं आऊंहूं न ! फिर ऐसी जल्दी क्या ? और तिसपर अवंतीके राजकुमारके अंकमें भी डरलगे है ? हूं ! बिचारी निरीखिलौनाही तो खेले है. (जलदीसे चलदेती है)

मयंकमंजरी–(रिससे) अच्छा ! आज तो तुम दोनोंने मुझे अकेली छोड़के चलदिया इसका उत्तर मा को देना होगा. भला सखी ! यादरखना इसका बदला मैं भी तो कभी लूंगी (झूलेसेउतरना चाहती है)

वीरेन्द्र–(थामकर) ऐ प्यारी ! आज तुमारी कैसी कठोर प्रकृति होगई है ?

हाय ! मुझे आज यही बियोग बिदाई क्या मिलने को थी, कि छिनभर भी एक संग बैठना पहाड़सा होगया ? अरी सुन्दरी ! तुमतो ऐसी निठुर नहीं थी, किन्तु आज कौनसी पवन बही है ?

मयंकमंजरी–छोड़ो २ राजकुमार ! देखो मुझे देरहोयहै. इधर कोई न कोई सखी आजायगी तो कैसी लज्जा की बात होगी ?

(ज़रासरकजाती है) (ठहरके) अब कब दर्शन होंगे?

वीरेन्द्र-(दीर्घ निश्वास लेकर) हा! चन्द्रके ऊपर अँधेरी घटाका आना और गुलाबमें काँटा होना, तथा अमृत और विषका एक सम्बन्धहोना कोई आश्चर्य नहीं. प्यारी इसका दृष्टांत आज तुमनेही स्पष्टकर दिखाया.

मयंकमंजरी-(लज्जासे) प्राणनाथ! इन प्यारे प्रानों को और अब न तपाइये (संकुचित होती है)

वीरेन्द्र-अहा! अबलागण ईश्वर की चमत्कार सृष्टिका आदर्श है.

(दोहा)-एक एक भावन चितै. अमिय विषय उरलाय।
जियैमरैछिनजन सहस. तरुनिन तरुन सुभाय॥

(मयंकमंजरीका हाथ अपनेहाथमें लेकर) प्रिये! कई एक दिनोंसे अभाग्यने इधर नहीं आने दिया कि तुमारा दर्शन कर हृदय शीतल करता, हाय! तुमें नैन भर न देखने से हमारी जो दशाहोती है वो तभी जानोगी जब उस जन्म में तुमसो हम और हमसो तुमहोंगे.

मयंकमंजरी-(विलोल कटाक्षकरके) चलो! अबतुम बड़ी२ बातें बनानेलगे; कहनाकुछ और करनाकुछ, क्यायहीकरारथा?ऐं!

वीरेन्द्र-(हँसके) क्यातभी इतनाकोप? हा! तुमें देखनेकोतो हमारा जी तरसै और तुम इतनी अलग २ रहकर बहालीदो और तिसपर तानाभीकसो. क्यातुमें पहलेकेकरार यादहैं? और उसकेऐसा बरताव करतीहो? क्यों! ठीकहै?

(मयंकमंजरी लज्जासे सिरनीचा करलेती है)

मयंकमंजरी-हाँ जीहाँ! क्योंन कहोगे:-

(सवैया) तुमक्यों इतआवत जातनहीं.निरमोहीभए करौबातनहीं।
हमसे अबकाकछु नातनहीं. किमिबोलतमें सरमातनहीं॥
तुमसेकोऊप्यारी रिसातनहीं. मुखकारनकौनदिखातनहीं।
इतनोअबखेद सहात नहीं. पियतोबिन मोहिसुहातनहीं॥

वीरेन्द्र (समीप सरककर) भला! अबतुम हमसे शंभुशपथकरालो?

मयंकमंजरी–(प्रेमकटाक्ष पूर्वक) देखो ! तुम सखियोंके सामने इतना न छेड़ाकरो, भाई यहसबबातें हमेंनहीं अच्छीलगतीं (ठहरकर) क्योंजी भला यहक्या ? कि एकतो आनाभी नहीं और दूसरे बहाना और दोस सिरपर धरो हाँ इतने दिनोंतक छुट्टीकहांसे मिलती:–

(सवैया) तुमजाहुपिया निजगैलचले. हँसकेनितमोहि लुभावतहौ।
बिषसीबतियां घतियां सिगरी. रचिरारसदा उर लावतहौ॥
कबहुं जियखोलि किशोरिमेरी. छिनहूं नहिंहौस पुरावतहौ।
नितआवतनाहिं इतै पैतऊ. राचि कोमलबात बनावतहौ॥

(हँसके) रहो २ तुमारी मैं लजा करतीहूं (फूलोंकी माला गलेमें पहिराय और एकसे वीरेन्द्रके दोनों हाथ बाँधदेती है)

वीरेन्द्र–(मुख चुम्बनकर) प्यारी ! अब क्षमा करो, और अपने ऋणीको बन्धन मुक्त करो और यह तो आजन्मके लिये चित्त में सदा बँधा रहेगा क्या ! तुमसे उरिण मैं कोटि जन्म में भी होसक्ता हूं (माला हाथ से खिसल पड़ती है और वीरेन्द्र अपने गलेकी माला में से एकमयंकमंजरीको पहिराकरके) "रत्नःसमागच्छतिकाञ्चनेन" इसप्रसून की शोभा तुमारे कोमल अंगोंही में है (कपोल चुम्बन करता है)

मयंकमंजरी–अरेरे ! यहक्यातुमने किया ? यह माला विपर्य्यय और कर बन्धन तो बड़ा बेंड़ाभया, (शोचने लगती है)

वीरेन्द्र–(गलबांही देके) प्यारी ! शोच क्या है. ऐसा तो सनातनही से होता आया है, और जब मन विनिमय होगया तब मालाहीकी क्या गिनती है ? वचन बन्धनसे बढ़कर कर बन्धन नहीं सोतो पहिलेही होचुका है.

(गाढ़ा श्लेष और मयंकमंजरीका लज्जा नाट्य)

मयंकमंजरी–अच्छा तो अब इसकी शपथकरो कि:–

(दोहा) जन्म जन्म इननैन में सोहै सील सनेह।
रहिये सदा सुनीतिसों एकप्रान दो देह॥

वीरेन्द्र–(दोहा) मन बचकर्मनते सदा तूमेरी हियहार।
तेरेपग प्यारी परसि दीनों मनउपहार॥

इसका सर्व शक्तिमान जगदीश्वर साक्षी है. और क्या. (मयंकमंजरी वीरेन्द्र की गोदमें कला खाकर) जगदीश्वर ऐसाही करै (चोटीलहराजाती है)

वीरेन्द्र–अहाहा! हृदयेश्वरी! अभी तुमारी चोटी ऐसी घूमती हुई हिली कि मानों कलेजेपर नागिनि लहर खागई हो. आज तुमारे भोलेभाव ने मुझे निःसत्व करडाला:–

(कबित्त) अति सुकुमारी प्यारी मदन कियारी फूली. कुंदनकी डारी भारी अनँग अमेठ्यो है। कंचुकी करारी जरतारी सारीकारी अंग. मदन खुमारी चंद आननमें पैठ्यो है॥ भूषन सुधारी रचि पचिके किशोरि वारी. सहज सँवारी चाल अजब अमेठ्यो है। कारी घुँघरारी मतवारी फटकारी लट. मानों कंजमाल आन व्याल ऐंठ बैठ्यो है॥

मयंकमंजरी–वाह वाह! यह क्या कुसमयकी रागनी छेड़ी. मैंने क्या झूठ कहा? (कटाक्षकरके) मेरेजीवन! तुमेदेखे बिना मुझेभी पल छिन कल नहीं पड़ती. देखो! बिरहकी ज्वाला से सारा सरीर सूखगया. हां! एकतो ये सखियां योंही रात दिन चुटकी लिया करे हैं, और दूसरे जो इनके सामने एक भी जीकी बात खुलके कहूं तो ये और भी लगपड़ें. इसी से मैं विवस पड़ीहूं. (मुसकाकर) देखें कब भगवान की इधर दृष्टिपड़े है (निश्वासत्याग)

वीरेन्द्र–ओह! यह क्या पुराना किस्सा कहने बैठी. धीरजधरो. घबराना क्या? इश्वर सर्बदा सहायकहै फिर डर किसका? खैर! अब कोई प्यारी समयानुसार गीत गाओ जिसमें छिन भर अमृतकी धारा पीके प्यासाचातक तृप्तहो. (पैरों से

हिंडोला हिलाता है)—

मयंकमंजरी—(आजकल तो कजरीकी बहारहै पर तुमें तो मलार सूझी है तुम गाओ तो मैं भी गाऊं—

वीरेन्द्र—अच्छा तो उसमें क्या पहिले कजरीही से प्रारम्भहोय.

कजरी

मयंकमंजरी— झूले झमकि हिंडोला झरि लाए बदरा॥
झरि लाए बदरा भरि धाए बदरा १
वीरेन्द्र— सारी सुरुष सुहावै सिर धानी चदरा॥
बहे पुरवी पवन पापी खोवै हदरा. झूले० २
मयंकमंजरी— चारु चपला चमकि चित करै कदरा॥
गावैं गहकि किशोरि लखिआई अदरा. झूले०३

वीरेन्द्र—एक और सही :—

कजरी

चम चम चमकेजुगनू दम दम दामिनिदमक दिखायरही॥
रम रम रमकिचलै पुरवाई. धम धम धायरही. चम २।१
मयंकमंजरी—झम झम झमकि बुन्द बरसत घन झोकन खाय रही॥
श्री किशोरि कुहुं कुहूं कुहूंकनि कोकिल गाय रही २

वीरेन्द्र—प्यारीलो कजरी तो तुमने खूबहीगाई पर अबमलारभीहोय

देसमलार

बैरिन बन बरसात छई॥
मयंकमंजरी—(हँसके)बागनमें बिहरैं बहुबनिता बिहँसि बिनोदमई१
बादर बनि बनि बुन्दन बरसै बिचरैं बिहँग दई।
बोलैंबचन बिलास बढ़ावन कोयलमोर सई२॥
बिरहिन बान बिसेष बनावत चपला चमकिकई।
श्रीकिशोरि बालमकी बतियाँ मनवचभीनिगई ३

वीरेन्द्र—(आश्लेषकरके) अहाप्रिये! तुमारी मीठीबोली की कोमलता एवं माधुर्यता देखके अमियभी अपने को बिष मय समझ

शिवके कंठमें छिपके झांकनेलगा.

मयंकमंजरी– (हंसके) और तुमारी अमृत मयमूर्तिकी गुरुता देखके तो अमृत हलका हो ऊपर उड़गया (हास्य)

वीरेन्द्र–(देखोप्यारी! अभीतो नईलताओं में कोमल पल्लवलगे हैं. कलियाँ अभी ज़राभी नहीं खिलीं, तौभी भँवरभीर भारी क्यों होरही है?

मयंकमंजरी–(दोहा) मुकुलित बिकसित पल्लवित कलियाँ अति रसदेत। जोउदार रिझवार अलि लपटि झपटि रसलेत॥

वीरेन्द्र–अहा! अभी अधखुले अनार पकेभी नहीं केवल अधखुलेही अपनी मुग्धावस्था जनायरहे हैं. अरे तिसपर भी पंछियोंने क्यों पंजामाराहे? हमारे जानतो.

(दोहा) पंछी परदेसी दोऊ एकजातके लोग।
रस बस बिबस भए रहैं समय न देखैं भोग॥

औरभी इन लवंग लताओं में अभी मध्यावस्थाही में इतनी चतुराई और चंचलता क्यों है?

मयंकमंजरी–वाहजी! क्या चंचलता अवस्थाहीपर होयहै? अगरजो ऐसाही होय तो छोटी उमरही चंचलताकी खानहै.

(दोहा) नैन मीन कर पदनवन चाल कुरंग समान।
खंजन कीसी चतुरई मुग्धाकी रस खान॥

औरभीः (दोहा) कोमलपल्लवलहलही लपटरहीतरुगात।
भौंरभिरभारीतऊ छबिछिन छकिछकि जात॥

(कटाक्ष करतीहै)

वीरेन्द्र–(परिहाससे) तो तुमारी तुलनाभी हमने तुमारे मुखसे करालि; देखना!

मयंकमंजरी–चलो२ किसी दूसरेको बहालीदेना.

वीरेन्द्र–(हँसके) ठीक२पर अबजो इच्छाहो तो चलो जरा उद्यान की शोभादेखें–

मयंकमंजरी–वाहवाह महाराज! मैंभी यही विचार रहीथी.

[दोनों एक दूसरेकाहाथ थाम भूलेसे उतरना नाट्यकरते हैं—
और धीरे२ इधरउधर घूमते२गुलाबबाडीमें प्रवेशकरते हैं)

वीरेन्द्र—(चलते२ कपोल स्पर्शकरके) अरीप्यारी तुमारीतो:—

(सवैया) चालमराल विहालकरै. जब चंपकलीसी ललीयोंचलीहै।
मैनरिझावन रूपअनूपम. सुन्दर साजे सिंगार भली है॥
जातनमें अवलोकतही. सुखस्वाद सराहि पियूष डली है।
भावभरीतू गुलाबछरीसी. किशोरिजू गालगुलाब कली है॥

मयंकमंजरी—आज कल तुमने तो अपनी बिलकुलिय खुशामदी प्रकृति करडाली—

वीरेन्द्र—(हँसके) जीहाँ ! पर हाथभी तो कुछनहीं लगा (स्वगत)

(कवित्त) बातनिअथोरमन हाथनिमरोरलेत. रातनैनजोरघोर घायल करोकरै। बतियांनथोर रसबातनकी जोरजोर. सेजिया निहोर हाय सोरहूकरोकरै॥ कुचकटिमोर छलकाय झुकि दौरदौर. कौतुककरोरकरि विवस करोकरै। एरीजान अजब अनोखीचोखी मैनडोर. प्राननफँसाय किलकौतुककरोकरै॥

हाय ! तौभी अभीतक हाथसे पारेकीतरह निकलीहीचली जाती है. अहा:—

(कवित्त) मैनमदवारी सुकुमारी मतवारीप्यारी. सजके सँवारीसारी सुरंगबनायके। गजबगुमानमान मानत मनाएनाहिं. निपट निहोरेकरि हारेधायधायके॥ कंचुकीकरारी अंगभूषनबहारी हारी. अँखियांनिहारी बारी सैनसुख पायकै। गायके बजाय के रिझायके खिझायकेहू. मानत न मान जान जादु न चलायकै॥

मयंकमंजरी—(स्वगत) अहा ! प्रीतमका क्षणिक सहवासभी कैसा जीको लुभाय रहाहै. हाय ! क्या ऐसाभी दिन आवेगा कि मैं सदाकेलिए इनके गलेकीहारबनी रहूंगी. (प्रगट) प्यारे! इस अधीनीपर इतनी रुखाई क्यों ? मेरी दसाजानके भी तुमे ज़रातरस नहीं आती (मन्दस्वरसे) मेरेप्रानप्यारे:—

(दोहा) मन मतंग मानत न कछु. इतैलाज लवलीन।
बरसि नैन जलजाय कित. विकल वारिविन मीन॥
(दोहा) तुवदरसन अमृत सरस. लहि अगाध दृगमीन।
रहि रहि उछरि विनोद मुद. पिव सुचारु रसपीन॥

वीरेन्द्र– प्रानप्यारी ! अपने मनसे तनिक मेरामन तौलो तो सही तो देखोगी कि प्रेमकी तराजूपर सब भावमें दोनोंमन सर्वथा एकही है. विशेष कहाँतक कहें:--

(दोहा) साँस आस तुवपास पिय. मासजास पलमान।
मार मार मारत रहसि. एरी चतुर सुजान॥

(मयंकमंजरी लज्जित होजाती है)

मयंकमंजरी–(अनुरागसे) प्रीतम ! देखो (अँगुली से दिखाके) ये लोभी भौंरे खाली रसहीके लिए कैसे मतवाले, बावले हो रहे हैं, जो इन नई नई कलियोंमें लपट रहे हैं. भला इन कच्ची कलियोंके दुःख देनेसे इननिगोड़ोंको क्या सुख मिलेगा ? क्या अभी इनकलियोंमें रस धराहै ?:--

(दोहा)रसहित चाहत अलि कलिन. नित नूतन लखिधाय।
अरे निर्दयी प्रीति की. कौने रीति सिखाय॥

वीरेन्द्र–(गले लगाके) मेरीहृदयमनि ! रसकी बतियाँही न्यारी हैं, भला हम अनारी क्या जाने, पर जो अधकच्चीमें रसभरा रहता है वो पकी पिलपिली में स्वप्नमें भी नहीं मिलता; क्योंकि पकनेपर तो जर्दी छाजाती है; भुर्री पड़जाती है, और आनन्द चलाजाताहै. तब भौंराभी क्यों नजर करने लगा ? देखोः–

(दोहा)जैसी कलियाँ कचकची. ऊख पियूष समान।
हाथ लगै मुरझात है. खिली कली अरुपान॥
(दोहा)सरस रसीली रस भरी. नई कलीही होय।
पैदिन पाएही निरस. बात न पूछे कोय॥

मयंकमंजरी–(झटसे अलगहोत्योरी बदल) बस ! होचुकी अब हम

से न बोलना नहीं तो ठीक नहोगा. क्या मुझेभी चारदिन में तुमतो न छोड़दोगे ? हाय ! हाय !!

(दोहा) रसवस रसदै निरस ह्वै . अंग अंग कियछेद।
नीच भौर तौहू नहीं. जानत प्रीतरु खेद॥

वीरेन्द्र-(पैरछूने चाहताहै कि मयंकमंजरी झपटके कंठाश्लेष कर लेती है) प्यारी इसीनिठुराईसे भ्रमर षट्पद अर्थात् डेढ़ पशुहै. और हमतो खासे मनुष्यहैं हम लोगोंका तो प्रेम पंथही निरालाहै; यहाँ तो "एकप्रान दो देह"

(दोहा) कियो हृदयको हृदय दै दियो नेह को नेह।
अब प्यारी पीतम भए एक प्रान दो देह॥

मयंकमंजरी-अच्छा तुमने वो क्या कहाथा ? "जैसी कलियाँ कच कची" मैं भूलगई. कहो तो

वीरेन्द्र-सुनो ! (पुनः दोहा पढ़देताहै)

मयंकमंजरी-यह ठीक नहीं, हाँ ! यों मृग तृष्णासे चाहे कोई पागल भलेही होजाय पर रसके नाम तो ००००० (रुकके):-

(दोहा) पके चखे रस देत हैं. नीबू आम अनार।
पीन पानही खात है. जो किशोरि रिझवार॥

वीरेन्द्र-(आनन्दाश्लेषकरके) मेरी आली ! इतनी भोली भाली न बनो, नवेली लताकी स्वर्ण लतासे क्या समता. और डेढ़ पशुसे और अपशुसे क्या संबंध; और निरस रससे सरस रसकी क्या समता-तुमी विचारो !

(दोहा) अति सुंदरता कंजकी सजल गात से जात।
रवि मंडलकी चाँदनी जिमि फीकी परिजात॥

(दोहा) कमल चंद रवि कंबु अमि. खंजन सुरभि पराग।
जड़ सीतल तप कठिन खर. जड़ अनंग पतिराग॥

(दोहा) जाकी उपमा नायका से जों करै प्रवीन।
ते कवि सूर विवेकविन. जानै रसन नवीन॥

क्योंकि तुमारी उपमा हम कहते हैं त्रैलोक्यमें भी मिलनी

दुर्लभ है. (मयंकमंजरी हँसपड़तीहै) और (दोनों घूमते २ पुष्करणीतटस्थ लवंगलता कुंजमें प्रविष्ट होते हैंः

मयंकमंजरी–(वीरेन्द्रका हाथपकड़ स्फटिक शिलापर बैठती है) प्राननाथ! निर्दयी पच्छियोंने सबकच्चेफल काटडाले;भला अधकचरे फलोंमें क्या मीठापनहोगा? और उससे इनकी भूख मिटेगी एवम् आनन्द मिलेगा?

वीरेन्द्र–(हँसके) लाड़िली–भूखतो ध्यानसे, मानसे वा सन्मान, पान और केवल एकटकटकी देखनेहीसे मिटजातीहै, फिर जो चोंचमारे उसकाक्या पूछनाहै? परयदि वासनाभीपूरी होतो क्याबातहै! रसिकलोग केवल भावकेही भूखेहोते हैं. तिसपर जोभूखलगे और स्वादिष्टरस सामने धराहोतोकौन अभागा देरकरेगा? यदि हाँ! उसके सामनेसे थालीखीच-लीजायतो वस्तुतः मौतकासामनाहो (हँसकर) येविचारे हमारेऐसे मूर्खनहींहैं कि धीरजधरैं. कदाचित् तबतक कोई औरही आके हाथमारले,तब येतोमुहताकतेही न रहजायँगे? और फिरतो आगे ऐसास्वादभी न रहेगा. (चुटकीलेती है) (लटकसे हाथधरके) प्रियवादिनि!:-

(सवैया) छतियांछतियांसो लगायअरी. करमेलिकपोलन लावनदे।
अधरामृत पानकरैं हम दोऊ. जराभुजमेलि सोहावनदे॥
अरुझाय सबै अँग अंगन में. कुच कंचुकीहू दरकावनदे।
करि कौनछली छलएहूहहा. विरहागि सुधासों बुझावनदे॥

(दोनों गलेसे लगजाते और अधरासव पानकरते हैं)
(और लताकीओटसे निकलकर सखियां आती हैं)

कामिनी–अहा! हमदोनों के चले जानेसे, क्यों सौदामिनी? वे दोनों खूबसुखसे खुलखरते. और मेरीसखी ने सचकहाथा कि "उनकेसंगही हमारी सुखकी सीमाहै." सौदामिनी! उनका मनोरथ पूराहुआ. और अबहमदोनोंकीभी बातबनीबनाई हीसमझ!

सौदामिनी– सोतोठीकहै री कामिनी! इसमें संदेहक्या? ब्रह्मानेसब अपनीकारीगरी खरचकरके यहीजुगलजोड़ी रचपचअपने हाथोंबनाई है. परसखी! सुमंत बड़ाकुटिलहै और यहबात खुलनेसे बड़ागजब होजायगा. देखूं आगेभगवान्की क्या इच्छा है.

कामिनी– भलासखी! राजकुमार से बढ़कर प्यारीकेजोग दूसराबर संसार भरमें ढूंढे मिलसकताहै? अगर हमसे कहो तो हम यही कहेंगे कि कभीनहीं. और यहतो सुमंत देव के भाग्य की बातहै केहर गौरीसंयोगभया–

सौदामिनी– सबठीक सखीपर जढ़से कामपरै तब कुछनहीं बनपड़े है देखें क्याहो

कामिनी– क्यों इसमें बड़ी मा कुछ करसकेंगी? वो चाहेंतो क्या-

सौदामिनी– (शीघ्रतासे) अरी बावली भईहै? वो कुछभी इस में बोलेगी तो बनीबातही बिगड़ जायगी (ठहरके) देखाजा यगा, जिसने इतनासुख दिया वही निबाहैगाभी. चल! देखें सखी, कहां बिराजेहै. (दोनों आगे बढ़भूलाकी ओरसे होती हुई बावलीकी ओरजातीहै)

कामिनी– (हँसकरधीरेसे) अरीदेखा! यह जुगलजोड़ी बिराजी है. अहाः–

(सवैया) लखिलौंगलता घन कुंजनमें, मनमोहन दोऊ समायरहे।
मुख चूमि उरोज सरोज गहे. बहियाँ गरबीच मिलायरहे॥
छिनही छिन प्रेम प्रमोदनते. मनको मदमस्त बनायरहे।
लपटायरहे, सुख पायरहे. छबि देखि किशोरि लुभायरहे॥

सौदामिनी–(आग्रह से देखके) अहा तूने तो सचही कहा सखी इधर समय भी कैसा सुहाय रहा है–

(सवैया) फूलि रहे बन बाग तड़ागन. आगन पौन चले सुखदाई।
नाचत मोर चकोर कही. पिक पीयु पुकारत हैं मनलाई॥
राग मलार अलापरही. यह कोकिल केलि कलादरसाई।

लीन महामद पनि पयोधर. बाँह किशोरि गरेउरझाई ॥

पुनर्यथाः–

(सवैया) सोइ रहे दोउ कुंज कुटीर. अनूपम रंग रँगे मदमाते।
संग उमंग बढ़ायरहे. लपटायरहे रसमें हरखाते॥
अंग सबै उरझायरहे. सुख पाय रहे हँसके मुसुकाते।
गायरहे उरलायरहे. हँसि हौंस किशोरिनहीं कमपाते॥

अहा! इस समय ऐसी सहज सोभा होरही है के क्या कहूं:–

(सवैया) सखि केलिसमै रसरंग किशोरि. दुकूल पियासे छुड़ावती है।
गरमेलिभुजाउरलावैपिया. तोतियाहूहियाकोजुड़ावती है॥
रति रंग सुरंग बढ़ावनमें. निज मौज मनोज उड़ावती है।
करिकैबिपरीतथकीसीलखै. मानोकामधुरीकोतुड़ावती है॥

कामिनी–अहा! अरी भाव तो देख! अब तो मुझसे भी कुछ कहे बिना नहीं रहाजाताः–

(कबित्त) अजबअनोखी चोखीओखी अँखियांनवेली. निरखि निपुन लचिबदन नचायदेत। दिपति दीवानी दुतिदूनी दामिनीसी चारु. चसकचलाय काम कसक सकायदेत॥ कलितकिशोरी भोरी अमीकी कटोरीगोरी. करिबरिजोरी छातीछुवतछकायदेत। वायदेतबरुनी फिरायदृग नायत्योंहूं. मन मुसुकाय चाय दसन दिखायदेत॥

सौदामिनी–और क्या-यहनागिनिसी ऐंठीचोटी गजबकररहीहै.सखीः-

(कबित्त) सोवतसलोनी सेजमंदिर पियाकेसंग. अंगअंगसंगनि उरझ सुरझोरह्यो। चोटीचारु मदन चमोटीमोटी मानिनीकी. सुभग सुगंधन अमेठी ऐंठयोंरह्यो॥ गरेभुजमेलिझेलिसुखद सयानेदोऊ. सुखमा बिसेषचारु उपमायहैरह्यो। धाराधर धरनिधरातललपेटिधारि.चापकेप्रमाननागनिराधारह्वैरह्यो॥

कामिनी–अरी,अबतो मैं प्रगट होऊँगी (आगेबढ़ आगमन सूचनके मिषसे) जैजैजै! बलिहारी है, लाडिली लालप्यारेकी.

सौदामिनी–(हँसके) बधाईहै. बधाई है. प्यारी बलिहारी–(दोनों

प्रियाप्रीतम लज्जितहो परस्पर हटबैठते हैं और सखियां मंदास्मित पूर्वक शिष्टाचार करती हैं)

मयंकमंजरी—(भ्रूक्षेप करके) क्योंजी तुमदोनों आज मुझे अकेली छोड़के क्यों चलगिईं रहीं ? भला मैं मैयाके सामने समझ न लूंगी—

कामिनी—प्यारी सखी, छमाकरो ! और तुमी बिचारो; मैंने तो तुमारे संग कोई बुराई तो नहीं की जो मासे उलहना दोगी.

सौदामिनी—(दोहा) रसके दिये छिदे हिये. यह बिधि रचीबनाय।
तौहू सदा कमोदिनी. ऊपरही इतराय॥

सौदामिनी—भाई मैं तो मैयासे कहदूंगी कि मैं इनकी रखवालीके लिए बिना दामका ०००० (रुकजाती है)

वीरेन्द्र—चर,वा अनुचर अथवा गुप्तचर कौनसा सखी ? रुक क्योंगई (सब हँसती हैं)

मयंकमंजरी—(भौं मरोरके) चलहट ! दूरहो !! तू बहुत बोले है. अबसे मैं तुम दोनों से कभी जो बोलूं.

कामिनीऔरसौदामिनी—बड़ी खुसीभई मैं गंगानहाई. लीजिये महाराज ! अब यह भार आपही सँभारिये. देखिये मेरीप्यारी किसी भांति दुःख न पावे क्योंकि यह अकेली बहुत डरे है (हँसती हैं)

सौदामिनी—अच्छा प्यारी बिदा तो होतिहूं पर चलतेबेरा एकभाव और सुनादूं:—

(सवैया) छकिप्यारी पियासुख संगकियो. रतिरंगतरंगअनंगबटोरी।
जुमभूमिकेचूमिकपोलअमोल.किलोलकलाकरिकेमुखमोरी॥
भुज मेलि रहे न हटे जो हटे. फहरै चहुंआननपै कचडोरी।
मनोप्रातसमैंससिचाटतहै. सुकुमारमनोहरख्यालकीजोरी

कामिनी—अरी यों नहीं यों कह !:—

(सवैया) बिपरीतकैसोएखिलारदोऊ.छकिअंगमेंअंगमिलायगठोरी।
सबरातकिशोरिबिहारही मैं. सगरीसजनीरजनीरही थोरी॥

अलसातउठेदोऊछैलछली. तियआननसैं लरलेतबटोरी ।
मनोप्रातसमैससिचाटतहै.सुकुमारमनोहरव्यालकीजोरी ॥
(मयंकमंजरी झटसे उठके चलते २) लोमेरारहना नही अच्छा लगता तोजातीहूं.हाय !–दोहा जाकीआस उसासहूं सदापास सहबास । सोहूखास निरासह्वैबोलेबचनकुरास ॥

अबमुझसे यहनहीं सहाजाता–(वीरेन्द्रघबड़ाकेउठखड़ा होता, और दोनोंसखी मयंकमंजरीका पैरपकड़के)
प्यारी क्यों ? क्याभया ? हाय अरे ! मैंजानती कि मेरीबातें ऐसीबिखैली तुमेंलगैगी तोमैं अपनी जबान पहिलेहीकाटके घर धरआती. खैर अब छमाकरो (बलपूर्वक खींचलाती है)

वीरेन्द्र–यहसब मेरेही आने से भया, नहीं तो क्यों इने इतना कष्ट सहना पड़ता.

(मयंकमंजरी हँसदेती है)

कामिनी–(सन्मुख हाथजोड़के सस्मित) प्यारी ! एक भिक्षादो !

मयंकमंजरी (हँसकर) अबयह कैसा सवाँगहै. अच्छा क्या कहोहो.

कामिनी–देना स्वीकारकरो, तभी कहूंगी·

मयंकमंजरी–भला कहोभी क्यायह नयाखटराग निकालाहै ?

कामिनी–(दोहा) दयाभरे नैनन जरा· चितै निहारो मोय ।
नाम तुमारो होय अरु· काम हमारोहोय ॥

सौदामिनी–बसबस ! मेरीभी यही भीखहै.

मयंकमंजरी–(बहुतठीक हँसके) ले ! अभीदेतीहूं (वीरेन्द्रसे) आर्य पुत्र ! दयाकर अपने दोनों मित्रों को बुलाकर हमारी सखियोंकाभी दुःख दूरकरो ये बिचारी उनकेबिना बड़ी बिकल होरहीं है (दोनोंपर कटाक्षपात)

कामिनी और सौदामिनी–हैं ! हैं !! यहक्यालो मैंचली जाऊंगी·(मयंकमंजरी) बस ! अपनीबेर कैसाकडुवा लगा ? हुंः (वीरेन्द्र से) बस ! प्यारे अबदेर न करो नहीं येबड़ा दुःख पावेंगी (हास्य)

(नेपथ्यमें) (दोहा) क्रीट मकुट बंसी लकुट. पीतबसन बनमाल।
नटवर भेख बिलोकिये. हियेबसो नँदलाल ॥

(सब चकित होजाती हैं)

बेटा ! मयंकमंजरी ! दोघड़ी रातगई अभी ताईं तुमलोग कहाँहो?पुत्री!आज क्या मंगला गौरी की पूजा न करोगी ?

(सब सशंकित हो उठ खड़ी होती हैं)

मयंकमंजरी–(सभय) सखियो ! जानपड़े है आज देरहोनेसे मैया हमलोगनको खोजती २ आपही इधर बुलाने आवेहैं. यहां पर तुमलोगभी अच्छे समय आनामिलीं, नहीं तो न जाने आज कैसी बिपत आती.

कामिनी–हाँ ! सखी !! आज बड़ीदेर भई, इसीसे माँ इधर आईं अब चलनाभी चहिए; नहीं तो विलम्ब होनेसे वो खोजती२ कहीं ह्यां न चलीआँवें.

(नेपथ्यमें करकंकण ध्वनि)

सौदामिनी–हाय ऐसे सुखके समय यह उपद्रवमचा. प्यारी,जी तो नहीं चाहताके यह सुख छोड़ाऊँ, पर कलेजेपर पत्थर धर-कर कहूं हूं कि अब राजकुमारको जादे परिश्रम देना ठीक नहीं, क्या करूं इच्छा भगवानकी, उन्होंने चाहा तो चार दिनहींमें यह भी अटक छुटजायगी जैसे "शकुन्तला" को "कन्व" ने आतेही पतिके घर भेजाथा, वैसेही तुमारी भी विदा ईश्वर करेगा. और अभीतक तो प्यारी परबस मा-मलान है.

वीरेन्द्र–(मयंकमंजरीका हाथ थामकर) हाँ ! प्यारी सौदामिनी ने बहुतही उचित कहाहै, यद्यपि चंचल चित्त चकोर छिनभर भी चंद्रमाके दरसन बिना कलनहीं लेता पर क्याकरे ला-चारहो अमावास्याके दिन भावी आशासे संतोष करनाही पड़ता है. इसीतर फिर संजोगकी आशासे किसीतरह इस कुसमयको बिना सोच संकोच बिता देनाही उचितहै (क-

पोल स्पर्शकर) तो फिर कल यहीं तुमारे दर्सन होयँगे न ?

मयंकमंजरी–(आखोंमें आँसूभरके) प्रान नाथ ! मेरीदशा क्या आपसे छिपी है, मैं आपसे किस मुहसे क्या कहूं:–

(दोहा) बेबस परी बनायके. कहा करूं अबहाय।
रसना दाँतन सामुहीं. निकरत अंग कुचाय ॥

जीवितेश ! अभी तो तुम आए और तुरंत चले ! हाय ! संध्या क्या सौतिनकी भांति तुमारा पल्ला पकड़े २ संगही आई. हाय !

(सवैया) व्याकुल ह्वै निज सेजपरी. भरे साँसचले दृग आँसुनधारी।
कौनगुनाह किशोरिकियो. पियप्रीतमप्रान दयानविचारी ॥
कामकी दाहदहै छतियाँ. सहिजात न मारिमरूं मैं कटारी।
बारिबिना।छिनमीनदुखी. तिमिपी।बिनआतुरबालदुखारी ॥

वीरेन्द्र–प्यारी ! कौन अभागा अमृत आपही हाथसे फेंक विषको चाहेगा ? तथा मालती की माला गलेसे डार, सांपका हार गलेमें डालना चाहैगा ? क्षीर सागर छोड़ मृगतृष्णा की ओर दौड़ेगा, पर क्या कियाजाय ?:–

(दोहा) पलछिनकल्पसमान सखि. तव बिनबीततमोर।
कै कठोर उर चोट पुनि. मन्मथ दहै अथोर ॥

(सवैया) सखि आँखलगी जबसे तुमसे. छिन देखेबिना तरसाने रहैं।
छिनकी छिन कल्पसमान कटै. अँसुआनके चूवत दाने रहैं ॥
करूं काह किशोरि अबै सजनी. रजनी उरलागत बाने रहैं।
मन प्रान तुमारे अधीन भए. पै अजौं यह नैन अमाने रहैं ॥

मयंकमंजरी–(बिकलतासे–स्वगत) हाय ! प्रीतमकेबिना यह बिषैली बर्षाऋतुकी निर्दयी पहाड़सी निसा अकेली बिरहिनसे कैसे काटे कटेगी ? प्यारे ! नैन, मन, प्रान तो सदा तुमारे संग है, पर तुमे छिनभर भी देखेबिना यह देह ऐसा चंचल होजायहै कि छिनभर भी एकजगह थिर नहीं रहता. हाय ! अपनी बिथा किससे कहूं –

(सवैया) अनुरागिनी ऊंची अटापै चढ़ी. मगदेखिचहूं द्दगतानती है।
फिरकीसी फिरै खिरकीपै सदा. तुवआवन बैन बखानती है॥
अकुलाइ किशोरिजू काजनतें. घरबाहरहू ठनठानती है।
पियप्यारेतिहारेनिहारेबिना. अँखियाँदुखियाँ नहीं मानतीहै॥

औरभीः–(स०) घरतेंअकुलाइछिनैछिनयों. बनमेंफिरिकांकरीछानतीहैं
धरकै छतिया बतियानकढ़ै. सखी पार परोसिनि जानती हैं॥
मुखआँसुनधोईकिशोरीनिसा. त्योंबियोगबिथातनसानतीहैं।
पियप्यारेतिहारेनिहारेबिना. अँखियाँदुखियाँनहींमानतीहैं॥

(नेपथ्यमें)

नजाने आज इतनी देरभई सब कहाँ चलीगईं हैं, कोई उत्तर भी तो नहीं देता. क्या कारनहै-अरीकामिनी! ओसौदामिनी॥

सौदामिनी–(उच्चस्वरसे) माँ! आतीहूं. चलीआतीहूं गुलाब बाड़ी से घूमके–

वीरेन्द्र–(चलते २ रुकके) प्यारी कुछ चिंता नहीं कल फिर मिलेंगे. और शीघ्र ऐसा उपाय करेंगे कि जिसमें तुम सदा निर्भय हमारी अंकशायिनी बनीरहो (दिखाकर) वह देखो! तुमारी माँ, इधरही चलीआवें है.

(गाढ़ाश्लेषकर करता है)

मयंकमंजरी–(हाथ पकड़कर) प्रानधन! जरा और छिनभर सामने रहो तो तुमारी मोहिनी मूर्त्तिको नेत्रोंद्वारा हृदयस्थ करलूं

(आँखोंसे आँसू निकलपड़े)

वीरेन्द्र–सुन्दरी क्यों व्यर्थ बिरहाग्निमें अनुरागकी आहुतिदे हृदय का होमकर रहीहो. प्रिये! कुछ दिन और भी प्रेम गुप्तरखो

(दीर्घ निश्वास)

(नेपथ्यमें पदचालनकी आहट)

अरे देखो मा आ रही हैं (चलते २ फिरफिरके देखता है)

मयंकमंजरी–(आँसू डालकर) अरे निर्दयी बैरी बिधाता! तेरी कुटिल गति नहीं जानी जाती–

हाय!:-(दोहा) छिनहिं समागम लालको. देखि हृदयपुलकात।
पै बियोग छिनहूं भए. बिरह जरावतगात॥

(मनोरमा आतीहै और वीरेन्द्र, बल्लरी की ओरसे मयंकमंजरी को देखता है)

मनोरमा-(मयंकमंजरी को गले लगाके) बेटा मयंकमंजरी! आज क्या है जो तुमलोग यहाँ इतनी राततांई डोलती फिरती हो? क्या आज "पार्वती परिणय" नाटक खेलनेका जी नहीं चाहता!

मयंकमंजरी-(माकागलाथामके) हाँ! मैया आज तीजहै सो अभीतक झूलाझूलती और गीतगातीरही इससे घुमड़ीआनेलगीथी, लेकिन अब हवामेंचलते२ यहांआईहूं. हाँ! माँठीकतोउसमें देखो कि ब्रह्मादि देवता और नारदादि ऋषिगनोंके भुलावा देनेपरभी पार्वती महाराणीने महादेवजीसेही व्याहकिया, सच है पतिव्रता जिसे प्रथमहीमन और प्रान समर्पण कर देती हैं उससे तोफिर कदापिनहीं हटतीं, यहीइसनाटकका मुख्य उद्देश्यहै. मा! तुमतो इसनाटकको खूबसराहोगी-

सौदामिनी-मा! क्या प्यारीकाकहीं व्याह न होगा? यहक्या कुमारीही रहेगी?

मयंकमंजरी-(स्वगत) भाई यहतो बड़ीकठिनहै. और मैं अबक्वारी कैसी? और फिर बिवाह कैसा? मैंतोईश्वरसे यहीप्रार्थना करतीहूं कि जन्म जन्मान्तर उन्हीके चरनोंकी दासीबनूं (प्रगट) नहीं मा! येदोनों हमपर कटाक्षकरके अपनेव्याह कीसुध तुमें दिलातीहैं, और अपने व्याहकेलिये व्याकुलहो रहीं हैं.

मनोरमा-(हँसके) अच्छा धीरजधरो, हमें सबकेमनकीबात मालूमहै सुदिन आनेसे जिसका जोप्रेमीहै उसकोउसीकेहाथसौंपूंगी

(सब लज्जितहो सिरनीचा करलेती हैं)

कामिनी-(बातउड़ानेके मिससे) अहा! कैसी इससमय सीतलहवा

चलरही है आली! फूलोंके सुगंधकेमारे सिरमेंपीड़ा होने लगी है—अरे! सखी वो देख (उंगली दिखाकर) क्याही जुगुनूकतारबांध सितारोंकीतरह चमकतेहुये आकाशमार्गमें उड़ेजाते हैं—

सौदामिनी—बरसातमें तो बगीचेहीमें बहारहै.

मयंकमंजरी—(हँसके) तोफिर तूयहीं न अपनाअड्डा बनाले.चलघर!!!

कामिनी—मैंतो अभी न चलूँगी—

मनोरमा—तुमसब एकहीसीहौ, रातदिन तुमसब भूलेहीपर रँगीरहो हौ, तबभी पेटनहीं भरता; चलो! (आगेआगे चलतीहै)

मयंकमंजरी—(धरिसौंदामिनीसे) सखीमुझे थामेंरहियो मेरीघुमरी अभीताईं नहींमिटी—

सौदामिनी—(मयंकमंजरीका हाथथाम धीरे) चुपचुपाती चलीचलो, इसप्रपंचसेतो कुछहोना नहीं है—

मयंकमंजरी—(धीरे) अरी क्याकरूं पांवतो उठेहीनहीं है (पीछे फिर फिरताकती है) हाय न जाने आज मुझसे क्योंनहीं चला जाता! (सांसलेती है)

मनोरमा—(पीछे देखके) क्यों पुत्री क्याभया? ऐं! तुम ऐसे क्यों चलोहो?

मयंकमंजरी—कुछनहीं माँ एककरीलकाकाँटा पैरमें गड़गयाहै—

कामिनी—(स्वगत) अरे! हृदयमें कहतीतो भला ठीकभीथा और सचभी होता (प्रगट धीरेसे) हां! हां!! इसीसे बिचारीके पैर आगेनहीं बढ़ते (हास्य)

मनोरमा—(पीछेफिरके) अरीआज तुमलोग यहींतो नहींरहोगी?

मयंकमंजरी—(शीघ्रतासे चलतीहुई) आई माँ! चलीहीतो आतीहूं.

वीरेन्द्र—(दीर्घनिश्वासलेकर) अरेमन जिसकी आसमें तू यहांअभी-तक गड़ारहा, अब वोतेरीआंखोंसे बाहरहुई, और अबआज उसदूजके चन्द्रका दरशन दुर्लभहै. हा! सुमंतदेव तुमेंक्या मेराप्रानहलेना अभीष्टहै? अच्छा! तोफिरकुछ चिन्तानहीं

(नेपथ्य से)

रे चाण्डालिनी कुलटा मैं देखतुझे कैसा दण्ड देताहूं तैंने, अरे ! दुश्चारिणी, मेरी छाती परसाँप पाला है ? (सब घबरा कर)

मनोरमा—बेटातुमारे पिता किसी पर क्रुद्ध भए हैं चलोघर.

(नेपथ्य में पदशब्द)

अरी ! मयंकमंजरी !! तू बिष होके मेरे यहां पैदा भई है ? रह व्यभिचारिणी ! तेराप्राण लेना मुझे क्या मुशकिल है . वीरेन्द्रबचा ! भले घर बायना दिया है अब तुम अपने परलोककी तयारी करो .

वीरेन्द्र—(स्वगत) "ऊषापरिणय" में बाणासुरने भी ऐसाही कहा था , पर अंतमें केवल सत्य—निष्कपट पवित्र प्रेमही की जयहुई, और पातिव्रत्यके माहात्म्य से पुराण सुशोभित हुये (नेपथ्यमें सुमन्तदेव कोलाहल करता है और भयसे सब दूसरी ओर से नेपथ्यमें चली जाती हैं)

इतिप्रथमांक॥

अथ द्वितीय अङ्क ॥

(स्थान मनोरमाका भव्य भवन)

(मनोरमा और उसकी सखी सुकेशी बैठी है)

सुकेशी–प्रियसखी! बिचारी निर्बोधबालिका पर मंत्रीजी इतने नाराज क्यों हैं ? कलसे मारेक्रोधके उनकी आँखें लाल क्यों हो रही हैं. व्यर्थही दूसरों पर गुस्सा निकालना –

मनोरमा–क्या कहैं, सखी व्यर्थही, कुछ कहते भी नहीं बनता . हैं तो ये मेरे देवोपम स्वामी परन्तु इनकी प्रकृति न जानें क्यों धर्म विमुख होरही है . हाय! उस भोली बालापर व्यर्थका कलंकारोपण कररहे हैं. जोउसने गांधर्ब रीतिसे राजकुमार का पाणिग्रहण करही लिया तो क्या यह पाप हुआ ? क्या यह सनातन धर्मके प्रतिकूल कर्म है ? और संबंध भी तो निंद्य नहीं भया ; सावित्री , तपती , आदि कितनी सती महिलागनोंने गांधर्व बिवाहही किया था .

सुकेशी–हां सखी अब जो होनाथा सो होचुका अब इसमें मनस्ताप से क्या फलमिलेगा .

मनोरमा–उनकी इच्छा कन्याके पुनर्विवाह की है. यदि कन्या न मानेगी तोवह उस्के प्राणनाशमें भी त्रुटि न करेंगे. (आंसूआगये)

सुकेशी–अरे पुनर्विवाह! रामरामराम! ऐसी सत्यानाशी व्यभिचारिणियोंकी सी रीतितो कभी भी नहीं सुनी थी. छिः छिः!! और प्राणनाश! हरे हरे!! हृदय विदीर्ण होगया. ठीकही है:–

(दोहा) कुटिलकालकलिकालसे . नष्टहोतशुभकर्म ।
पाखंडिनकेबादसों . घटै सनातन धर्म ॥

मनोरमा–परंतु सखी राजकाजमें रहकर सभीकी कुछ न कुछ मति

भ्रष्टहोयहीजाती है, तिसमेंतो यह सर्वोच्चप्रधान मंत्रीबरन दूसरे महाराजही हैं.

सुकेशी–ठीक है परंतु वहीराजकाजमें विघ्नहोगा जोधर्म भयसे नहीं डरता. ठीककहाहैः

(सवैया)–राजनके दरबारीसदा मतवारे दवा जगमें नहिं कोऊ।
ब्राह्मनते जहाँबारीबड़ो दरीएकपै ऊंच औ नीचकोदोऊ॥
ज्योंरदहाथिनकोदुइभाँतिको.त्योंबसुधा पतिकीमतिसोऊ।
नाहिंकिशोरिजूहै दरकोऊ. भयोकलिकाल महातमवोऊ॥

मनोरमा–चाहे कुछहो! परआजमें सविनय प्रार्थनायुक्त प्राणनाथसे इसका निर्णय करूंगी–

(नेपथ्यमें)–संसारमेंसभी स्त्रियाँ असतीहैं, और रंडातो हमारेजान सदासुहागिनहीं जान पड़ती हैं–हमाराघरतो राँडुसुकेशीने खाया. देखो! उसकी भी मैं कैसी दसा करती हूं. ,वाह बहुतही जांचके कहा है –

(कवित्त)–कोऊसेनडरे गुरुमूढ़चढ़ी कामकरे. लाजको जहाजहूड-बोरे जोमवंतीकी। नैनन नचावै मुसकावै यारको बुलावै. मालहू खिलावै खेलखावै छैलवंतीकी॥ भनत किशोरी भोरी एक जात नाहिंछोरी. पीसे मुख मोरी बुरी चाल चलवंतीकी। कुलकी कहावै लाजवंती बनिजावै.तऊ का-नकाटै छतीसी छिनार छलवंतीकी॥

औरभीः(कवित्त)–जरीदारसारीमें किनारीकामदारीटकी. चोली गु-जरातीमें दिखाती वेसछातीको।भनतकिशोरीअंग भूषन लजाती देख. आंखें मदमाती चले चाल ऐंठलातीको॥ जोबन जवानीसे सयानी बतलाती बात. भौंहन नचाती काम कसक जतातीको।माँ-गबिन सेंदुर सुहाती पानखाती खूब. कहिबे को राँड़ कानकाटै अहिवातीको॥

(दोनों कानलगाकर सुनके)

सुकेशी—बहिन सुना! यह हमारी वर्णना भई है. हाय! मैंने कौन ऐसा अपराध किया?

मनोरमा—बहिना! येसब मेरेभाग्यकादोष समझियो. और क्या, नजानें अभी क्या आगेहोना बाकी है.

(नेपथ्यमें पैरकी आहट)

सुकेशी—प्रियसखी! मैंहटजातीहूं (एकओरसे सुकेशी जाती है और दूसरी ओरसे सुमंतदेव आताहै और मनोरमा अभिवादन कर आसनपर बैठाती है)

सुमंतदेव—(निजभाव गोपनकरके) कहो! औरतो सबकुशलहै न? मयंकमंजरी प्रसन्नहै?

मनोरमा—महाराज! आपकी आरोग्यताही केवल हमलोगोंको मंगल और कुशल देनेवाली है (ठहरके) प्रानबल्लभ! समय न मिलने से एक जरूरी बात आपसे आजतक न कहसकी थी, यदि सावकाशहो तो आज्ञापानेसे निवेदनकरूं (पंखा झलती है)

सुमंतदेव—प्रथम इसके हम मयंकमंजरी के बिवाहके विषयमें तुमसे परामर्ष किया चाहते हैं.

मनोरमा—(उत्कंठासे-स्वगत) अहा! अच्छाभया कि इन्होंहीने प्रथम यहबात निकाली. वाह! अभीतक इन्होंने अपने मन का भाव जो छिपा रक्खाहै वो भी प्रगट होजायगा. (प्रगट) नाथ! यह आपने बहुतही उत्तम बिचाराहै, और कन्या भी अब सबलायक होचुकी. इसलिये मैं भी इसीबारेमें कहने को थी, सो आज आपके मनमें भी यह बात आगई, यह सोना और सुगन्ध हुआ.

सुमंतदेव—हाँ! सहधर्मिणी! देवेच्छा या काकतालीय न्यायसे समय पर बरभी बहुतही उपयुक्त मिलगयाहै, अबदेर करना ऐसे समय में व्यर्थ है :—

(दोहा) सदा न एकै भावमें. सुख दुख रहै सुदाम।

गयो समै आवे न फिर. हाथ लगे परिणाम ॥

मनोरमा–(स्वगत)! बर जैसा चाहिये सो तो मिलगया तो अब व्यर्थ पिष्टपेषणभर करनाहे .(प्रगट)स्वामिन् ! आपनेकिस भाग्यमान के गलेमें इस अमूल्यहारको पहिराना चाहाहै?

सुमंतदेव–(सस्मित) आजकल नवद्वीपके मंत्री कुमार यहाँ वायु-परिवर्तन के हेतु भाग्यों से आगए हैं .

मनोरमा–(स्वगत) हाय ! मेरे और मेरी पुत्री के अब करम फूट गए (घबराहटसे-प्रगट) क्या बसंतदेव ! अरे उन्हींको कन्या देनेकी इच्छाहै ? पर बिना बालिकासे, जो अब अबोध नहीं है, पूछे बिना योग्य नहीं कि बिवाहहो देखें! उसकी सम्मति इसमें क्याहै ?

सुमंतदेव–(गर्बसे) हमारी अकाट्य बातें स्वयंमहाराज तक शिरोधार्यहैं, फिर दूसरा संसारमें कौन ऐसाहै जो हमारे वचनों का खण्डनकरे .

मनोरमा–यह तो सही है, पर यदि आप बाल्य बिवाह करते तब आपको पूर्ण अधिकारथा कि उसे आप जिस किसीको चाहे, देते, और वह भी आगत्या समय पायके उसीको स्वीकार करती.पर आपने तो सनातन रीतिसे बाल बिवाह न करके अब बुद्धिमती बालिका के मनके विरुद्ध कैसे परिणय सुखद होगा ?

सुमंतदेव–स्त्रियोंको पुरुषसे अधिक ज्ञान नहीं होता, तिसमें भी हम से. और कहा भी हैः–

(कबित्त)जाने नहींकारज अकारजज्यों बालकत्यों ।
त्रिया नहिंजानै नीकीचालकी चलन को ॥

मनोरमा– लोभी नहींजानै पाप पुण्य के बिचारनको ।
क्रोधी नाहिं जानै आप क्रोध के समनको ॥

सुमंतदेव– धरि के कुसंगत सुसंगत न जानै नर ।
मूढ नहीं जानै गुरुदेव के नमन को ॥

मनोरमा-(हँसके)नास्तिकनजानै श्री किशोरी भगवंतजूको।
मूरख न जानै गुनी पण्डित श्रमन को॥

सुमंतदेव-हम स्त्रियोंको स्वतंत्रता पूरी देना पसन्द करते हैं पर अपने घरमें दमड़ीभर भी स्वतंत्रता नहीं दिया चाहते. मयंकमंजरी को स्वीकार करनाहोगा जो हम कहैं-

मनोरमा-(सविनय-धीरेसे) यह तो सही! पर कहना और करना हाथीके दोप्रकार के दाँतों के समान आपकाहै-पर वह तो पहिलेही एकसे....

(कहते कहते रुकजाती है)

सुमंतदेव-हैं! रुकक्योंगई ? क्या हमसे कुछ छिपाहै.उस कुलांगारी ने राजकुमारसे गांधर्बबिवाह कियाहै,पर मैंइसे बिनातोड़ न रहूंगा.और राजकुमारकोभी इसका समुचित दण्डमिलेगा.

मनोरमा-(मन्दहास्यसे) यह आपने कैसे जाना ? हाँ ! यदि सत्य भी यहहो तोपरम सौभाग्यकी बातहै (आश्चर्यसे)पर बिवाह बन्धन भी टूटताहै ? यह आज तो एक नईबातसुनी.

सुमंतदेव-तुम क्या जानो--हमारे शास्त्रोंमें कई तरहके बिवाह लिखेहैं . एकधनका, दूसरा प्रेमका, तीसरा अवधिका, चौथा कृतृम, और पाँचवाँ यथेच्छ बिवाह होता है पर ये पांचों इच्छापर निर्भरहैं . और इसके अतिरिक्त तो वेदमें ग्यारह पति तक करनेकी आज्ञा दीहै तब डर क्याहै ? (जोरदेकर) जिस दुष्टने घरमें घुसके सेंधमाराहै. उसे देवताकी नाईं पूजके अपना सर्वस्व कौन मूर्ख देगा ? प्रत्युत दण्डदेंगे.

मनोरमा-प्रथम तो सती साध्वी स्त्रियोंका बिवाह बन्धन आजन्म नहीं टूटता क्योंकिः-

"दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपिवा
पतिःस्त्रीभिर्न हातव्यो लोके प्सुभिरपातकी,,

दूसरे अरुचीके बिवाहमें, जब कि कन्या समर्थ होजाती है सुख कदापि नहीं मिलता -

(दोहा) मनके मिले मिलापहै बिन मनमिले प्रलाप।
चंद उदै बरसै सुधा सूरज से संताप ॥

और इसीलिए प्राचीन कालसे स्वयंबरकी स्वेच्छारीतिचली आती है जिसमें युवती कन्याके अरुचिकी संभावना न हो. रुक्मीने रुक्मिणीके बिरुद्ध बिवाहका आयोजनकर कैसा संकट पायाथा ? इसलिए सनातन धर्मके विरुद्ध चलना उचित और उत्तम नहीं:

सुमंतदेव-(स्वगत) यद्यपि स्त्रियोंको स्वतंत्रता देना हम चाहते हैं पर अपने घरमें नहीं, क्योंकि बिना दिये तो यह दशा है, स्वतंत्रता पानेपर न जाने ये क्या न करडालेंगी ? (प्रगट) अभी तुम इतनी नहीं हुई हो कि हमे सिखाओ. जो इतने बड़े राजका भार अपने हाथमें लिए कुलका कर्ता धर्ता बना है उसे स्त्रियाँ सिखाने बैठें, यह थोड़े दुःखकी बात नहीं है ? यद्यपि बालकोंपर पिता माताका स्वत्त्वहै पर उनके भले बुरेका अधिकार पिताहीको है.

मनोरमा-यह आप क्या कहरहे हैं ? मैं आपको कभी भी शिक्षानहीं देती क्योंकि आपहीने मुझे शिक्षा दिया है. किन्तु माता पिताका बराबर बालकोंपर अधिकारहै यह आपने न्यायसे कहा, और बालकोंके बुरे भलेका भी अधिकार पिता माता को बराबरही है. बस्तुतः यदि माता मन न दे तो बालकों की जड़ ऐसी बिगड़ जाय कि फिर किसीके सुधारे आजन्मन सुधरे; और कन्या ससुरालमें जाकर अपने माताकी नाम हँसाई करावे. परंतु अब दोबातें हैं, यातो बालकोंपर माता पिताका समान आधिपत्य मानिये, या उत्पत्तिके गुणसे पुत्र पर पिताका और कन्यापर माताका.

सुमंतदेव-(स्वगत) हाय ! स्त्री शिक्षापर बड़ी २ वक्तृता देकर मैंने यही फल पाया, अब प्राचनि कालकी "गार्गी" और "गौतमी" तककी शिक्षा मैं नापसंद करताहूं (प्रकट घबराकर) हम

यह सब नहीं सुना चाहते प्रत्युत जिसे हम कन्यादेंगे,कन्या को भी आगत्या उसीको स्वीकार करना पड़ेगा –

मनोरमा–(क्षोभसे) यह तो आपका निराहठ और पक्षपातहै. भला पहिले तोयहकिसीरीतिसे होभीसकता परअब विवाहबंधन आपतोड़ना चाहतेहैं यहबड़ाही जघन्यकार्यहै(ठहरकर)स्मर्ण कीजिये–आपहीने न मयंकमंजरी और वीरेन्द्रका परस्पर प्रणयबंधन करना चाहाथा ? यदिआपके आंतरिक भावको कन्यानेजानके जोवीरेन्द्रकोमन प्राणसमर्पनकिया तो इसमें आपहीकी आज्ञा पालनहुई. अबक्या है जो उसके बिरुद्ध ऐसाकाम आप कियाचाहतेहैं, और आपहीने एकबारकहाथा कि शास्त्रयों पुकार रहाहैः–

काममाभरणात्तिष्ठे त्कुभार्य्यर्त्तुमतीसती।
नचैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्॥

सुमंतदेव–इससे क्या प्रथमकभी कहाहोगा ? पर अबतो नहींकहता कि वीरेन्द्रसे संबंधहो. अबतुम अपनी मीठीबातें और शास्त्रीयवचन रहनेदो हमनेभी सकलशास्त्र बूकडालाहै.सच किसीने कहाहैः–

(दोहा) मधुमद मोदक सरसरस. ऊख पियूष मिठास।
अहो अधरहूते मधुर.युवतिन वचन बिलास॥
इसलिये अबतुम व्यर्थकीबातें न करो.

मनोरमा–(विनीतभावसे) क्या महाराज ! अरे यहसब अनर्थकी बातें आपको शोभती हैं ? वीरेन्द्रकी क्या. वीरेन्द्रके भृत्यकी सीसमता बसंतदेव नहींकरसकता, क्याआपभूलगए.पांचालसिनासे बसंतदेव अपनीभीरुतावस,रनबिमुख नहींहुआ? ऐसेभीरुको आप पसंदकरते हैं ?

सुमंतदेव–हमने कहान,कितुम इसविषयमें अधिक बिवाद मतकरो;

मनोरमा–(रुष्टभावसे) तबआपने मुझसे परामर्ष क्योंकिया ? हाय ! आज आप पुत्रीका पुनर्बिवाह करतेहैं कलको मुझेभीछोड़

दीजियेगा (आंसूगिरपड़े)

सुमंतदेव–लो!हमने तुमसे सलाह करके झखमारा,हाँजब तुम्हारी इच्छाहो दूसरा ब्याहकरो वेदआज्ञादेताहै कि ग्यारहतक कोई चिन्ता नहीं है-

(मनोरमाकराघात करके रोती है)

(नेपथ्यमें)

(कवित्त) केतिकउपायनरकरैधायधायतऊ. जाकेजाहिकरमलिख्यो है सोई पायहै । दानदयाधरमकरम चित्तधोयपीयो.पापमें रहतरत अधिक भुलायहै ॥ आजजोईकरै काल फलहूमिलेपैअंध. खबरकरैनहींकेकालकबखायहै । दुनिया अजबअलबेलीये सरायचाय. कहींखुसीहोय कहींहोय हायहायहै ॥

(दोनोंसुनतेहैं)

मनोरमा–अहा! यह किसने अमृत बर्साया ?

सुमंतदेव–योंही "मुखमस्तीतिवक्तव्यं दशहस्ताहरीतकी" भलातो तुमक्याकहतीहो ?

मनोरमा–मैं भलाक्याकहूंगी, पर जो उचितहो कीजिये जिसमें परिणामबुरा न निकले और उसबिनीत बालिकाकी व्यर्थ मृत्युनहो, आपका धर्म और यशबनारहेवही कीजिये. (चरणधरके) नाथ ! जैसे वसिष्ठऋषिकी स्तुतिसे प्रसन्नहोकर भगवान् भास्करनेसस्नेह "तपती" को "संवरण" केकरमेंसमर्पन कियाथा. और पुत्रीने स्वयंबर कियाहै यहजानहर्ष प्रकाशकियाथा इसीप्रकार आपभी मेरेऊपर दयाकर सहर्ष वीरेन्द्रके हाथमें मयंकमंजरी देकर संसारमें धर्मके स्तंभबनिये; क्योंकि मयंकमंजरीके योग्य अब दूसरा बरहै नहीं यदिकदाचितहोभी, तथापि अबप्रानरहते पुनर्बिवाहकी सम्मति मैं नदूंगी. और मैं देखतीहूं कि कन्याभी जीतेजी न बिवाह करेगी. देखिये पुरोहितजीसे मैंने सुनाहैः–

"जातिविद्यावयःशील मारोग्यंबहुपक्षता

अर्थित्वांवित्तसम्पात्ति रष्टावेतेवरेगुणाः"
तबसजातीयत्वको छोड़के और कोई गुण बसंतमें स्वप्नमें भी ढूढनेसे नहीं मिलेंगे. पहिले तो देखिये सूरतही भरभूँजे कीसी सोहाती है परंतु इस सब सद्गुणों के अधिकारी वीरेन्द्रही हैं. और कन्याभी सीताकी तरह इनके गुणों की पक्षपातिनी है.

सुमंतदेव-(रुष्टहोकर) तुम मेरे शत्रुकी क्यों इतनी प्रशंसा मेरेही सन्मुख कर रहीहो जानती नहीं कि हमारा क्रोध शिवकी भांति कामी वीरेन्द्र को क्षणभरहीमें दग्धकरेगा.

मनोरमा-महाराज क्या कारण है जो अब राजकुमार बिषसे दीखते हैं, जिन्हों ने अकेलेही सौराष्ट्र सेनाको अपनी थोड़ीही अवस्थामें भगायाथा और सिंधको जीतके अपना वीरेन्द्र नाम सचकरदिखाया, और जो सनमुख शिकार शेरका करते हैं. और वे भावी सम्राट भी है. उन्हीं से बैरकरके आप अच्छा फल पासकेंगे? उनके विरुद्ध हमलोगोंकी क्या दशा होगी ?-

सुमंतदेव (झिझककर) तुमइसकासोच न करो, वीरेन्द्रका बंदोबस्त मैंकरचुकाहूं और हमारी आँखोंसे देखोतो बसंतदेवमें संसारके सबउत्तमोत्तम गुणहैं.

मनोरमा-जीवनधन ! आपका किधरध्यान है ? रणभीरुतासे बढ़के क्षत्रियोंकेलिये दूसरालज्जाका घृणित महापाप नहीं है.बीर नारी अपने पतिको रणसे भागनेके बदले वहीं प्राणतक देनेका परामर्षदेती है.

सुमंतदेव-(रोकके) जैसे इससमयतुम हमारेप्रानोंकी गाहकबनीहो.

मनोरमा-छिः ! छिः !! राम ! राम !! हेनाथ ! ऐसीसमझ !!!

सुमंतदेव-और क्यातुम शूरताके नाम रोरहीहो, पर शूरकोतो कन्या न देना चाहिये देखो शास्त्रका वचनहैः-

"दूरस्थाना मविद्यानां मोक्षधर्मानु वर्तिनाम्।

शूराणां निर्धनानांच न देया कन्यका बुधैः" (हँसता है)

मनोरमा–वाहवाह ! बुद्धिअगम्य और अक्षर कामधेनुहै, जिसका जो जी चाहे अर्थ अनर्थकरे; परंतु अर्थवही ठीकहोताहै जो ग्रंथ-कर्ताके आशयके अनुसारहो. देखिए ! इससेतो बसंतदेवही को कन्या न देनी चाहिये, क्योंकि वहीदूर रहताहै मूर्ख है. और वीरेन्द्र राजकुमार और वह एकमंत्रीका पुत्रहै. इससे धनमेंभी समता नहींहै. और शूरसे इसश्लोकमें केवल सदा पूर्णरण प्रियका ग्रहणहै. नाथ ! इसश्लोकका आप अर्थ अपनी इच्छानुसार करते हैं, परगूढ तात्पर्यवहीहै जो मैंनेकहा. देखिये अभीआपने वीरेन्द्रका मानव दुर्लभ गुण नहीं जाना है.

(दोहा) रनमें शूर विवेकमें पूर नीति में चूर।
भागनसों बिरले मिलें रस सिंगारकी मूर॥

सुमंतदेव–देखो ! तुम अब बहुत बोलने लगीं. सभोंने जो ग्रंथादि कहे वो अपनी इच्छानुसार तो यदि हममें बुद्धि है तो हम भी अपनी इच्छानुसार सब करेंगे, हाँ यदि माननेका जी चाहेगा तो केवल वेदका मंत्र भागभर कभी २ मानेंगे नहीं तो इतर सब मनुष्य बुद्धि रचित ग्रंथोंको हम नहीं मानते.

मनोरमा–(स्वगत) हाय राम इनकी ऐसी मति किस सत्यानाशी ने बनादी है, न जानें इन बातोंका क्या परिणाम होगा ? (दीर्घ निश्वास त्याग) (प्रगट) तो अब मयंकमंजरी दूसरा बिवाह न करेगी, क्योंकि उसने शास्त्रानुसार स्वयम्बर कियाहैः–

त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्य्यर्तु मतीसती।
ऊर्ध्वंतु कालादेतस्मान्विन्देत सदृशंपतिं॥

हाँ ! यदि इसके पहिले आपकन्याको जिसेदेते अनिच्छासे भी वो उसे स्वीकार अवश्यकरती किन्तुआपहीके इधरध्यान नदेनेसे उसने इसअवस्थाको पायके इच्छितबर लाभकिया

तो अब इसमें क्या होसकता है ? क्यों ? कहिए ये बातें ठीक हैं या नहीं ?

सुमंत.–(झुझलाके) तुमसे कौन व्यर्थमाथा खाली करै. यह सब प्रपंच हम नहीं मानते (स्वगत) हाय ! स्त्रियोंके आदर करने से ऐसीही दुर्दशा होती है. बात बातमें ये पतिका निरादर करती और सिर चढ़जाती हैं हा ! हमने जान बूझकर आपहीसे काठमें पाँवदियाः–

(दोहा) पहिले तो सोचे नहीं. पीछे हा हा खाय।
दबेकंजके पातमें. मधुकर प्रान नसाय॥ (मुखफेरलेताहै)

(दासीका प्रवेश) नाथका कल्याणहो. शिशुपाल द्वारपर खड़ाहै. जैसी मरजी–

सुमंतदेव–आनेदे· (सलिखाका प्रस्थान) (स्वगत) इस समय क्या है जो हमारा चर आयाहै–अस्तु जो हो देखा जायगा. (शिशुपाल प्रवेश करके प्रणामकर और हाथमें एक पत्र देके) नाथकी जयहो ! इन्द्रायुध आपके दर्शनको आयाहै–

सुमंतदेव–(त्वरासे) हाँ ! हाँ !! अभी यहीं बुलाओ . (गया)

मनोरमा–तो मैं इस समय जातीहूं.

सुमंतदेव–क्यों ? क्यों जातीहो. स्त्रियोंको परदा करना कदापि उचित नहीं है–हमारे राजमें अब कोई स्त्री पिंजरेमें बंदनहीं रहसकेगी.

मनोरमा–(उदासीनहो) अब जो न होय वही थोड़ाहै (स्वगत) न जाने इनकी मति ऐसी चंचल क्यों होरही है. कभी कुछ और कभी कुछ. हाय ! इस चांडाल इन्द्रायुधनेही इनका सत्यानाश किया है. (चलीजाती है और सुमंतदेवके पुकारनेपर भी नहीं ठहरती–और सहसा इन्द्रायुधका प्रवेश)

इन्द्रायुध–(चरणछूकर) महाशय ! दासने आपके सन्मुख पत्र भेजाथा किन्तु चित्तके धीर न धरनेसे आपही आके दरशनको उपस्थितहुआ. महाराज ! आज रात्रिके समयही मैंने वी-

रेन्द्रके बध करनेका विचार कियाहै. अहा! आपके शरनमें रहकर यह शरीर स्वामीके कामआवै यही.बड़ेभाग्यकीबातहै.

सुमंतदेव–(स्वर्णांगुरीदेके. सहर्ष) वाह वाह! भाई इन्द्रायुध तुम बड़े वीरहो हाँ! यदि यह काम तुमसे होजायगा तो एक गाँव तुमें पारितोषिकमें मिलेगा.

इन्द्रायुध–नाथ सब आपकी दया है और यह देह भी तो आपहीकी पाली है. अच्छा अब इस पत्रकी कोई आवश्यकता नहीं. इसे फाड़डालियेगा. औरदेखिये कहीं यह बात फैले नहीं नहीं तो मेरे प्रान नहीं बचेंगे.

सुमंतदेव–भाई इससे तुम निश्चिन्त रहो. और बात फैलनेमें क्या मुझे डर नहीं है–

इन्द्रायुध–तो अब आज्ञा होय.

सुमंतदेव–अच्छा! देखो!! खबरदार!!! बुद्धिमानीसे काम करना. वीरेन्द्र सामान्य नहीं है॥

इन्द्रायुध–ऐसाही होगा–(स्वगत) ससुर! क्या तुम भी मेरे हाथों से बचसकोगे? तुमें भी यहीं ठिकाने लगाके मयंकमंजरी से भोगविलास करूंगा. (गया)

सुमंतदेव–अहा! अब वीरेन्द्रका डर नहीं-निश्चयहै कि महाराज राजकुमारकी मृत्यु सुनके प्राणत्यागदेंगे. तब हमारे सिवा कौन यह सिंहासन लेसकताहै?(सुमंतदेव इन्द्रायुधका पत्र खोलके पढ़ता है और सुकेशी आड़मेंसे निकलकर पत्र इनके हाथसे झटककर हवा ऐसी भागजाती है और सुमंतदेव उसे न चीन्हकर इति कर्तव्य विमूढ़हो अचेतप्राय होता है) हाय यह क्या भया! यह कौन थी अरे प्रानगया मरे २ हे राम! अब इस समय तुमी बचाओ. नाथ! तुमारी अवज्ञा का यह फल भया (रोते रोते) हाय! इस रांड़ मनोरमा का मुख देखके आज उठाथा, इसीसे यह दुर्घनाभई. अरे अबकीबार जो मेराप्रान कहीं बचगया तो

इस चांडालिनी को नासकरके सुकेशी को अपनी प्रणयिनी बनाऊंगा हाय ! बाल बिधवाहोने परभी राड़ सुकेशी किसीतरह हमसे राजी नहींहोती . कितना प्रलोभनभीदेतेहैं. शास्त्रसे बिधवाबिवाहसिद्धभी करतेहैं किन्तु वह ज़रा भ्रूक्षेपभी नहीं करती (ठहरके) इन्द्रायुधने कहा है कि मैं इसको आपसे मिलादूंगा परयदिवोनभी लावेगा तो हमजैसे होगा सुकेशी पर बलप्रकाशकरेंगे. हाय ! सुकेशी ब्राह्मणकन्या है सही. ओः इससे क्या जातितो कर्म सेही होतीहै. उसकेलिए हमभी ब्राह्मण बनजायँगे क्योंकिः—

" शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैव शूद्रताम्,,

(द्वारपाल आताहै)

रैवतक— नाथकी जयहो ! श्रीबसंतदेववर्म्मा आपके दरशनको आए हैं जो आज्ञा ॥

सुमंतदेव—(आत्मसंयमकरके)उन्हेंयथोचितआसनदो हमअभीआए॥

(रैवतकका प्रस्थान) और (मनोरमाआतीहै)

मनोरमा – क्या आपने सबतरह यही स्थिर किया कि मयंकमंजरी का दूसराबिवाह होय ? हाय ! बसंतदेवका बिवाहजिसस्त्री से भया उसकी कैसी दुर्दशा वह करता है. उसी के हाथ जानबूझके कन्यादेना कसाईको गौ देना है ॥

सुमंतदेव--(क्रोधसे) चुपरह ! अधिकबातें अबहमेंसह्य नहीं हैं.

(नेपथ्यमें)

अरीसखी दौड़ियो २ मयंकमंजरी अचेतहोकर गिरपड़ी है. हाय ! २ सिरमें ऐसी चोटआई कि खूनबंदही नहीं होता (रोनेके स्वरसे) हायदई ! अरेप्यारी चेतक्यों नहींकरती. दौड़ो २ जललाओ. अरीकामिनी दौरोजल्दी. ॥

(दोनों सुनतेहैं)

मनोरमा—हाय २ यह क्या भया (शीघ्रतासे दौड़ीजाती है) —

सुमंतदेव—चलोजी ! यह सब स्त्रियोंका परवंड है—

(दोहा) त्रिया चरित के चौक में ज्ञानीहूं भरमाय।
देवन जाकी थाहलैं भूल भूल सदुपाय॥ (गया)

(सुमंतदेवका मुख्य मन्दिर)

(सुमंतदेव प्रवेश करताहै और सबहटके यथायोग्य अभिवादन करते हैं)

सुमंतदेव–(सर्वोच्चआसन पर बैठके बसंतको अपने समीप बैठाता और बसंत के पार्श्व में दुर्जनबन्धु बैठता है) आत्मीयजन! (इतरलोगोंसे) इस समय इनसे (बसंत॰को दिखाकर) कुछ परामर्ष करनाहै इसलिये आप लोग–(रुकजाता है और सबलोग अभिवादनकर बिदा होते हैं)

सुमंतदेव–(बसंत॰सेहँसके) आपकेदर्शनकी बहुतदिनोंसेइच्छाथी सो आजआपने इसस्थानकोपवित्रकरके हमेंआह्लादितकिया.

बसंतदेव–(नम्रतासे) प्रभुवर! यह आपकी केवल असीम कृपा और विशुद्ध प्रेमका फलहै मैं कदापि इस सम्मानके योग्य नहीं हूं किन्तु यह सर्बथा सत्य है के आज आपने मुझे स्मरण करके अत्यन्त कृतार्थ किया–

सुमंतदेव–(सहर्ष) इसीसे आप सज्जनों के मध्य प्रसिद्धहैं क्योंकिः–

(दोहा) देखि कमल सूरज कुमुद चंदहिं देखि बिकास।
कमलानन प्रियके लखे मम मन अधिक हुलास॥

बसंतदेव–(सिरनीचाकर नम्रतासे) आप मुझे क्यों कांटोंमें घसीटते हैं. मैं तो कदापि इतनी प्रशंसा और आदरका पात्र नहींहूं केवल आपसे सदा यही आशा रखताहूं किः–

(दोहा) प्रीति रीति नव नीति रस सदा रहै हम हेत।
यहि चाहत चित में रहैं गुरुजन चरन निकेत॥

सुमं॰–यही सुजनता तो आपकी भूषण है. प्रिय आपके अनन्त गुणोंके निकट हमारा सनमान कुछ भी नहीं है. (ठहरके) हाँ! और देशमें तो सम्पूर्ण कुशलहै न? मंत्री महाशय सुप्रसन्नहैं? और आपका यहाँ कब और क्यों आना हुआ?

बसंत०-आपके आशीर्बादसे सभी आनन्द है. इधर थोड़े दिनों से चित्तकी अस्वस्थताके कारण भ्रमण करता२ यहाँ भी आगया (दुर्जनबंधुकी ओर देखके) यह मेरे परम अभिन्नहृदय मित्र हैं.

सुमंत०-हाँ! हाँ!! सचहै इसमें संदेह क्या? जैसे आप वसुंधरा के रत्न हैं वैसे आप के साथी क्यों नहीं सर्वगुणों से अलंकृत होंगे. (दुर्लभबंधुसे) आपका सर्वांगीण मंगल?

दुर्जनबंधु-(विनीत भावसे) महोदय!-

(सवैया) इत आपके छेमसों छेमसबै नित आपकीछेम मनायोकरैं।
धन धर्म दया सुत साहस वीरता की बढ़वार गनायोकरैं॥
निसिबासरहीनहिं भूलियेजू विनती जुगपानि सुनायोकरैं।
अपरंच वियोग मिटावनको जस रावरेही को बनायोंकरैं॥

सुमंतदेव-वाह! वाह!! आप तो एक उत्तम कवियों में हैं.

दुर्जनबंधु--मैं आपका क्रीतदासहूं. (मनमें) जमाई हूं.

सुमंतदेव--(बसंतदेवसे) अकारण आपके मुखपर उदासीके चिन्ह क्यों दीख पड़तेहैं? (बसंत नीचासिर करलेताहै)

दुर्जनबंधु--महोदय! आप तो सर्बज्ञहैं बिशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं केवल यही किः-

(दोहा) निशा बिना शशधर दिवा रहे प्रभा बिन हीन।
कौने बिनाहुलास के निधि पाये सुख कीन॥

औरभी प्रभोः देह धारण तो केवल आशाहीपर हैः-

(दोहा) खिलै न कंज पतंगबिन शशिबिन कुमुद बिकास।
चातक चतुर जिए समा स्वाति बूंदकी भास॥

सुमंतदेव-(स्वगत) ऐं क्या! मनोरमाका कथन सत्य तो नहींहै? अर्थात् इनकी बातोंसे यहीध्वनि निकलतीहै कि जिस सुन्दरी केसंग इनका विवाह हुआहै वो इनकीरुचिके विरुद्धहै, यही इनके भ्रमणका वृत्तान्त होगा तो क्या इससे मयंकमंजरी के बिवाहके अनन्तर भी अरुची राक्षसीका प्रादुर्भाव होगा?

(सोचके) नहीं नहीं! ये सब मंद बिचार हैं (ठहरके) ओहो! जो हम बिचारतेथे वही भया, जो हमें संदेहथा वह दूरहुआ. सचहै भाग्यसे अनहोनी भी होजाती हैः–

(दोहा) सोनामाहिं सुगन्धफल.ऊखमाहिं दरसात।
भाग सुधाकरके उदै. फूलहि चन्दन गात॥

(प्रगट)हमने जिसलिए आज आपको परिश्रम दिया इसमें एकहेतु है.

बसंतदेव–बिना आपकी आज्ञापालन किये कैसे मैं अपने तईं कृतार्थ मानूंगा?

सुमंतदेव–हमारी इच्छा यह है कि आपके इसउदासीकी नासी ऐसी खासी अमृत की रासी औषधिदें कि यह आपका मानसिक रोग सदाके लिये लीन होजाय.

बसंतदेव–(स्वगत) अहा! यह कैसा चमत्कारहै कि जिसे मैं विषधर काआगार समझताथा आज वहस्वयंगलेकाहार बनाचाहता है. इसमें क्याकारण? यह क्योंकर ऐसाहुआ? क्यों आज ऐसी उलटी बात हुई?

(दोहा) चाह निबाह कराइके दीपक जरै पतंग।
तबौं न इते निहारिकहुं. लखै प्रीतकेसंग॥

वाह! क्या भावी भी प्रबल होती है–

(दोहा) चन्द चाहि देखे कुमुद कमल न छाँड़त भृंग।
हाथलगे का कामके. व्योम फूल शश शृंग॥

(प्रगट) महाराज! मैं आपकी गम्भीर बातें नहीं समझसका? प्रत्युत मेरीप्रसन्नताका कौन सदुपाय सोचागयाहै?

सुमंतदेव–हम अपनी एकमात्र हृदय सर्वस्व प्रेमप्रतिमाको आपके करमें समर्पण किया चाहते हैं. इसमें आपका क्या विचारहै?

(बसंतदेव लज्जित हो शिर नीचा करलेता है)

दुर्जनबंधु–(सुमंतदेवसे) प्रभुवर! आपही से संसारका महोपकार होताहै. यद्यपि पृथ्वी आतपसे अतिशय संतप्तहो. बिकल होतीहै परंतु याञ्चा नहीं करती. तौभी परोपकारी वारिवाहक

सबप्रकार से समयपर उसकी इच्छा पूरीकरदेताहै. भला प्रत्युपकार में अनुमतिका क्या पूछना है? क्योंकि घरमें आई हुई लक्ष्मीको किसनेफेरा है? (मनमें) वाहरे दुर्जनबन्धु! तुम्हारे बिना किसकी सामर्थ्य है कि कोमल स्वर्गीय सुधा-रसको पानकरसके? यह सब हमारेही भाग्यकी महिमा है.

सुमंतदेव—(सहर्ष—बसंतदेवसे) क्यों आप चुप क्यों होगए?

वसंतदेव—(धीमेस्वरसे) कृपासिंधोः! आपकीआज्ञासर्वथा शिरोधार्यहै

सुमं०—तो कल प्रातःकाल कन्याकेसंग आपको नवद्वीप बिदाकरेंगे और पीछेसे हमभी वहींआकर बिवाहविधि संपन्नकरदेंगे

वसंतदेव—महाराज इतनी जल्दी क्यों?

सुमं०—भैया! इसमें कई एक विशेष कारणहैं.

दुर्जनबंधु—(स्वगत) हम उनसभोंका अत्यंताभाव करदेंगे—

वसंतदेव—(स्वगत) ऐं! यहक्या!! अबमुझे इसविषयमें कई २ संदेहहोनेलगे प्रथमतोइन्होंने स्वयंहमसे कन्याग्रहण करनेकीप्रार्थ-नाकी—जोसर्वथाअनुचितहै. द्वितीय—हमनेसुनाहै कि उसने राजकुमार वरिन्द्रसे गांधर्वविवाह कियाहै. तबफिर बिवाह कैसा? क्या पुनर्विवाह तो नहीं करेंगे? अगर वोकरें. पर हमकब करनेलगे. तीसरे. यह कि कलही यहांसे भागना, सो क्यों? (सोचके) क्याकन्यामें कोईदोष तो नहीं है? कुछ समझमें नहींआता कि क्याबातहै? (सोचकर) हाय! हृदय विदीर्ण होताहै कि जिस कन्यासे कलमैंने बलपूर्वक बिवाह कियाथा, उसनेतोमुझेछोड़ अपने पहिलेप्रेमीसे जोड़मिला लिया, तो क्या इसकी बालिकाभी वीरेन्द्रका प्रणयछोड़के कबहमें चाहेगी? और फिर यहक्या? क्या इनके कुल में कोई दागतो नहींहै, जो इसप्रकार अपनी कन्याको गले मढ़रहे हैं. ओहो! अरे ऐसे रत्नको तो लोगोंने प्रानदेनेपर भी नहीं पायाहै, सो आजवह यों कीचमें क्यों फेंकाजाता है. कुछकारण नहीं विदितहोता (धीरे दुर्जनबंधुसे) कहो

जी ? अब इसमें क्याकर्त्तव्यहै मित्र ? बातेंतो बड़ी पेंचदार मालूम पड़ती हैं—

दुर्जनबंधु—(धीरेसे) कुछनहींहै. अरे इसका आशय हमतुमें पीछे समझायदेंगे. अब इससमय जोयह कहतेहैं उसे मुक्तकंठसे स्विकार करलो.

वसंतदेव—(धीरेसे) अच्छा (प्रगट सुमंतदेवसे) महामान्य ? आपकी सबबातें मुझे स्विकारहैं. किन्तु (ठहरकर) कन्याको आप अपनेहीसाथ लिएआवेंतो उत्तमहोता--

सुमंतदेव—(सोचकर) इसमें आपको कुछ करनानहीं पड़ेगा क्योंकि कन्याके यात्राका संपूर्ण आयोजन हमकरदेंगे केवलआपभी दूरसे साथहीसाथ रखवालीकीतरह चले जाइएगा और हमारे पीछे आनेका यहकारणहै कि हम यहांसबसे प्रकाश करजायँगे कि कन्याका विवाहतोकरदिया अबउसेबिदाकरानेजाते हैं” इत्यादि--

बसंतदेव—(घबराके) यहसबतो बड़े फेरफारकी बातें दीखपड़ती हैं.

दुर्जनबंधु (बातटालके) नहीं ! नहीं !! कहाँखेयालहै, कोई फेरकी बात नहीं है--

सुमंतदेव—आपकुछ फिक्रमतकरें. मुख्यबात यहहै कि हमारे राजकुमार हमारीकन्यासे विवाहकरना चाहतेहैं परहमें यहबड़ोंके संग संबन्धकरना शोभानहींदेता.

दुर्जनबंधु—(स्वगत) यदितुमें यहकहीं स्विकार होता तो दुर्जनबंधुका काम कैसे चलता, वाहरे ! बचा ! ब्याही बालाको कुमारी बतलाताहै, अधम कहाँका.

बसंतदेव—हाय इसप्रपंची बुड्ढेने कैसी बेंड़ीमाया फैलाईहै. इसकी बुद्धि सठिआयतो नहींगई, क्या ? साक्षात् राजकुमारको कन्यानदेकर मुझसे अकिंचनको स्वयंआग्रह करके अपना भाग्य समझताहै, भगवन् तुमीजानो (धीरे दु०ब०से) मित्र ! अबक्या करना चाहिये ?

दुर्जनबंधु–(समझाकर) जोयेकहरहेहैं सोईकरो. हमपीछेसमझादेंगे.
सुमंतदेव–(आग्रहसे) कहिएतो अब स्थिर भयान? हमतयारीकरैं?
बसंतदेव–जैसीआपकीइच्छा, मैंप्रस्तुतहूं. किन्तु यदिराजकुमार कुछ उपद्रव मचावें, जैसा रुक्मिणीके हेतु श्रीकृष्णने कियाथा, तब क्याहोगा?
दुर्जनबंधु–(समझाके) अह्! हम पुरानीबातें नहीं मानते, अरे कल सब बखेड़ा मिटजायगा, जोपीछे जानपड़ेगा (सुमंतदेवसे) प्रभोः आपसब तयारीकरैं. हमलोग सब आपकी आज्ञानुसार सन्नद्धहैं–
सुमंतदेव–सब ठीकसमझिए (ठहरकर) हाँ! यदि श्रमनहीं होतो ज़राभृत्यके आनेतक ठहरिये, वह पानलानेगयाहै और हमें अनुमतिदीजियेतोघरमेंजाकरसबसाहित्यएकत्रकरठीककरें.
बसंतदेव–जीहाँ आप निस्संदेह पधारिये, कोई संकोचकीबातनहीं है. यहतोमेराघरहै. परन्तु आज्ञाहोतोपानखाकरहमलोगभीजायँ?
सुमंतदेव–सोकैसे कहें. अहा! आपकी सुजनताने तो हमेंमोहलिया (जाताहै)
बसंतदेव–क्योंमित्र? तुम क्यासमझके इसबुड्ढेकी बातोंका बिश्वास करतेहो? हमेंतो अभीतक इसकी फेरफारकीबातें समझमें नहींआईं. और संदेहभी नहीं मिटा--
दुर्जनबंधु–(स्वगत) वाहरे बसंत, तूतो निरा अपने नामानुसारही बसंतहै पर जबतक कुछतुझे भुलावा न दूंगा तबतक तूमेरे हथकंडेपर न चढ़ेगा. देखोबचा कैसाधोखा देताहूं. (प्रगट) मित्र संदेह कुछभी नहींहै. हमीने तुमारेपीछे तुमारी बड़ी प्रशंसाकरके इसे इतनामोहाथा कि जिसका परिणाम यह हुआ कि आज इसने हमारेही कथनानुसार तुमारी इतनी अभ्यर्थनाकी. अरे यार! वहबालिका मानुषी नहीं बरन साक्षात् लक्ष्मी है. और इससमय तुम अपनाभाग्य मनाओ कि ऐसी शाहजादीहाथ लगती है. अधिकक्याकहें:–

(सवैया) चाँदलुकात निहारतगात. करैरसबात लखैं भरिनैना।
रूपनिहारि बिसारि सबै सुधि. त्यौंअधरामृतसेसुनिबैना॥
भाग किशोरीको है जगबीच. सदालिये रातिदिना करैचैना।
सानभरी सहजादी समान-सुजान जवान जहाँनमें हैना॥

बसंतदेव (आश्चर्य से) ऐं! क्या कहा? अरे यहक्या तुमसचसचही कहते हो?

दुर्जनबंधु--(स्वगत) बस अबक्याहै अबतो मंत्र चलगया. अब केवल इसका फलतो हमी को मिलेगा भला अब यहपशु हमारे फंदेमेंसे कब निकल सकताहै? (प्रगट) मित्र! बस इतनाहीं सुनके घबरागए, जिसका मैंने वर्णन किया उसके आगे तो हमारी कबिता बिलकुल फीकी है. भाई! संसार के सब चित्रकारहारगए. पर उसबालाकी छबिके लावण्यताकी एक अंश छबिभी न उतारसके अहा!:—

(कबित्त) अंगकी निकाईसे सफाई अधिकाई चाँद. देखत लुभाई सोभा सहज बनाई है। आइ आइ देखत लजाइजात जोम भरे. मनमें सवाई अभिलाषदरसाई है॥ पाई है परमसुख अंगमें लगाइ आई. श्रीकिशोरि सूरत सुहावनीबनाई है। विधिने सहज सुघराई दरसाई. सुंदराईलै जहानकीजवानी मदछाई है॥

बसंतदेव—(उत्कंठासे) तुमने यहकैसेजाना मित्र! क्या वह ठीक २ अत्यंतही सुंदरी है?

दुर्जनबंधु—(स्वगत) बचाजीकी लारटपकपड़ी न! (प्रगट) लोग विना देखेभी चन्द्रमा की प्रशंसा करते हैं, तिसमें यह तो निः कलंक सदापूर्ण मयंकमंजरीही है

(कवित्त) धानी सारी सींकसे लचकदार अंगबीच. कंचुकी कसीली स्वेत कामके नगारेमें। छोटे करबीच साजे सकलसिंगारनकों. चंदज्ञाको अंगदेख छीजभयो तारेमें॥ मदनकिशोरी मदमस्तकी मजेकी चाल. अँखियाँ रसीली तीखी सहज

सुधारे में ॥ प्यारी शाहजादीके समान ये जहाँनबीच.और नहीं आज जगछानके निहारे में ॥

बसंतदेव–किन्तु मित्र ! चन्द्रमा तो कलंकी है न ?

दुर्जनबंधु–हाँ ! पर सुधाकरभी तो है ?

बसंतदेव–(आक्षेपसे) जो जिसे जब जिस दृष्टिसे देखे.

दुर्जनबंधु–(स्वगत) वाह बे उल्लूकेपट्ठे ! खूब सोचा, अरेतूचाहे उसे माकी दृष्टिसे देख, पर मैं तो उसे अपनीगणिकाहीकी दृष्टि से देखूंगा–

बसंतदेव–क्यों मित्र चुप क्यों होगए ?

दुर्जनबंधु–नहींभाई सोचते रहे, क्योंकि हम तो उसदृष्टिसे देखेंगे न

(कबित्त) कमलबदन अँग अंगन मदन खुली. लालीहू रदनसोभा सदन जहांनकी । कंचुकी कसनसारी सेत पहिरन नख सिखमें लसन अभरन रतनानकी ॥ जाहि अवलोकत लुभायजात सिंधुजान. भूलिजात घात सबबात मैनबानकी। सकल जहानकी जलूसभरी मानकी. किशोरी बिना सान की प्रभाहू हरी भानकी ॥

बसंतदेव–(अनुरागसे) हम इसबातका कैसे विश्वास करैं मित्र ! क्या तुमने उसे देखाभी है, या योंही बातें बनाते हौ .

दुर्जनबंधु–(स्वगत) अरे बे पेंदीके घड़े ज़रा ठहरजा (प्रगट) एक दिन हमने अचानचक उसअबलाकी झलक देखीथी, किन्तु वह हमारी आहट पातेही वहांसे अलोप हुई. अहा हा उससमयकी भावभंगी मैं क्या कहूं:–

(सवैया) मुसकात खड़ी छलदार बड़ी. दृगवान चलावत चोटमई।
सिर सोहै बनारसी सारी रँगी.कुचकंचुकीखींचिउतंगठई॥
झुमका दोउझूमत काननमें.मृगबालसे बाल बिहालकई।
इकमार सनेह सनीअँखियाँ.मुखचंद छिपाय अलोपभई ॥

तिसपरमैं कुछदेर उसपरीके सारीकी किनारी देखता २ मोहित गयाथाः–

(कबित्त) चंदमासी चांदनी चहूंदिसि अटापै अति.फैलरही मानो मुखआभा ढलकतहै। बारहदरी में बैठी सुलभ सनेहसनी. हेमचिकछुटीलुटीसोभाफलकतहै॥ सहजासिंगारनकेभारतें लचकलंक.उरजउतंकलखिमैनछलकतहै। दरसदिखावैना किशोरिबहुरंगीहाय. दीखैप्रानप्यारीकीकिनारीभलकतहै॥ और सुनो उसकी एकदिनकी सौंदर्य्यता भाई हमने क्याही उसकाचित्र अपने चित्तदर्पणपर खींचाहै—

बसंतदेव—मित्रतुमारी बातोंनेतो हमारा सर्वसधीरहरन करलियाहै.

दुर्जनबंधु—(स्वगत) अरे अभीही यहदसा, बामनहोके और चंदको हाथसे पकड़नेकी लालसा? (प्रगट) अजीसुनोतो सही:—

(कबित्त) छातीहैछटंकी छबिछाजत छबीलिछात. छुवतछमाहैछोप छपाछितितलमें। छोरछुटिछाते छिति छहरतछाकिछुपै. छपापतिछंकित न छूवै छाँहछलमें॥ छापत किशोरीछोरी छोभित छपीसीजात. छलकिछिनहिंछिन छहरै छकलहै। छलीछिलबलकरि छुईछीरछोहकरि. छकिछकिछोपलेतछैलाहिबगलमें॥

बसंतदेव—(घबराकर) हाँ हाँ! प्रिय तभीतुम इतनी गीता गायगए ज़राहमेंभी एकनज़र दिखादोगे?

दुर्जनबंधु--(स्वगत) लो गिरा, न औंधेमुँह. अरेबचा नहींजानते कि मधुमक्खीको केवल परिश्रमही हाथआताहै. औरमजातो यारहीलोगोंको नसीबहोताहै (प्रगट) इतने घबराक्योंगएहो अरेकलतो वह तुमारेसंगही होलेगी फिर इतनीजल्दीक्या?

बसंतदेव--प्रियवरसो सबठीकही है पर अबतो बिनादेखे क्षणभरभी कलनहीं पड़ता

दुर्जनबंधु--सुनो यह खेलनहीं है जोसहजमें देखाभाली होजाय, यह राजदरबारहै, बस और अबतोरातहीभरकी बाततो है.

बसंतदेव-(व्याकुलतासे)हाँमित्रतुमने कैसेदेखा?उससमयकारातथी?

दुर्जनबन्धु--(स्वगत) थोड़ा औरभी भड़कादें तो खूबही गुलखिले

(प्रगट) नहीं दिनहीथा.बड़ेबड़े ब्योंतसे यारहमने चन्द्रमुख देखा (स्वगत) जो तुमेंतो इसजन्ममें नसीबहोता नहीं दीखपड़ता (प्रगट) आहा! क्या वोसोभा भूलसकती है:-

(कबित्त) उज्जलअखंड सातखंडके सजीलेभौन.सुलभसँवारसाज सुखमागँसीपैहै। सीसेझाड़आइने फरसफबेजरीदार. परदे अवारत्यों बितानन लसीपैहैं॥साथनसहेली लिये हाथनचँगे लीचंप.वेलीसी छबीली।खिलीसुखमाससी पैहै।पैरलटकाय हाथ अदाँसेउठायहाय.करिकैसिंगार बालबैठी कुरसीपैहै॥

औरभीः--(कबित्त) बालघुँघराले लटकाले मतवालेकाले. मोतिन पुहालेबाले कानन कसीपै है। कंचुकीकसीलीसारी सुरुख रँगीली अंग.अंगनरसीली औजउपमा बसीपै है॥ मुखकी झलकसे फलकमें लुकातचंद. हारनकेबंद उरडोलत उसी पै है। श्रीकिशोरि तीखे पेखि कसकि लड़ावे नैन. करिके सिंगार बाल बैठी कुरसीपै है॥

अहा प्रिय बसंत! तुम तो एकदिन सभी कुछ देखोगे. पर हमारे भाग्यमें तो उसका आधाही मुख देखना बदा रहा. हाय! आधेपर तो मैंने इतनी तुच्छ प्रसंसाकी और सब मुख देखनेपर तो कदाचित शेष भी प्रशंसा शेष न करसकेंगे

बसंतदेव–(आश्चर्य) ऐं यह क्या? आधे मुख देखनेका क्या अर्थ है, यह क्योंकर होसकता है?

दुर्जनबंधु–(स्वगत) बचा किस मृग मरीचिकामें तुम भूलेहो, खैर (प्रगट) सुनोः–

(कबित्त) अधिक सँवारे सज खासी चित्रकारीसों. अटारीको खिला-री सारी बहुत कमालसा। ताहू पै बिचारी कछु मनमें दुलारी दर परदे लगायो जरीदार खूब जालसा॥ सकल सिंगारकरि आगरि अनोखी अदा. बैठी सखी संग बोलै वचन रसालसा। भनत किशोरी झाँकि झपटि पटासी फिरी. आधो मुख देख्यो आधो देखिबेकी लालसा॥

(गिरिवर भृत्य प्रवेश करके दोनोंको पान इत्रलायची देता है और दोनों खाकर कुछ गुप्त पारितोषिक देते हैं)

गिरिवर-(माथे चढ़ाकर) सरकार आपही लोगनका आसरा है. आप मालिकहैं (गया)

बसंतदेव-अच्छा, चलो मित्र ! हमलोग भी चलनेकी तयारी करैं फिर देखाजायगा.

दुर्जनबंधु(स्वगत)अरे तुमपरलोकही चलनेकी तयारी करो न.(प्रगट) हाँ अब चलना चाहिए. (नेपथ्यमें)

(कबित्त) नाहीं कोऊ लायो औ न संगकोऊ लै सिधायो. तोर मोर करि पकरत आसजरकी । दोउ लोकहूनसाय हाय प्रभुको भुलाय. कबहूं खुलैन आँख आँधरे ये नरकी ॥ रोज रोज गारसे रहत रत पाप छत. कुटिल कटाछनि निरेखै नारि परकी । भनत किशोरि मूढ़ जीवन मरन देखि. सब घड़ी घरकी तो एक घड़ी हरकी ॥

बसंतदेव-अजी ! देखो , यह किसने वेदान्त बूका ?

दुर्जनबंधु-(मुखभंगीकरके) कोई पाखंडी पोप ओपहोगा.हूं ! इनकी बातें बिलकुल नीरस और प्रमाण शून्यहोती हैं , खैर ! इन बातोंका पीछे बिचारहोगा , अबचलें (दोनोगए) (स्थान मनोरमाका आराम धाम)

(मनोरमा और मयंकमंजरी विषण बैठीहै)

मयंकमंजरी-मा ! मेरेभाग्यमें क्या यही लिखारहा मा ! हा ! मा ! मैंवहां परपुरुषकेसंग जाकर क्या करूंगी , और मेरा वहां कौन अपना बैठाहै जिसकी मैं होकर रहूंगी और जो मुझे आश्वासन देगा. हा ! तुमारे देखेबिना , मा ! मैंकैसे प्रान रखूंगी और इसमें तुमारे नाम क्या कलंक नहीं लगेगा (आंसूगिरा देतीहै)-

मनोरमा-(रोती २) हाय जिसे पाल पोसकेइतनीबड़ीकिया उसी प्रेमपुतलीको अपने हाथों व्यभिचार सागरमें डालदूं ! हे

देव! अबमैं इसकलंकको ले कैसे जीऊंगी. हाय! बैरी विधाताने कैसा कुजोग मिलायाहै राम! राम!! अरे जोमैं जनतेही मरगईहोती तो आज मेरे सिर यह क्यों कलंक का ठीकरा फूटता. हाय! (कंठरुकजाताहै)

मयंकमंजरी–(मनोरमाकी गोदमें सिरधरके रोतेरोते) अरी! मैया!! मैंनेपिताका कौनसा अपराध किया जो मुझेकसाईकेहाथ देके धर्मका सत्यानाश किया चाहते हैं. हाय! अरे जानकी महाराणीपर दृष्टिकरने से क्या रावणका सत्यानास नहीं भया!

हाय मा! मुझेक्यों पिता निर्दयी होकर निकालरहे हैं, अरे मुझे कुछ भी न चाहिए. मा! मैं खाली तुम्हारे यहाँ दासी बनके अपना जीवन बितादूँगी, पर पशुधर्म हमसे कभी न होगा. हाय! किस सत्यानासी ने पुनर्बिवाह की रीति निकाली है? छिः छिः हे मा जो पिताको मैं ऐसीही भारीहूँ तो मुझे गंगामें डलवादें पर इस नर पिशाचके हाथ नदें, और जीतेजी तो मैं न जाऊँगी मा! (क्रन्दन)

मनोरमा–बेटावीरेन्द्र! यह तुमारी आज प्रेमवाटिका दुर्दैव के दावसे जलाचाहती है, हाय! हाय!! इससे क्या तुमारे कोमल कलेजेमें कमचोट लगेगी? जीतेजी तुम यह राक्षस लीला देखसकोगे? हा! जब तुम सुनोंगे कि सिंहकेभागको स्यार लियेजाताहै, देव हविष्यको कौआ जूठा कियाचाहताहै, तो क्या उस समय धीरधर सकोगे? क्याकरूं, वीरेन्द्र! मैं इस समय अशरण हुईहूं. (रोती है)

मयंकमंजरी–मुझे इन पापियोंसेअब बचाओमा!–यदि मा, जोपिता की इच्छा उन्हें छोड़ अन्यको देनेकी हो तो मैं अभी –– छोड़छाड़कर जन्मभर कुमारीकन्याकी भाँति नियम व्रतमें अपना शेषजीवन बितादूंगी किन्तु यह नहीं सहाजायगा कि पुनर्बिवाह करूं. हाय हाय हृदय फटाजाताहै अरे कैसी

घृणाकी बातहै. हाय आज सतीका माहात्म्य लोप होजायगा और गरुड़को सर्प निगल जायगा ? यज्ञबलिको स्वान चाटेगा ? मैया ! यादरखो • कुत्तेके पेटमें घी कभी नहीं पचेगा. अभी भी सती सूर्य तप रहाहै. उसके तेजसे कितनेही परदारा लोलुप पापी दुर्योधनादि की तरह जल जायँगे. हा ! सिंहपर कभी भी हाथी आक्रमण करसकता है ? मैं क्या जीती मक्खी लीलजाऊँगी. हाय ! (रोदन)

मनोरमा–(रुदनपूर्वक) बेटी; चन्द्रमापर राहुने दाँत चलाया है. हा ! सूर्य अब अस्ताचलपर सिधारा चाहताहै, या वह भी राहुके भयसे भागाजाताहै. बिधाता अबलागनोंपर इतना बल दिखाना क्या तुझसे बलीको सोभताहै(दीर्घनिश्वास) हे दैव इससमय मेरी सहायकर उबारो (ठहरके) अरे अब तो खून नहींबहता बेटा ! हाय तुमें न जाने कितना दुःख इस कोमल शरिरपर भोगना बदा है.

मयंकमंजरी–(विश्वासलेकर स्वगत) शारीरिकसे मानसिक व्यथा प्रबल है. हाय हमारे पीछे उन .. .. .. हाय ! प्रान जाया चाहते हैं (रोती है)

मनोरमा–बेटा उसकी चिन्ता नहीं ! सुकेशी वहपत्र छीनके राजकुमारको सावधान करने गई है. आगेः—

(दोहा) कहा कोऊ मेटै भला जो बिधि लिखा लिलार।
बड़े बड़े देवहु सदा फँसे देख तरु डार ॥

मयंकमंजरी--मा ! निश्चय जानो. यदि चंदके लिए कही जो राहुने आँख उठाई तो सदाके लिये अमा होजायगी. भला भस्माच्छादित आगि न भी क्या बनके जलाने में समर्थ नहीं होती ? मा ! लाखो हिंदू ललनागनों ने सतीत्व बचाने के लिये अपने शरिरको अग्निमें होम दिया है.

(नेपथ्यमें) ऐ ! सब घर खोजडाला, अरे कहाँ पधारी ? हि हि हि ! (दोनों समय कानलगाकर सुनती हैं)

मनोरमा—क्या फेर वही आफत आई ? हाय ! न जाने अब कैसी बीतैगी अरे बेटा ! देख बेढब चोटी दबी है. राम राम !!

मयंकमंजरी—माँ सोचनकरो, देखो ऐसे राक्षस बिवाहसे कुलवाली कुलकी लज्जा प्रानसे भी जादे समझतीहै. माँ ! इस पाप पंकिलमें फँसनेके पहिलेही इसका उपाय होजायगा (शीघ्रतासे निकलजाती है)

मनोरमा—हाँ; अब यही होनाहै !!!(कहा कोऊ मेटै भला०.इत्यादि पढ़ती है) (सुमंत आया)

सुमंत—(आगे बढ़कर स्वगत) अहा ! इसने तो रोते २ आँखें फुलालीं और जब इनकी यह दसा है तब बेटीकी क्याहोगी ? हूँ ! स्त्रियाँ अबला होनेपर भी त्रैलोक्य विजयी आँसूका महाबल रखती हैं.

मनोरमा—(रोते २)नाथ ! यदि बेटीका प्रान और कुललज्जा प्यारी होतो मेरी यह अंतिम बात मानिये, आगे जैसी इच्छा !—

(सवैया) भीखमनेसतछोड्यौनहीं. औ जरासुतकीमहिमाहूसही है।
बामन औ बलिराजकथा. वसुदेवहुने निजबात गही है॥
त्यौं हरिचंदकी देखो प्रथा. यह बात पुरानन बीच कही है।
त्योंहिकिशोरि न साँचतजो. जबलौंयहप्रान अधारमही है॥

सुमंतदेव—तुम ठीक कहतीहो, हम सत्य कभी न छोड़ेंगे (हँसके) देखो, सचही कल मयंकमंजरी नवद्वीप विदा होगी, बसंत देवने सब बातें स्वीकार किया॥

(मनोरमा वक्षाघातकर रोतीहै)

क्यों यहक्या? हूंः स्त्रियाँ अपनी बातें ऊपर भए विना कभी स्थिर नहीं होतीं. बड़ा २ ठन ठानती हैं.

(दोहा) हाय भयो का मोहिं इत पड़ो छली के दाय।
अबलातन घातन लगी यातन कूँकर पाय॥

(स्वगत)छिः क्या हम स्त्रैणहैं ? जोस्त्रियोंकी बातें माने ! क्या इतने बड़े मंत्री होकर, स्त्रियोंके लाखों चरित्र देखकर एकस्त्री से

डरजायँगे? छिः छिः (प्रगट) क्यों जी यहाँ बैठी क्यों व्यर्थ आंसू गिरा रहीहो? भला! इनपखंडों से क्या होता है! (उत्तराभाव) क्यों मैंने क्या कहा, सुनाके नहीं! (उत्तर नहीं) देखो फिरभी हम कहते हैं कि जोकुछ तैंकरनाहो करो नहींतो कल मयंकमंजरी तो बिदा होहीगी (उत्तरनहीं)

मनोरमा–(स्वगत) परलोककी तयारी कहो तो करूं. अरे हाय! और दूसरा होना क्याहै; हे दैव! पराधीन इस सरल बालिका का कोई प्रान बचानेवाला नहीं है·

(दोहा) माता बिषदे औ पिता बेचै निज सन्तान।
राजा सरबसही हरै तो जग सरन न आन॥

(दीर्घनिश्वास)

सुमंतदेव–इस फूंफाँ से कुछ नहीं होगा, एकसप्ताहके अनन्तरहम लोगवहीं चलके बिवाहबिधि करदेंगे. (स्वगत) जबबीरेन्द्र परलोक सिधारेगा, औरहम राजासे सिंहासनलेलेंगे (उत्तर नहीं मिला) हाय! स्त्रियां बड़ीही कठिन हैं. किसी ने खूबही कहा है:—

(कबित्त) दोऊ कुलहि नसावै बिषबूंद बरसावै. नितकलह मचावै मनभावैकरै चायकै। पापपंकमें फँसावै धोइ लाजकोबहावै. तौहू कुलकी कहावै गीतगावै गवरायकै॥ बडे बूढ़ेको कोठरी भकावै सिरताजहवै. हुकुम चलावै सासनन्दको दबायकै। यह निपट निकाम नहिंमाने सामदाम. श्रीकिशोरि ऐसी नारिसे बचावै राम धायकै॥

हाँ! ऐसी स्त्रियाँ बिना ताड़नाकेकभी सीधी नहीं होतीं तो अब वही उपाय कियाजायगा तब यह भखमारके आपही सीधी होजायगी. (नेपथ्यमें)

(दोहा) भावी भए मिटै नहीं. बिधि कीनी निरधार।
रामप्रात ह्वैहैं नृपति. पै बनगए सिधार॥

(दोहा) जोर जोर मरजातहैं. सब जगके व्यापार।

पैकिशोरि होवैवही. जो बिधिरची सँवार ॥ (सुनताहै) ऐं! यह कौन गँवार बकगया ? बिधि और भावी या प्रारब्ध क्या ? यह केवल निरुद्यमी मूर्खोंका कथनहै, हमलोग पुरुष होकर केवल पुरुषार्थवादी हैं. हाय ! तभी न प्रारब्धवादियों का कैसा सत्यानास भयाहै ! (बरबराताहुआजाताहै और सखियोंकेसंगमहाविषण्णभावसे सिसकतीहुईमयंकमंजरी आती है)

कामिनी–हा ! आज प्यारी की क्यादसा होरहीहै ? देखो मुखपर तो पूरी उदासी छागई, पर तोभी क्या राहुके सन्मुख आनेपर भी चन्द्र मलीनहोय है ? अरे ! प्यारीकी यह दशाभी कैसी सुहायरही है. (स्वगत)

(सवैया) सुखसोवतगोरी उठीअलसाय. लुरीलटकैं लटकामपटा ।
मनोचन्दपैधायो बिधुन्तुदज्यों. दोऊओरफिरै तरवारपटा ॥
उमगे उरऊपर छ्वायरही. दोऊ व्यालिनी स्वेद पियूषछटा।
अबकाह किशोरिकहै यहतो.शशिऊपर सोहत श्यामघटा ॥

मयंकमंजरी–(उदासीसे) हाय ! प्यारी सखी मैं नहीं जानती रही कि मेरेऊपर एकाएक बिजली घहराय पड़ैगी. आह ! !

(दोहा) जो जाके उर सीसधरि निडरकरै सुखस्वाप ।
वहीसीस काटै तबै कहाबसावै आप १
आन उपायनदै सदा हितही करैकलाप ।
तो उपाय दूजोनहीं जगमें मेल मिलाप २

(स्वगत) प्यारे मैंतो प्रानदूहींगी पर. हाय! छाती फटती है कि इसी पापिनीके पीछे तुमेंभी कुछथोड़ादुःख नहींभोगना पड़ा. भला इसदासी निरपराधिनीको अधीनीजान छमा करोगे तोमैं नरकाग्निसे त्रानपाऊंगी. (आंसूभरआए)

सौदामिनी–हाय यह कौन जानताथा कि अकाल समयमेंभी प्रलय कालका मेघ उमड़ैगा ? हा ! आजताईं कभी ऐसा अत्याचार कानों नहींसुना (निश्वास निक्षेप)

मयंकमंजरी—अब इनबातोंमें क्या धराहै· सखीकुछदेरमें इससंसार लीलाका लोपहुआ चाहताहै· स्नेहबिना दीपक बुझाचाहताहैं· आशालता अपने जीवनसे दूरहो· अब कठिनताप में जला चाहती है रे! निर्मोही विधाता!! तुझे मेरे संग यही करनाथा? हाय!!!

(दोहा) अपने अपने बल करै निबल जानि जग जोय।
अजासुवनकीदैबलीसिंहनपूछेकोय॥ (दीर्घनिश्वासत्याग)

कामिनी—(मयंकमंजरीका आंसूपोछके) प्यारी! इन बज्रसी बातों से मेरा कलेजा फटाजाताहै. हाय! इस दुःखसे तो छाती दलकरही है,

मयंकमंजरी—(आंसूडालके) प्यारी सखी! क्या इस दुःखकीसीमा है? हाय!

(दोहा) पियके मनसों तौलिकै निज मन तिनको दीन।
अब का मोपै बचिरह्यौ आन हेत हिय हीन॥

सौदामिनी—अरे मेरी तो इससमय सब सुध बुध धूलमें मिलगई.

मयंकमंजरी—(साहस से) घबराना क्या, अरे सखी तुम जानोंही हो कि पिताका हठ कठिन, माता पराधीन. और मेरा प्रेम अचलहै. इसमें सभी बातें एक दूसरेसे बढ़करहैं. बस! अब वही करना पड़ेगा जो सती महिलाओं ने आपत्तिके समय में कियाहै.

कामिनी—हाय सखी इन बातोंने तो मुझे बेदमकरडाला. हे राम! क्या मैं यही सुख देखको जीतीरही.

मयंकमंजरी—(आवेशनाट्यसे) सखी! इससे लोग यह तो जानेंगे कि पति परायणा नारीगन परपुरुषकी सेजसे अनल सेज सीतल और सुखद समझती हैं. (वीरतासे नेत्र लाल होजाते हैं. और दातोंसे होठोंको क्षतकरडालती है)

सौदामिनी—तुमारे इस अलौकिक कौतुकसे हमलोगनके प्रानबचेंगे सखी? हाय! क्या कोई इसमें दूसरा उपाय नहीं हैं?

कामिनी–हां! रातभर तो अभी हमलोगोंका राम राज्य है इसमें कोई काम सुखका निकल आवे तो सोना और सुगंधनही तो........(रुकजाती है)

मयंकमंजरी–(त्योरी बदलकर)"नहीं तो,यह क्या कहा सखी? अब वही होगा जो मैं सोचचुकीहूं. किन्तु पापाचार मैं ब्रह्माके कहेभी नहींकरनेकी.हाय! यदि प्राननाथकादर्शन अंतसमय मिलजाय तो फिर क्यापूछना.जीकीजीही में न लगीरहे और मरनेमें कष्ट न जानपड़े (आँसूगिरपड़े)

कामिनी–(रोती और मयंकमंजरीका आँसूपोंछती २)प्यारी!आजतो राजकुमार आनेको कहगएहैं तो उनके आनेतक धीरधरो कदाचित् वो कोई सुगम उपाय निकालें.

सौदामिनी (आशासे) हाँसखी यहकामिनीनेतोअच्छासोचा.(दुःखसे) हेराम! उनके ऊपर कैसे २हथियार उठायेगएहैं.

कामिनी–सखी उसकासोच मतकरो,चंद्रमाके ऊपर धूलिजो फेकेगा वह उसीका कालामुह करेगी.

मयंकमंजरी--(निश्वासलेके) हा! प्राननाथकाप्रान इतनाभारी होगया?हायरे! राजतृष्णा!! अरेलोभके आनेसे मनुष्यको क्या कुछभी धर्माधर्मका बिचार नहींरहता? (ठहरकर) हाँ! क्याप्राननाथके अब फिर दर्शनहोंगे?भगवन्! तुमिजानोः-

(दोहा) यों तनछीन मलीनह्वै. परीमीनसी जाल।
हीनजानि मोपै दया.कीन न दीनदयाल॥

(नेपथ्यमें पदध्वनिकेसंग)

(दोहा) तुमबिन हंस इकंतउर विरह बिथा लहरंत।
तौहू दियो उराहनो कंतहि विवस अनंत?॥

(सब चकितहो सुनने लगती हैं और बीरेन्द्र आताहै)

मयंकमंजरी--(आनन्दनाट्यसे) अहा प्रानप्यारेने कृपाकर फिर दर्शन दियाः--

(दोहा) साँझ समैं सीकर सुरभि सरस पौन गति मन्द।

पूरब दिसि पिय इत उदय कुमुद नैनके चन्द ॥

बीरेन्द्र--(सस्मित) क्यों प्रिये! हम अपने करारके पूरे हैं न ? और आज हमें सचाईका पारितोषि मिलेगा न? (कटाक्षकरके)

मयंकमंजरी--(उसासलेकर) नाथ! आपने...........

बीरेन्द्र--(रोकके) क्योंजी! आज यह कैसा नियम ? "आपआप" कहोगी तो हमें भी "आपआप" कहना आताहै. फिर मुह न बनाना.

मयंकमंजरी--(लज्जितहो) खैर ऐसाही सही. प्यारे तुमने जैसा, इस अबोध बालिका पर चाहिये वैसाही प्रेम निबाहा. किन्तु मुझ अधम दासीसे आपकी....

नहीं २! तुमारी कुछभी सेवाटहल अभीतक नहींबनपड़ी. इसलिये मैं बिनय करूंहूं कि मेरा अपराध क्षमाकर अपने चरणमें स्थानदे अनिच्छा सेभी जन्म जन्मातर इसचरणमें सुरतदेना. देखना! मेरे अपराधों को न देखके अपनी सुजनताकी ओर निहारना (हाथ धरके) हा! एक बिनय यह है कि तुम इस जन्ममें मुझे भूलके आनन्दसे दूसरा ब्याहकरना. और मैंस्वर्गसे आनन्दप्रकाश और देवाङ्गनाओं के संग फूलों की बर्षा करूंगी (आंसू आजाते हैं और बीरेन्द्रके चरणों पर गिर पड़ती है)

वीरेन्द्र--(सहसा उठाकर और कण्ठाश्लेषकरके) क्योंप्रिये! (आँसू भरकर गद्गदस्वरसे) ऐं! यह क्या!! क्यों आज तुमारी ऐसी बेमेलबातें होरही हैं! क्या हमसे कोई अपराध तो नहीं बनपड़ा ? (सिरमें रक्तबिंदु और चोट देखकर, सविस्मय) हायहाय! यह क्या ? (अचेतप्राय होकर भूमिपर बैठजाता है औरसबघबड़ाकर गुलाब आदिछिड़ककर सचेतकराती हैं)

मयंकमंजरी--(आँसूभरके) क्यों प्राननाथ! तुमे यह क्याभया ? हाय!-

वीरेन्द्र--प्यारी यदि कोई मुझे सहस्त्रआघाततक देता तोभी उतना कष्ट न होता जितना तुमारी इसहृदय विदारक बातपर

हुआ कि "तुम हमें भूलकर दूसरा बिवाह करलो." हा! अरे चाहे आजन्म भगवान् सुख नदें और तुमारे विरहमें जलना पड़े किंतु तुमेंछोड़के सबसंसार की स्त्रीमात्र मुझे मिट्टीकी पुत्तलिका एवं मा, बहिन बराबरहैं. भला!यह तोकहो आज माजरा क्या है ?

कामिनी--राजकुमार ! क्या आजआपने कोईनयासमाचार नहींसुना?

वीरेन्द्र--हम हज़ारों नूतन समाचार नित्यही सुनते हैं पर तुमने यह दूसरी बात क्यों छेड़दी ?

सौदामिनी--महाराज असलबात यह है कि प्यारी सखीका पुनर्बिवाह इनके पिताने ठीक करना चाहाहै.

वीरेन्द्र--(सस्मित) बस ! इसीलिए इतना आजप्रपंच है ? यहतोहम सविस्तर सुनचुकेहैं (मयंकमंजरीसे) क्योंसुशीले ! इसमें संदेह क्योंकररहीहो, यहभीतो एक "शास्त्रीय विषय" लोग सिद्धकररहेहैं और बड़े २ महामहोपाध्याय पुरुषभी इसपर व्यवस्था देरहेहैं.

मयंकमंजरी—(लालनेत्रकरके) सुनोजी! बस !! रहनेदो !!! चूल्हेमें जाय वहशास्त्र और भाड़मेंजाँय ऐसे व्यवस्थापक (अंचल मेंसे छुरीदिखाकर) देखो २ ! अबजादे हमसे "रुक्मिणीपरिहास" कियातोएकही आघातमें अपनाकाम तमामकरदूंगी.

वीरेन्द्र—(हँसके) और हत्या हमारेसिर मढ़ोगी ? (मयंकमंजरीका करचुंबनकरके) सुहासिनि ! शान्तहो २ इस्काडरक्याहै ?

मयंकमंजरी—(सकरुण, वीरेन्द्रकाहाथ थामकर) प्रानपति ! इसीसे कहतीहूं कि प्रेमबारिधाराके रुकनेसे यहप्रणय फुलवारी अब नंदनबन सिधारा चाहतीहै!प्यारे ! यहीसमाचारदेनेकेलिये अभीतक इससूखेतरुपर प्रानपखेरू बैठारहा;नाथ!अबउस के उड़जानेमें मैंबिलम्बनहींदेखती(आँखोंमेंआंसूभरआए)

वीरेन्द्र—(नेत्रोंमें जलभरकर) हृदयेश्वरी ! जहां इसबाटिकाका नवीन बिकसित प्रसूनगमन करेगा; वहांसे यह भ्रमरभी

आजन्म कभीस्वप्नमेंभी साथ न छोड़ेगा (आश्लेष पूर्वक) प्यारी ! तुमव्यर्थ इतनी घबराईक्योंहो ? विमले ! जानकी हरणकरकेभी रावण सर्बस ध्वंसहीभया. प्रिये ! ध्यानरखो कि सिंह जीतेजी अत्यंत क्षुधितभीहो तौभीघासनहींचरता और न अपने शिकारको गीदड़ोंकेहाथ देखते २ नहीं जाने देताहै· त्रैलोक्यमें किसकी सामर्थ्य है कि कुदृष्टिसे तुमारी ओर देखसके ? नहुष इन्द्रत्वपाने परभी सतीइन्द्राणीकी ओर पापदृष्टि करनेसे निरयगामी हुआ· देखो लाड़िली ! उपायसे असाध्यभी साध्य होजासक्ताहै·

मयंकमंजरी–(आनन्दसे) हां ! प्राणवल्लभ ! ! इसव्याधिकी कौन औषधिहै ? जल्दी कहो · प्यारे!मेरा कलेजा धड़करहाहै .

(कामिनी और सौदामिनी आग्रह प्रकाश करती हैं)

वीरेन्द्र--अभी प्यारीतुम चुपचाप इसीकुलाङ्गारकेसाथ चलीजाओ.

(आवाक होकर तीनों वीरेन्द्रकी ओर देखने लगती हैं)

मयंकमंजरी--(महाक्षोभसे) ऐं!यहक्याकहा? क्या तुमारेमुखसेऐसी २ बातें शोभादेती हैं , और फिर तुमने वहीप्राणघातक रुक्मिणि परिहास निकाला

(दोहा) सबैहोय विपरीत जब भागहोय विपरीत ।
नलिनी तजै बिरागिनी भ्रमर कुटजको मीत ॥

हाय गौवोंके झुण्डमें सूवरकी शोभा होतीहै· छिः छिः ! ! (आंसूगिर पड़े)

वीरेन्द्र--(हँसके) मनोहरी ! तुम हमारी बातका मर्मनहींसमझी· देखो उस्केसंग जानेमें--

मयंकमंजरी--(रोककर क्रोधपूर्बक) चलो हटो ! रहनेदो ! लो ! छिन भर जो प्रानठहराहै सो अभीहीचला चाहताहै(हाथमें छुरी लेलेती है और वीरेन्द्र झपटकर छीनलेताहै)

वीरेन्द्र (हाथथामकर) पहिले प्यारी सब बातें तो सुनलो, पीछे जोजी चाहे कहना·

मयंकमंजरी-(सावधान होकर) तुमारी क्या इच्छाहै ? लो अभीही सफाई करडालो.

वीरेन्द्र--तुमारे पिता अकारण हमसे बैर इनदिनों बिसाह रहे हैं.

कामिनी--अब भी क्या कुछ छिपाहै, राजकुमार !

सौदामिनी--महाराज ! आज इन्होंने माता पिताकी सब बातें अंतरालसे सुनी हाय ! उससमय आपके बारेकी कुछबात सुन के यह ऐसी अचेत हो गिरी कि जो मैं पास न होती तो इन का प्रान न बचता; सम्हालते २ देखो, ज़रा सिर में चोट आही तो गई.

वीरेन्द्र--यदि उनका बश चले तो वे क्षणभर में मुझे विनाशही तो करडालें.

मयंकमंजरी-(निश्वास लेकर) हाय !अभी आपको इसका संदेहही है. अरे उधर तो सब तयारीही होरही है.

वीरेन्द्र-(हँसके) फिर " आप आप " करनेलगी; अच्छा आप सुनिये. वह वृत्तान्त हमें विदित है (परिधानमें से एक पत्र निकाल करके मयंकमंजरीके हाथ देताहै और उधर दोनों सखियाँ झुकपड़तीं और मयंकमंजरी पत्र पढ़ती है):--

" श्रीयुत मंत्री महाशय !

आपकी आज्ञानुसार मैं राजकुमार के बधका सर्वांगिण प्रयत्न करचुकाहूं. सात कट्टर पुरुषोंको इसविषयमें नियत कियाहै. और मैं भी स्वयं इसकार्य्यकेलिये नियुक्तहूं.

केवल कृपाभिलाषी ,,"

(पत्रपढ़ते २ आँखोंसे आँसूकी धारा बहनेलगती है और पत्रगिरजाता है)

कामिनी-यहपत्र आपकेहाथ कैसेलगा ?

वीरेन्द्र-ईश्वरकी प्रेरणासे, नहींतो आजही हमारेलिए कालकूट उपस्थितथा.

सौदामिनी-कृपासिन्धु! वही तो मैं भी सुनाचाहतीहूं !

मयंकमंजरी-क्याकहनेमेंतुमारीकोईक्षतिहै?कहो२ मैंभीसुनाचाहतीहूं
वीरेन्द्र-क्याकहूंप्रिये! तुमारी सखीचाची सुकेशीने यहउपकार मेरे साथकिया,
मयंकमंजरी-अहहा! पिताकेहाथसे क्या यही,पत्रको खींचलेगईथी?
वीरेन्द्र-हाँ! उन्हींनेहमसे सबसमाचार कहा, और तुमारे चोटका अनुरागबल्लभने या प्रेमबल्लभने तुरंत औषधिभेजीथी न?
मयंकमंजरी-वाह!प्रेमबल्लभने ऐसीऔषधं भेजी कि अबमुझे तनिक भीदर्द उसके लगनेसे नहीं है.
वीरेन्द्र-खैर! परन्तु दुःखयहीहै कि उन्होंने (तुम्हारेपिताने) महाराजकोभी अपना वशवर्ती बनालियाहै, इसीलिये पिताभी आजकल हमसे कुछक्षुरण हैं.
कामिनी-महाराज! यहीतो राजनीतिकी कूटचातुरी है.
वीरेन्द्र-किन्तु ईश्वरकीदया, और उसीकीदीहुई सावधानी,साहस, बल, प्रताप, आत्मनिर्भरता, और विद्या बुद्धिकेआगे अभीतकतो किसीकी कुछनहीं चली; पर अब शत्रुओंके बीचमें हमारा रहना उचित नहीं है,
सौदामिनी-हाय! आपके यहीगुणतो दुष्टोंको जलारहेहैंः-

(दोहा) परके जसकी आगसों जरैंनीच दिनरात।
तऊनसमता करिसकैं निंदतही मरजात॥

मयंकमंजरी-हाय! दुष्टोंके कुचक्रसे पिताकी ऐसी दुर्मतिहोगई?
वीरेन्द्र-प्यारी तुम सच मानो, तुमारे संबंधकेकारण अबतुमारेपिताभी हमारे पित्रिकल्प हैं. अतः मैं उनसे कुछ कहभीनहीं सकता, यदि दूसरा कोई इतना उपद्रवकियेहोता तो मैं पूरी शान्ति उसेदेता.
मयंकमंजरी-यह हमें अच्छीतरह विदितहै प्यारे! परहाय! पिताको क्याकहूं. किन्तु "सती"ने पतिकी अवज्ञापिताके मुखसे भी सुनके तत्क्षण प्राणत्याग कियाथा, हाय! नजाने मुझे कौननर्क मिलेगा कि मैं पतिकी निन्दा सुनकेभी जीरहीहूं.

वीरेन्द्र–खैर ! प्यारी तुम इसका सोच न करो, परन्तु यहाँसे तुमेंले चलने में बड़ी २ दुर्घनाहोंगी; कितनोंके तो प्रानजायँगे, और रक्तकी नदी बहेगी, तथा हमारेभी अनिष्टकी संभावनाहै, क्योंकि अभी इनसबबातोंके रहस्यनजाननेके कारण पिता भी हमसे बिमुखहैं और उन्हें अपनेअनुकूल इससमयलाना साध्यातीतहै, जबतक कि पिता सब टघना ठीक २ न जानलें; क्योंकि हम अब यहां अधिक ठहरभी नहीं सकते, और आजही प्रस्थानभी करेंगे.

सौदामिनी–यह तो सब आपने ठीककही राजकुमार ! परप्यारीका क्या बंदोबस्त ठीक किया ?

कामिनी–हां यही तो मैं भी पूछना चाहतीथी.

वीरेन्द्र–इसका तो बहुत उत्तम उपाय हमने सोचाहै.

मयंकमंजरी–(आतुरहो)अजी जलदी करोभी, मेरा जी घबरारहा है

वीरेन्द्र–सुनों ! कल जो तुमारे पिता बिदाकरें तो तुम चुपचाप चलीजाना यह सखियाँ भी तुमारे संगही रहेगी , और एक विश्वस्थ सैनिक उस दुष्टसे तुमारी मार्ग रक्षाके लिये हम चुपचाप करदेंगे , उसपिशाचका भय तुम न करके यहाँ से निकल चलो .

मयंकमंजरी–(घबराकर) हाय! इन प्रपंचों में क्या धरा है ? और इससे क्या होगा ?

वीरेन्द्र–तुम समझी नहीं ? सुनों ! बीचमार्गमें हम उस दुष्टका बध करके तुमारा सुख सम्बन्धकर वहीं कालयापन करेंगे, जब तक पिता अनुकूल नहों . देखो हमारीबात मानो. पतिकी बात न माननेही से " सती "देवीके प्रानगए . जाबालि जंगलमें कावेरीनदीके तटपर गौरीशंकर के मन्दिरमें हम से मिलना हम वहीं तुमारी बाट देखते रहेंगे .

कामिनी–वाह वाह ! यह तो अच्छी बिचारी. " रुक्मिणी हरण " की छटा खूबही देखने में आवेगी–

वीरेन्द्र–अरी सखी! वहीं अर्जुन भी "सुभद्राहरन" करेगा.

(दोनोंसखी लज्जित होजाती हैं)

मयंकमंजरी–(प्रसन्नहोकर) अब मैं समझगई. और मैं मैया को तथा चाचीको भी सब समझा दूंगी, पर देखना तुम भूलना मत इसबात को; नहीं तो फिर इस देहसे हमसे तुमसे भेट न होगी–

वीरेन्द्र–(आश्लेषकरके) बावलीभईहो!कहींचाँदनीको चंदनेछोड़ाहै? याचकोरने उससे मुहमोंड़ाहै ?

मयंकमंजरी–तो क्यातुम समझतेहो कि यहप्राननिगोड़ाहै? यानलिनीनेभी कभीनेहतोड़ाहै ?

कामिनी–वाह ! क्याखासा यहगठजोड़ा है. लो अब क्या कुछकाम रहा थोड़ा है ?

वीरेन्द्र–(परिहास करके) हमारे दोनोंमित्रभी हमारी सहायताके लिये संगरहेंगे तबकामिनी!वहीं तुमदोनोंका गठजोड़ाहोगा (दोनोंलज्जित होजातीहैं)

मयंकमंजरी–(हँसके) वाहप्यारे ! अच्छा सामानकिया, सूर्यकेसंगतो रश्मिलगीही रहती है. (दोनोंसखी लजातीहैं)

वीरेन्द्र–(कपोलचुम्बन करके) क्योंप्यारी अबतो प्रसन्नभई (कुछ कानमें कहताहै)

मयंकमंजरी–(कृतिमप्रेम रुखाईसे) चलोजी मैं उदास कबरही ? वाह ! हमसे अबतुम न बोलो, कलतुमने मेरीबड़ीदुर्दशाकी (स्वगत) अहा ! (मुसकातीहुईः–

(कानमेंधीरे) (सवैया) तंगतनी तरकीकरकी चुरिया अंगियादरकी गुजराती। सारिकटी झटकीटटकी नखघातनसे दोउघायल छाती ॥ चुम्बनतुम्बन गालगड़े उरमालचटाचट टूटन साती। यानिरमोही किशोरिनेरी बहियाँ मुरकायदईकलराती॥

(प्रगट) मैंनेतोआज सखियोंसे कहदियाथा कि वेआवेंतो

कहदीजियो कि अबमें उनसे न बोलूंगी. (हँसके) तोक्यों तुममुझे छोड़तेहो ? (नेपथ्यमें)

(कवित्त) आवन किशोरि मनभावन कह्योहैनिशि. कामिनिसिंगार कियो सुरंगसुभायसे। बैठीसीसमंदिर निसंकपरयंकदोऊ. सखीसबसंगबाटदेखतसुचायसे बिरहबिथासे॥अकुलायसो-इत्यों रिसाय.एरीसखी देखआए प्रीतमउपायसे।

मयंकमंजरी– (भ्रूक्षेपकरके)–

बीतीरंग निसासंग निसासब अंगकीतो. आए तोबलायसे न आए तो बलायसे॥

वीरेन्द्र–(आलिंगनकरके) हां प्यारी अब हम आंखोंमें गड़ेहींगे ल्यो तुमाराभाग चमका.

मयंकमंजरी–(रिससे रोकके)बस,इन्हींबातोंसे मैंतुमसे नहींबोलती.

वीरेन्द्र–क्यों अपनीबेर यहभाव और दूसरोंको व्यर्थ घायलकरना !

(करमर्दन)

मयंकमंजरी–(हँसके) अच्छा अब न कुछ कहूंगी ! अहा !! (गातीहै)

मलार॥

(दोहा) हमारे आली श्याम मनावत आज।
हाहा खाय चाय उरलावैं बोलैंबचन दराज॥

वीरेन्द्र–(दोहा) पायलको घुँघरूझँनकारै सुनिसुनिहठ हियसाज।
(नेपथ्यसे) श्रीकिशोरिपियकरैं मनावत बिसरगई तुवलाज॥

मयंकमंजरी–(सखियोंसे) अरी लुक क्योंगईहो, सामने आते क्या लाज आवे है ?

मलार॥

सखी सुभ श्याम घटा नभछाई।
कोयलमोर चकोर सोरकरि किलकिलकार सुहाई॥
(नेपथ्यसे) श्यामा श्याम दोऊ नित बिहरैं बिहँसि २ उरलाई।

वीरेन्द्र–श्रीकिशोरि सखियांसबमिलिमिलि बिहरतकरि चतुराई॥

मयंकमंजरी(सखियोंसे) क्योंरीअकेलेअकेले विहार ! (दोनोसखी

आकर) कामिनी और सौदामिनी-(हँसके) सखी तुमें मुबारकहो.

वीरेन्द्र-और तुमें ?

मयंकमंजरी-हाँ ! हाँ!!तुमें ?

(दोनोंलज्जित होजाती हैं)(नेपथ्यमें) धीरेस्वरसे,देखो बचाजी निकले कि महीं ठंढाकिया(सबसभयसुनती हैं)

वीरेन्द्र-प्यारी हमाराबैरी आपहुँचा,देखोअभीइसे जमलोकभेजताहूं.

मयंकमंजरी-नहीं मैंतोतुमेंकभी ऐसेसंकटमें न जानेदूंगी (पकड़ना चाहती है और वीरेन्द्रतीरकेऐसा निकलजाताहै; और मयंकमंजरी अचेतहो गिरपड़ती है)

(दोनोंसखी) हाय ! वह क्याभया ? (घबराकर कामिनी जललाकर छींटादेती है और सौदामिनी गोदमें लेकर अंचलसे व्यारकरती है)

वीरेन्द्र-(हाथमें लोहूसेभरी तलवारलिये आताहै) ऐंहैं यहक्या ! (घबराकर मयंकमंजरीका अंगस्पर्श करताहै)

मयंकमंजरी-(आँखखोल वीरेन्द्रको सामनेदेखती और खड़ीहोवेगसे लपटजातीहै) प्यारे हाय ! हमें इसदुःखमेंछोड़ कहां भागगए (आंसूटपकपड़े)

वीरेन्द्र-(आंसूपोछके सस्मित) प्यारी यह देखो (रक्तभरी असि दिखाताहै) अभी उसदुष्टका बधकिये चलाआताहूं (तीनों सखीदेख मग्नहोजातीहैं) (घबराईहुई सुकेशीआतीहै, और सबसलज्जहो अलग २ होजातेहैं)

सुकेशी-बेटा वीरेन्द्र जल्दीभागो; तुमारे यहां आनेका समाचार सुन सुमंतदेव नंगीतलवारलिये चलाआताहै.

वीरेन्द्र--हम उन्की तलवारसे नहींडरते परहमें उनसे युद्धकरनास्वीकृतनहीं हमजाते हैं (सहसा घबरायेहुये अनुराग बल्लभ और प्रेमबल्लभका प्रवेश)

अनु०औ० प्रेम०(घबराहटसे)मित्रभागोमहाराजकीसैन्य तुमेपकड़नेको आती है घोड़ातैयारहै

(नेपथ्यमें) धरो, मारो, काटो, पकड़ो २ भागनेनपावे, बांधो २ देखो अबलेलिया, मारोमारो (घोरशतघ्नि ध्वनि) सबघबराकर अपने २ मार्गसे निकलजाते और रंगभूमिमें महाकोलाहल और अंधकार छाजाताहै.

इतिद्वितीय अंकः ॥

अथ तृतीयाङ्कः ॥

(स्थानकावेरीनदीकेतटका कुसुमकानन)

(अश्वारूढ़–वीरेन्द्रदेव और अनुराग वल्लभ आतेहैं)

वीरेन्द्रदेव–वयस्थ ! यद्यपि मार्ग चलते २ प्रायः कई दिन होगए, पर कहीं क्षणभर भी, बिश्राम लेनेका अवसर न मिला,

अनुरागवल्लभ–(हँसकर) मित्र ! वो क्योंकर मिलेगा ? जब कि सुखकी देनेवाली प्रेमकी प्रतिमाका वियोग हृदय जलारहा है . देखो तुमारी इससमें कैसी सुन्दरताहै-

(दोहा) मनमानिक के संगही. मनहू गयो हेराय ।
विनपाए जीवै नहीं. नर भुजंग अकुलाय ॥

वीरेन्द्र–अहह ! हमजानते कि तुम इतने अपने प्रेमी बिना आतुर होगे तो हम तुमें कभी यह कष्ट देनेकेलिये अपने संग न लाते भला तानिक धीरजधरो, देखो, कुमुदका संतोष चंद्रमा लाखोंकोसकी दूरीपरसे भी करता है, सूर्य्यका प्रकाश करोड़ों कोससे पृथ्वीपर आताहै; इसीप्रकार मिलनेवाली बस्तु प्रथमहीसे अपना प्रभाव जनाकर अपनीओर आकर्षण करती है .

अनुरागबल्लभ–हाँ ! मित्र !! तभी न इतनी झंझट झेलनेपर भी तुमें अभीतक जराभी खेदनहीं दीखपड़ता;लालचबुरीबलाय होतीहै; देखना मित्र!कहीं ऐसीचंचलतामें गोते नखानाः–

वीरेन्द्र–दुर्मूर्ख ! क्या बकवाद लगाई .

अनुरागवल्लभ–तब तुमारे ऐसी पंडिता मैं कहाँसे लाऊं .

वीरेन्द्र–(हँसके) अरे पंडिता–कि–पंडिताई, या पांडित्य ।

अनु०-तुमजोही समझो.

वीरेन्द्र०–अरे भाई ! किसकी २.

अनु०–अपनी हमारी, हमारी अपनी बस अहहह.

वीरेन्द्र०–अह ! जानेदो यहबखेड़े की बातें.इधर देखो (दिखाकर) अहा ! जैसे ऊषःकाल के आतेही कमलका वदन प्रसन्नहो विकसित होने लगताहै.

अनु०–योंही जैसे तुमारा लक्ष्य समीप आताहै तैसे२ नये२ उत्साहोंसेमानो शरीरमेंनूतन बलकासंचार और अनेकानेकअभिलाषा उदय होती जातीहै, ल्यौ ! खूब पुष्टई अब खानेमें आवेगी.

वीरेन्द्र०–(हँसके) तुमारे भागमें केवल चरखाहीकातना बदाहै.

अनु०–(हँसके) सखे ! यह तुमने क्या कहा ? सूर्य के उदय होनेसेही उसके चिर अनुगृहीत चक्रवाकका अभ्युदय होताहै. पर तुमारे प्रलापसे वह सुखकी आशाहै जिसमें वियोगिनी निशाका आगमन न हो.

वीरेन्द्र०–तो यह न कहो कि अपने स्वार्थहीसे तुमने यह श्रमउठायाहै

अनु०–तुम जो कहो, पर सच्च भी यही है कि संसारमें संपूर्ण अलभ्य वस्तु श्रम स्वीकार करनेसेही मिलती हैं. अहा ! देखो न कि सैन्य तो कटमर के सत्यानाशहो पर जयपराजय राजाहीकी होती है.

वीरेन्द्र०–सुनो ! २ उसके लिए बड़े २ इनाम रखेहुए हैं. फोकटही नहीं है, लार न टपके, और भी स्वामीके लिए प्रानतक देना सेवक का धर्म है.

अनुरागवल्लभ–वाह वाह ! आज यह नईबात सुनी, पहिले तो स्त्री हीके स्वामी होतेरहे पर अब पुरुषोंके भी खसम होनेलगे, जैसा तुमने कहा मित्र ! यदि मित्रताकी दृष्टिसे देखो तो यह कब उचितथा कि तुम खेद सहो और हम सुख भोगें. पर बिना आपके वह सुखही कौन देनेवाला है, और कब कहाँ मिलताहै ? अतः वियोग न सहके तुमारे संग सब अवस्था में सुखही सुखहै .

(दोहा) सोहै सदा सरोजनी उर भृंगनकी माल।
करि कपोल लटकनभए सोहै कहींमराल ॥
(दोनों अश्वोंपर कशाघात करते हैं)

वीरेन्द्र०-(हँसके) अहा! हमारेसंग तुमारा आनाभी अबबिनाहेतु नहीं प्रतीतहोता और क्यों होनेलगे ? पर विशेष हेतुभी कोई और है ? (झुककर हाथदबादेता है)

अनु०-अहह! मित्र!! तुमतो निरे पोथीके बेठनही बनेजाते और हमीको लजाना चाहतेहो ? क्या तुम सबजगह सबकारनों में अपने मतलबकोही मुख्यमानोगे ? देखो! हमसे कहीं मत उड़ना.

(सोरठा) लगे नैनसे नैन, मैन महा बेचैन किय।
तदपि रसीलेबैन, हितनिरेखिहियहुलसिकिमि ॥

क्या कहें प्रिय तुमतो हमारी सब बातोंको निरी पोचही समझते हो.

वीरेन्द्र०--देखो मित्र! एकचन्द्रपर तो अनेक चकोरोंको तो आसक्त होते बहुत देखा है पर यहाँ प्रत्येकचन्द्रपर प्रत्येक चकोर झपट्टा माररहे हैं.

अनु०-देखैंपहिलेकौनलँगूरीचाल दिखाताहै, ओहो कहींअभाग्यसे अमावास्या न आजाय, नहीं तो अंधेरे में लालाकी आंखें पथरा जायँगी.

वीरेन्द्र०-(हँसके) "दुर्बासा" के नातीबनकर ऐसाशाप मतदो नहीं तो बिनामांगे प्रलयका तमाशा दिखाई देनेलगेगा.

अनु०-तो हमतो "मार्कंडेय" कीतरह बालककी नाकमें घुसउसके पेटमें कबड्डी मारेंगे;और तुमबाहरखड़े प्रलयमचायाकरना.

वीरेन्द्र०-(उसकी बात अनसुनीकरके) (स्वगत) हाय! नजाने किसदिन प्यारीके दर्शनहोंगे ?

(दोहा) छनबियोग बनितानको सहिनजाय धरिधीर।
श्रीकिशोरि औषधिमिलै बिनामिटै नहिंपीर ॥

(इधरउधर देखके सहर्ष) प्रियबयस्थ! (अंगुलीसेदिखाकर) वोदेखो! श्रीमंदिरकी वृषभध्वजा दिखाई देनेलगी, अब एककोससे अधिक दूरी तो नहीं दिखलाई देती.

अनु०-(परिहाससे) हां! ठीककहा, अबहमलोग आगए. परकदाचित्प्यारीआकर हमलोगोंको बिनापायेकहीं फिरजायगीतो तुमेपूराबिश्वासघाती समुझेगी, औरउसबिचारी अनाथिनी केहृदयमें कैसीचोट लगेगी, और कितना दुःखहोगा? हाय! तुमने उसबिचारी निर्बोध बालाकीकैसी खराबीकीनजाने. उनके मनमें कैसे २ तर्क बितर्क उठतेहोंगे.

वीरेन्द्र०-हैं! तुमहमसे परिहास करतेहो?

अनु०-नहीं! २ हास, बिलास, हुलास, भूखप्यासभरा इतिहास कहरहेहैं.

वीरेन्द्र०-(हँसकर) हमलोगोंके पहिले वो क्योंकर आसकेगी? क्या उनकेपास सौभ, या व्योमयानधराहै? उनका आना कभी हमसे पहिले नहीं होसकता.

अनु०-हाँ! कभी नहीं, क्योंकि तुमने तो उनकी राह काटदी है न! वो कैसे पहिले आवेंगी. वाहवाह! क्याही मन के लड्डू बँध रहे हैं. ये लाला पुष्पकबिमानपर चलरहे हैं.

वीरेन्द्र०-अह! तुमतो व्यर्थ परिहासकरतेहो, देखो इसमेंआश्चर्य क्याहै? हमलोग तो प्रच्छन्नरूपसे सीधे जल और स्थल की राहसे आते हैं.

अनु०-जो डेढ़ा और दूना होगा. और उनलोगों की राह सीधी पड़ेगी, तब भी तुमी आगे पहुँचोगे? भई तुमारी बातें अपरंपार हैं, भला इसका सार कौन जाने.

वीरेन्द्र०-सारजानेदो, इसेसमझो कि हमलोगोंसे पहिले वो लोग किसीतरह आनहीं सकते, क्योंकि हमलोग उनके एकतो पहिले चले, और दूसरे दिनरात धावामारे चले आते हैं,

और वो लोग धीरे २ ठहरते हुये आवेंगे . हाँ ! कदाचित् वो अभी जायँ तो ....

अनु०—हाँ ! हाँ !! तुमारी प्रणयिनी वहाँ कुछ निशान अवश्य छोड़ जायगी .

वीरेन्द्र०—छिः कैसी अशुभ बातें करतेहो. भाई आनन्दबल्लभ भी, अनुमान होताहै, कि उनलोगों से पहिले यहाँ तीसरे मार्ग से पहुँच जायँगे . तौ भी सब ठीक २ पताल्लगजायगा .

अनु०—हाँ ! जोहो !! पर आशा लगीरहनी चाहिये . क्यों मित्र ! तुमने आनन्दबल्लभ को संग क्यों न लिया ? क्या उन्हें पहिलेही से इधर रवाना किया है ऐं ! चलतीबार तो वो दोघोड़ों पर हमलोगोंको सवार कराके वहीं रहगयेथे .

वीरेन्द्र०—मित्र ! घबराने की बात नहीं, उन्हें हम वहां कोई विशेष कार्य्य के लिये छोड़आए हैं. आशाहै कि वो उसकाम को उसीसमय ठीक करके चलेहोंगे.

अनु०—हाँ ! जी ठीककहतेहो, अब तो हमसे बातें भी छिपने लगीं, कल न जाने और क्या होगा. भाई अबजो न हो सोथोड़ा है. और फिर अभी क्या.

वीरेन्द्र०—वाह ! वाह ! ! रूठगये ? छिः देखो ! अरे शीघ्रताके कारण हम तुमसे नहीं कहसके.

अनु०—हाँजी ठीकतौ है,तुमारी लच्छेदार बातें कौन समझसकताहै? कभीकहतेहो—उन्हेंवहाँछोड़आये—कभीकहतेहोकिवोहमसे और उनसेभी आगे पहुँचेंगे—इसकाअर्थतो लालबुझक्कड़ अथवा तुमही जानों.

वीरेन्द्र०—इसकाअर्थ गूढ़है. (कटाक्षपात)

अनु०—हाँप्रेमोन्मादके यहीसबलक्षणहैं, तुमनहींजानते हमनेअपने बहनोईसे सबवैदक पढ़डालाहै. और यही ठीकहै.

(दोहा) अट पटाँग बोलेबचन.करै अनमिली बात।
तातकहै पितु पूतसे बसीबात जिहि गात ॥ वाहधन्यहैं

वीरेन्द्र०-(आक्षेपसे) सौदामिनीसी चंचलकामिनीमें यहगुणहोतो क्या आश्चर्य्य है? मित्र! सचपूछोतो ये सबलक्षण तुममें पूरे २ घटते हैं तभी तुमइससमय इतने उतावले होरहेहो, हमनेअच्छाकिया कि अभीतकतुमसे कोईरहस्यकथानकही.

अनु०-(हाथथामकर) अहाहा! वाहरे स्थिरमूर्ति!! आईनानहोतो जरामंगनी की आरसीहीलेके अपना मुखतो देखलो, कि कैसी स्थिरताहै. अहातुम अपनी गुप्तलीला न प्रकाशकरो वही अच्छा.

वीरेन्द्र०-लो! खफा होगए न, वाह राहूका बस बली विष्णुसे न चला तब बिचारे चंद्र सूर्य्यपर झुकगया. भला मैंने तुमारी कौनसी बात न मानी?

अनु०-अरे वाह! चन्द्र सूर्य्य कुल केतु बुधजी!! अच्छा जाने दो लो तुमारा मनोज मंदिर समीप आया.

वीरेन्द्र०-अच्छा शुक्राचार्यजी- (हास्य)

अनु०-अहा! यह नवग्रहका गलग्रहनकरो, कहनाहो सो कहो नहीं अपनी राधेको यादकरो.

वीरेन्द्र०-(हँसके) सुनो! २ नाराज मतहो.

अनु०-(रोकके) अहा मित्र! तुमारी इस सभ्यता और उत्तम व्यवहारसे हम बड़े प्रसन्नभए.

वीरेन्द्र०-खैर! हमारे भाग, अच्छा सुनो तो! वो पत्र जो मंत्री के षड़यंत्रका सुकेशीके हाथसे मिलाथा, वो और उनके सब चरित्रका एक बड़ाभारी पोथा तयारकरके आनन्द वल्लभ के हाथ अपनी माताके पास भिजवाकर कहाहै कि यदि आप शीघ्र हमें मयंकमंजरी न दिलादेंगे तो फिर अब हमारा इस जन्ममें सुख न देखेंगे. पर सुमंतदेवको कुछ भी कष्ट न दियाजाय इसकी प्रार्थना की है. क्योंकि उन्होंने कुसंसर्ग से यह कर्म किया, और क्षंतव्यहैं.

अनु०-(रुष्टहोकर) बस इसीबातके लिए इतनी देरतक सिरखाली

कियाथा, छिः! यह तो हमारे सामनेहीकी बातहै. मित्र! तुम बड़े प्रपंचीहो.

वीरेन्द्र०–इस लिए अनुमान होताहै कि कदाचित् वो जल्दी आगए हों. यदि जो वो आगएहों तो फिर कई एक प्रयोजन निकलजायगा, और श्रीपिताजीके मनकाभावभी जानपड़ैगा–

अनु०–हाँ हाँ! जो तुमे प्रयोजन हो हमीसे क्यों नहीं कहते, मित्र! नहीं जानते कि हम चौदहो लोकमें जासकते हैं, क्या हमसे कोई बात ऐसी है जो न होसके?

चौदह लोक घूम फिर आऊं. और दिखाऊं खेल।
रेला रेलकरूं दुर्जनका तौ है सच्चा मेल॥

कहो क्या काम करैं?

ऐं कहो क्या करैं? हमारे रहते मित्र! तुम किसी का भय मत करना.

वीरेन्द्र०–(हँसके)अहा! तुम बड़े वादुर, शिव शिव, बहादुरहो, तुमाराही तो भरोसा है

अनु०–पर क्षोभ अब यही है कि तुम अब बातें हमसे छिपाने लगे. किन्तु ओस्तादोंसे?

(दोहा) तन न छिपै तियसे सदा बुधसे हियकी बात।
पै काहू के मन मिले कहत बात सकुचात॥

वीरेन्द्र०–इसमें कुछ सन्देह नहीं. अबतुम ऐसाही समझो (हँसताहै) मित्र! आनन्दबल्लभ के आनेतक मैं महाघबराहट में रहूंगा. अहा देखें पिताजी क्या उत्तर देते हैं. हमने तो अपनी ओरसे कोई अनुचित वचन वा कड़ापन नहीं खर्च किया है. क्यों मित्र?

अनु०–हाँ! फिर तो कहो, क्या क्या लिखाहै?

वीरेन्द्र०–यही कि-पूज्यचरण मंत्री महाशयने जितनीचालाकी, दुष्टाचरण. बिवाह सम्बन्धमें अधर्म हठ, षड़यंत्र नानाप्रकारका कुव्यवहार किया है यदि आप न्यायदृष्टि और वात्सल्य के

कारण निष्पक्ष विचारकर धर्मसे हमें मयंकमंजरी दिलाके मंत्रीको धर्मपथारूढ करें, प्रत्युत मंत्रीजीको उनके कुकर्मों का कठोर दण्ड नदें और हमारा चिरमंगल चाहेतो ऐसा न्याय करके पिताके अनुकूल आचरणकरें, क्योंकि शास्त्रों में भी गांधर्व विवाह उत्तम और सहस्रो प्रमाणोंसे भूषित है; पर हमारे अभाग्यसे यह होना असंभवहो तो इस जन्म में हमारा मुख अवलोकन भी आप न करेंगे.

निवेदक, वीरेन्द्रदेव

(पत्र अनु० के हाथमें भी देताहै और वह भी पढ़के देदेताहै)

अनु०-मित्र! इसमें तो कोई अनुचित नहीं जानपड़ता, यद्यपि शीघ्रताके कारण जैसा चाहिए वैसा और भी पुष्ट न किया गया, किन्तु तौ भी कठोरतासे रहित है, प्रत्युत इतनेघोर अभिचारी मंत्रीपर भी जो तुमने अलौकिक क्षमादिखाया, इससे महाराजका हृदय अवश्य न्यायानुसरण करेगा और संसारमें तुमारा सर्वोपरि उत्तम यशहोगा.

वीरेन्द्र०-मित्र! जो कुछहो! यद्यपि पितासे ऐसा निवेदन लज्जाकर है किन्तु संकटके समय फिर क्या करना होताहै?

(सोरठा) करि आगे अपमान; मान पीठकरि राखियत।
काज करै धीमान; जे अकाज रत मूढ़ तिन॥

अनु०-मित्र इस समय हमारा चित्त तुमपर बड़ा प्रसन्नभया:-

(कवित्त) अभिलाष वारिधि प्रताप कमलाकरत्यों. शील सिन्धु सु-
जन सरूप सुख सागरसे। सुन्दर सुभाव अतिरुचिर कि-
शोरिजिमि. पूरन समुद्र मन मुदित निशाकरसे॥ दानो
दधि दानिनमें मानिन मदारणव. दिव्य गुण गुणित गुण
प्रिय गुणाकरसे। पंडित प्रवीन प्रजा कमल विकासदीन.
ताको मन मानिक मिलापरतनाकरसे॥

वीरेन्द्रदेव-अहा! यह क्याबकउठे, वाह!वाह!! आपको तो खूबही चाटुकारी आती है. अगर ऐसाही कथनोपकथन आप प-

सन्द करते हैं तो फिर हम भी सुनाते हैं:—

(सवैया) छायरह्यो रबिसों निसिवासर सुच्छ प्रताप चहूं जगमें।
प्रेम पयोद हृदै थिर ह्वै.चपला दरसाय रही मग में॥
त्योंहि किशोरि निशाको शशी छहराय छटा तुमरेपगमें।
बढ्योबारिधिमान्यो मनोरथको अवगाहन मेरुमहानगमें॥

(दोनों मंदिरके निकट पहुंच जाते हैं) (सहर्ष) मित्र! देखो तुमारी अनुपम बातों से आह्लादित होतेहुए कैसे अनायास अपने लक्ष्यपर आगये.

अनु०—चलिये महाकालेश्वरका दर्शनकर कृतार्थहों (दोनोंएक सघन झाड़ीमें अश्वोंकोबांधकर श्रीमन्दिरमें प्रवेशकरते हैं)

वीरेन्द्रदेव—अहाहा! जिन्होंने कैलाशकीछटा नहींदेखी उनकेलिये यह स्थान परम निर्वृति प्रमोदसूचकयथेष्ट है.

अनुरागबल्लभ. (आश्चर्य्य से) अहो! जनशून्य जंगलमें यहदेव सदन बस्तुतः कैलाशकी शोभाधारन कराहाहै.

वीरेन्द्र०—मित्र! प्रकृतिका प्रादुर्भाव और उसका पूरा परिचयपाने के लिए योगि राजका यह दृश्यमय निवासस्थान स्वर्गीय सुख भोगको तुच्छकरके अनिर्वचनीय एवं परमानंददायक है. और अमानुषस्थानमें यही अनाथ अनाश्रय पथिकों का आश्रयभीहै. (दोनोंआगेबढ़कर सभामंडपमें पहुंचते और करुणापूर्बक श्रीगौरीशंकरजीके चरणों में साष्टांग प्रणिपात करते हैं.)

(और श्रद्धायुक्तखड़ेहोकर स्तुतिकरते हैं)

अनुरागबल्लभ—अहाहा! एकान्तकाननमें भूतभावन भगवान् भवानी के सहित संसारकी असारता दिखातेहुए तथा अमोघ योगाभ्याससेजीवोंको कैसीउत्तम शिक्षादेरहेहैं. धन्यप्रभो:!हर! हर!हर!हर!बम!बम!(गालबजाता और मग्नहोगाताहै) ध्रुपद

(कवित्त) स्फटिकवरनभक्तरक्षककरन, ढक्कासुधासेनदनमत्तमनकेहरन हैं। अंबरबसनत्योंभुजंगअभरन.तीनलोचनबदनकालतिनसों

डरनहैं॥ जटाजूटघनगंगधारनिकरन.भीमभालमेंभगनशूलडमरूकरनहैं।आनन्दकरनदुखदारिद्दरन.भवसागरतरनउमापतिकेचरनहैं॥

(पुनःप्रणिपातकरताहै)

वीरेन्द्रदेव–(बद्धकर संपुटगद्गदस्वरसे)अहाहा! प्रभोः! !धन्यहौ! ! ! ऐसे पतित पावन सर्वाश्रयअयन चरनकमल परागसेवन में हमसे मनोभृङ्गकी कहाँक्षमताहै? धन्य! २ अहा अन्तः प्रेमसागरसे अलस प्रियतमाकेसंग किसअनिर्वचनीययोगावस्थासे स्थितहैं.

अहाः–(सवैया)शिवपूजनकेसमै सैलसुता सिरधारनको करफूलधरे। पगहीन अँगूठनसों उझकै. नवजात पयोधर भारभरे॥ अनुरागभरे त्रयलोचनसों. पियदेख्यो जबै दृगचार लरे। सिहरायउठी पगफूल पड़्यो विहँसी उमाप्रेम प्रमोदकरे॥

धन्यनाथः–(दोहा)जगबंदन नंदनकरन.हरन दुरित भव जाल।
कृपाकटाच्छनितेसदा. शंकर करैं निहाल॥

(प्रणिपात करके) पितरौ! आपकी दयासे दासकी अब अवश्यही सब कामना पूरी होगी. और आपके चरण के दरशन करके जन फिर निष्किंचन कभी नहीं रहता. अहा! बड़े २ मनोरथ हैं, नाथ! आपही जानो (कुछ धीरे२ कहकर मित्रके संग प्रणाम करके बाहर प्रांगणमें आताहै)

अनुरागवल्लभ–अब तुम यहाँ निश्चिन्तहो बैठो, तबतक हम उन लोगोंका पता इधर उधर से लगालावें.

वीरेन्द्रदेव–अच्छा! पर शीघ्र लौट आओ तबतक हम भी यहाँ आह्निक कर्म समाप्त करलें. श्री शिवानी वो शिवशंकर की परिचर्य्या करना आज भाग्योंसे मिलाहै.

अनु०–(अपनी दुधार असि उल्लंग करके) जैसी इच्छा! और हम भी ग्रामसे जो कुछ दूरपरहै भोज्य पदार्थ लाताहूं. (अनु-

रागवल्लभ एकओर और वीरेन्द्रदेव दूसरी ओर होजाते हैं और दुर्जनबंधु आताहै)

दु०बं०—अहह! बचाजी कैसी तेजीसे गुपचुप घोड़ाफेकते चलेआतेहैं, यह नहीं सोचते कि हमारे चचा भी पीछे २ आ रहे है. अहा, वो यह नहीं सोचता कि जो बात देवता भी न जान सकें वो दुर्जनबंधु अनायासही जानलेता है. ह ! ह ह. हमारे बराबर बुद्धिमान संसारमें कौन दूसराहै ? किसकी सामर्थ्यहै कि दुर्जनबंधुकेअभिप्रायको समझ या कर्तव्यको पलटसके. हुँहु ! ये बचा कैसे जल्दी २ भागे आते हैं ! पर यहनहीं खबर कि छायाभी पीछेही संगही लगी चली आतीहै. वाह! क्याही उत्तमतासे हमने इस धूर्तका मतलब समझाहै. कहींजो जलमार्गसे न आते तो हमइसे कभी नहीं पासकतेथे. अहा जन्मभरजिनकेपत्राउलटते २ हाथ टूटगए, दिनगिनते २ उँगलियोंमें छाले पड़गए; ग्रहोंकी गति जाननेकी अभिलाषाही करते २ अपने जीवनकेदुर्ग्रह बनगए, ऐसे २ ज्योतिषीलोग जोबातें नजानसके उसे दुर्जन बंधुअपने प्रपंचपंचांगसे कैसाअनायास जानलेता है ? हहहह ! ओहो !बड़े२वीरोंकोभी करपुत्तलियोंकी तरह बेप्रयास नचाना हमाराही कामहै, और किसकी सामर्थ्य है कि हमारेचक्रसे निकलजाय ? (तालठोंककर) अरेवसंत! तूतो निरावसंतही है. क्यातू हमारेहाथोंसे बचसकताहै ? पहिले वीरेन्द्रको अस्तकरके वसंतको नेस्तकरना कितनी बड़ी बातहै ? और हमसे क्यानहींहोसकता ? देखोतोसही वाह ! क्याही मजा हमनेकिया कि वाहीवाह ! हमीहमतो अबहैं. बसआनन्दसे मयंकमंजरीका सुखभोगें, और फिर मयंकमंजरी हमारीछोड़ और किसकी होसकती है ? उसे हमअपनी गणिका बनावें तबहमारा सच्चानाम. और फिर किसकी सामर्थ्य है कि हमारेबिना उसकोमलमंजरीका

आघ्राणकरसके ? अब त्रैलोक्यमें ऐसा कोई नहीं है जोहमें परास्त करसके (हँसताहै) अहा ! इससमय मारेआनन्द के मुझे कुछ सूझही नहीं पड़ता. वाह ! जैसे कंगाल को महानिधि मिलने से, जो आनन्द होगा उससे भी बढ़कर हमें स्वर्गकी उर्वसीके प्राप्तिकी आशासे हुआहै(ठहरकर) हैं ! हैं !! अभी से इतनी घबराहट ! तब कैसे बनेगा और प्रायः इनकामों में बड़ीगंभीरता चाहिए. उधरमयंकमंजरीको क्याही धोखेबाजीसे एकनजरचलते २ देखलिया. अहा ! उसकी सखियोंको हमने अपने बुद्धिमत्तासे निश्चय करादिया कि दुर्जनबंधु संसार में एकही सज्जन और धार्मिक पुरुषहै, और हमारे ऊपर उनलोगों का विश्वासभी होगया, बस ! अबक्या, लेलिया है, मारा है बढ़के हाथ. (बगलबजाकर उछलकूदकरके खूबहँसता है) हैं ! हैं !! फिर वही चंचलता. देखो ! अपना कार्यसाधन और मनोरथपूरा करना यहीमनुष्यकाधर्म है, और इतरसब धर्म्म कर्म्म सब गप्प है. फिर क्या ? सबबात बनी बनाईही है, किन्तु केवल इधर खूब समझबूझ के काम करनापड़ेगा(आगेबढ़ताहै)

(दोहा) धर्म कर्म आराधना पूजादान बिधान ।
जगमें सबको हेतु यह स्वारथसिद्ध निदान ॥
सुरनरमुनिनगनागखग सकलचराचरजीव ।
स्वारथलागि करैं बहुरि निर्मलनेह अतीव ॥

खैर ! देखाजायगा, अपनीप्रभुताके आगेभवजालके पराभव करनेवाले अपनेभ्रमजालमें हमने इनपशुओंको फसालिया है.देखैं!इससे कैसे कोई निकलसक्ताहै?भाई !यदि इससमय वह जो बड़ेभारी पंडित वेदव्यासजी कहातेहैं,अगरहोते तो वे हमसे अवश्य कूट नीति सिखते. अच्छा अब सावधान होना चाहिए. (दुर्जनबंधु मंदिरमें प्रवेश करता है, और वीरेन्द्र पूजा पाठसे निश्चिन्तहो सन्मुख प्रांगणमें दीख

पड़ताहै.) (स्वगत) अहा! अब इस समय इस उल्लूको यमलोककी यात्रा कराताहूं. अजी हम हमी हैं. ओ होः–

(सवैया)–जोकोउजोगबढ़ायचढ़ायके स्वासहि मारुत मंडलबांधे।
जीतेसदा मकरध्वजको अरु पारदनिश्चलजो करबांधे॥
त्योहिं नरेस महेस सुरेस धनेस अकास पतालहुबांधे।
मोहिंकिशोरिसबै जगको हमहीसों बधैजल्ल जालकेबांधे॥

आगे बढ़के (प्रगट) श्रीमन्महाराजाधिराजकी सदा जयहोय!

(सवैया) वीर सुधीर अमीर वजीर लिए करबालकरैं रखवारी।
भूप अनेक विदेसनके करजोरे सदा जिनके दरबारी॥
झूमैंमहावत मस्तभये नित द्वारन लाखलिए असवारी।
कीन किशोरिको पूरमनोरथ पै लखिए हमरीअबबारी॥

(प्रणाम करके बढ़कर संपुटहो सन्मुख खड़ा होताहै)

वीरेन्द्रदेव–(साधारण भावसे) तुम कौनहो, और कहाँसे आतेहो यहाँ क्या काम है?

दुर्जनबंधु–(सविनय) जी! मैं आपका दासहूं.स्वामिनी मयंकमंजरीका भेजाहुआ आपका मंगल समाचार लेने आयाहूं.

वीरेन्द्र०–(सहर्ष) क्या तुम उन्हींके भेजे आएहो? और दासजो तुमने कहा तो क्या? तुम शूद्रहो?

दुर्जनबंधु–जी मैं कायस्थहूं. नाथ! स्वामिनीने यह आपसे निवेदन कियाहै कि नवसंगमके पूर्वजोरीति पूरीकरनी चाहिए उसके लिए यह (विषपात्रदेकर) मधुरासवदियाहै. (सविनय) कृपाकर आपइसे ग्रहणकरें (बद्धाञ्जलि सन्मुख सिरनीचा किये खड़ाहोताहै)

वीरेन्द्रदेव–(आश्चर्यसे) हैं! प्रियतमाकेसाथ तो कभी भी हमारा ऐसा घृणित व्यवहारनथा, मदिरा-हम,तथा वो कभी स्पर्श भी नहींकरते, फिर जानबूझके क्या प्यारीने धर्मलेनाचाहाहै, यह शास्त्रोंसे महागर्हित और सभ्योंकेलिए सर्वथा अपेयहै, एं! यह क्या कदाचित् प्रियाने हमसे परिहास

तो नहींकिया ? हाय ! यहांतो स्वप्नमेंभी कभी मद्य मांस का संसर्गनहीं हुआ, आज यह क्या ? क्यामेरी परीक्षाली जातीहै, या यहकुछ औरही रहस्यहै ?

दुर्जनबंधु–(सविनय) नरनाथ ! "मधुर" अर्थात् मीठा "आसव" यानी शर्बतहै इसे केवल चीनीका शर्बत समझिए, इसमें सुगंधिद्रव्यपड़े हैं. महीश्वर ! भला किसीकी सामर्थ्य है कि आपको मदिरा देसके.

वरिन्द्र०–(चिन्ताकरते २) क्योंजी प्रानप्यारिकिहां है ? क्यामुर्झाए हुए कुमुदकाननमें आजभी अमावास्याकी अंधेरीछारहेगी? खैर ! (ठहरके) हां ! शरबतकी रीति तो यवनोंमें है, नकि आर्योंमें, तब यहव्योहार क्यों ?

दुर्जनबंधु–धर्मावतार !! स्वामिनी अबकेवल एककोसहीके दूरीपरहै अंदाज़नघंटेहीदोघंटेमेंआजायाचाहतीहैं.मैंउन्हेंपांथनिवास मेंछोड़आयाहूं. अब उनके शीघ्र मिलापमें संदेहनहीं (स्वगत) पर बचा उसनए फूलका रस सिवाय भौंरे के कौन पासका है ? (प्रगट) प्रभोः ! यह शर्बत यवनों की रीति से नहींआया किन्तु सनातन रीतिसे, क्योंकि हिन्दुओं के बिवाह में भी तो शर्बतका हंडाजाताहै, आगे जो आज्ञा ?

वीरेन्द्रदेव–(पात्रको सादरलेकर) अहा आज अमावास्याके दिनभी निःकलंक अंकमाली के दर्शन होंगे, अहोभाग्य (स्वगत) पात्र देखके. अहा ! यहपात्र भी उसी सुधाकरके करकीसुधासे पूर्ण है.परइसभृत्यने क्याकहाथा ? "नवसंगमकेपूर्व" यह क्या ? और इसका अर्थ क्याहै ? क्या अभी नवसंगम बाकी है.अहह क्याप्यारी मुझसे पुनर्विवाह कियाचाहती हैं ? एकबार तो जो कुछ होनाथा सो होचुका, अबक्या ? क्यागांधर्व विवाह अशास्त्रीयहै? नहीं२ क्योंकि आर्षशास्त्रों में इसकापूरापूरा बिधान है. और क्षत्रियों के लियेतो यह सर्वोत्तम रीति है. देखौ "शकुन्तलादि"इसकी जागरुकप्र-

माणहैं.खैर ! तौ नवसंगम कैसा ? (सोचकर) जानपड़ता है कि उसनरराक्षस के हाथ से बचके जो हमारा उनका पुनः संयोग वही नवसंगम हुआ यही प्यारीका भी अभिप्राय अवश्य होगा;क्योंकि कृतान्तके मुख से बचनेपर उसे भी लोग नूतनजन्मा कहते हैं. अस्तु! जोहो (विचारताहै)

दुर्जनबंधु–(स्वगत) इनके बिलंब करने में तो अब हमारा अनिष्ट भया चाहता है क्या आजकुछ उलटी हवाबहेगी !(प्रगट–विनम्रभावसे) मनुजेश्वर ! स्वामिनी मेरी बाट देखती होगी; यदि आज्ञा होतोमैं प्रस्थानकरूं क्योंकि उन्हेंयहाँ लानाभी मुश्कीकोहोगा.

वीरेन्द्रदेव–(पात्रोत्थान करके स्वगत) ऐं ! कैसा आश्चर्य है ? यह प्रियतमाकी दीहुई वस्तुमें इतना विचार कैसा ? कुछही हो, किन्तु आत्मीयका दिया बिष भी अमृतकासा आनन्द देगा, क्योंकि जगद्गुरू शंकरने अपने कृपा पात्रोंका दिया विषभी कंठमें रखलियाथा, और वह उनको अमृत तुल्य हो भूषण भी हुआ (ठहरकर) परंतु इस भृत्यको हमने कहीं देखाहै और इसमें भृत्यकेसे तो एक भी व्यवहार नहीं देखते; भाषा इसकी तो सभ्यों की तरह परिष्कृतहै, कैसा आश्चर्य ? (पात्रोत्थान पुनःकर भृत्यकी ओर गंभीरदृष्टि से देखता है)

दुर्जनबंधु–(नीचीदृष्टिकरके स्वगत) हाय ! विषम समस्या तो इस समय उपस्थित है. इनकी ऐसी चंचलता तो हमारा सर्व नाश किया चाहती है. इसका परिणाम क्या होगा ? हा ! हमारी ओर जब ये इसप्रकारसंदिग्धहो घूर रहे हैं, तो क्यों-कर मंगलकी आशा कीजाय (बल पूर्वक घबराहट रोकना नाट्य करता है.)

(दोहा) अपने स्वारथ सिद्धको. चाहै सबै गँवार ।
भएविमुखका हैसकै. भावीसकल सँवार ॥

वीरेन्द्रदेव-(स्वगत) अहा ! यह प्राणप्रियाका दूत है. हाय ! इस समय कैसी बुद्धि हमारी जड़ होगई है ? और क्यों हम व्यर्थके सोच विचार में अपना समय व्यर्थ नष्टकररहे हैं? क्या यह कोई धूर्तका प्रपंच तो नहीं है (सोचके) नहीं२ हमारे आनेकी खबरही किसे है ? हम ऐसे वीहड़मार्ग होते हुए आए हैं कि इस्की खबर पवनको भी मिलनी दुर्लभहै तब मनुष्यकी क्या गिनती है. वाह ! कैसे हम इधर भ्रम जाल में पड़ेथे. परंतु चित्त क्योंनहीं स्थिरहोता? और हम को अब ठीक यादभी आताहै कि इसी के ऐसाएक पुरुष हमने बसंत के संगमें भी देखाहै.(घबराकर)यहक्या ?कदाचित् कोई इसीदुष्टका तो प्रपंचनहीं है ! परंतुवहक्योंकर हमारा इसमार्ग से आनाजानसकेगा ? (ठहरकर) जो हो इसने प्रियाकानाम लियाहै अतः इसकीअवज्ञा नहींकरनी चाहिए.(पात्रको देखके) और प्यारीके बस्तुकाभी अनादर करना विशुद्ध प्रेममार्ग से रहित है. अस्तु ! इसका अभी निर्णय होजाता है. (कुछविचारने लगताहै)

दुर्जनबंधु-(स्वगत) हा ! हमारा अब सब परिश्रम धूलमें मिला चाहता है इन के इसघोर विचारसे हमें अपने कुकर्म का फल तो नहीं मिलेगा ? अरे क्यापृथ्वी उलटजायगी?अहा! कैसे जालफाँस लगाकर हममयंकमंजरी के पास वीरेन्द्र के दूतबनकर गए, ओहो ! मंत्री के पूछनेपर वसंतकादूत बताया, इससे सहर्ष उन्होंने हमें अपनी बेटी के पासभेजा अहाहा ! क्याही सौन्दर्य्य ! अपूर्व छबि, अद्भुत हावभाव, अद्वितिय भोलापन, आश्चर्य जनक पति प्रेम, देखकरहाय हृदय विदीर्ण होता है. अरे क्यायह कभी भूलसकता है:-

(सवैया)मंजुलमयंकछबिवंतवेसमंदिरमें. सुभगसनेहसाजसाजतसं-
वारहैं।सखियांतयारचहुँठाढ़ीफूलहारलिए. बलितबहारधुनि
गावतमलारहैं ॥ सजिकैकिशोरीगोरीबैठीचारुचौकीचढ़ि-

उरजबहारडोलैदामिनीसोहारहैं।शोभायेअपारलखिलाजत करोरमार. मानोंफूलीकुसुमगुलाबनकतारहैं॥

हाय! यहसुख क्या दुर्जनके नसीब न होगा. अहा! कितनी पट्टीबाजीसे तो सबहालभी जानलिया. हादैव! आज सब बना बनायाघर गिराचाहता है. हा! उसको क्षणभर भी नहीं भोगनेपाया (मुखम्लान होजाता और शरिरकांपने लगताहै)

वीरेन्द्र०-(स्वगत)कैसाआश्चर्य है कि इसकीमुखाक्रांति निरपराधी चन्द्रपर दांतचलानेवाले राहुकीसी कलुषित और भयंकर दिखाई देती है. शिशिर कालमें प्रातः स्नानकरनेवाले बूढे ब्राह्मणोंकी भांति यह कांपने क्यों लगा? जोहोय! इससमय यातो हमारी बुद्धिपर नूतनदृश्यका परदापरगया है, अथवा इस कौतुकमें कुछ अवश्य रहस्य है (प्रगट) क्यों जी तुमारानाम क्याहै? तुमें तो हमनेइसके प्रथमकभीभी मंत्रीमहाशयके यहां नहीं देखा.

दुर्जनबंधु-(स्वगत) हाय!जानपड़ताहै कि अब इसदुष्टके प्रपंच पंचाननके मुखसे बचनाकठिन जानपड़ताहै (प्रगट-सानुनय-रुकरुककर)जी-दासका-नाम-हिरण्या-क्ष-है-है-धर्मावतार-मैं-मंत्री-महा-शय-का अत्यंत-विश्वासपात्रहूं-नाथ!-कुटुम्बविहीन (अब बराबर बोलताहै) और अनाथजानकर उनोंनेही मेरालालन पालनकर इतनाबड़ा किया.नरनाथ!अंदाज़न दसबरससे मैंउन्हींके कार्य्यकेलिये सिंधकीराजधानीमें रहताथा,और इधर कईएकदिनहुए कि मैं यहाँ आयाहूं. महोदय! स्वामिनी मयंकमंजरी मेरे ऊपर अतीव कृपारखती हैं. अतः यही कारणहै कि आपने मुझे नकदाचित्दृष्टिपूत कियाहो?(ठहरकर बातटालनेकेलिए) प्रभोः! स्वामिनी अबआगई होगी यदि आज्ञा होतोजाकर उन्हें लाऊं क्योंकि वो आनेके लिए अत्यंत उत्कंठितहोंगी

वीरेन्द्र–(स्वगत) वाहवाह ! इसकी बातोंनेतो सबहमारी बुद्धिहरके माया मयी मोह मदिरा पिलादियाहै. इसे मंत्रीके यहां तो मैंने कभीनहीं देखाहै, पर यह उनका कृपापात्र बनता है और प्रियतमाका भी अनुग्रहीत सिद्धकरताहै. परंतु किसीसे यहसमाचार कहनेकी प्यारीने प्रतिज्ञाकीथी इससे उन्हींका भेजाहोगा, कदाचित् आनन्दवल्लभ ने पिताजी से सब समाचार कहाहो, और हमारे आनेकी बात फैलीहो. पर हमारे आनेके मार्गके कहनेकी तो उन्हेंभी पूरीमनाहीथी, क्या उन्होंने मेरे आनेका गुप्तमार्गभी तो नहीं कहदिया ? नहीं ! नहीं !! आनन्दबल्लभकी ओर हमें किंचित्भी संदेह नहीं है. वाह ! रे ! कैसाघोलमट्ठा इससमय हमने किया (ठहरकर) ऐं कैसे हम निठुरहैं कि प्यारीतो इसकी बाट देखतीहोगी और हम इधर उधर संसारभरकी नीति खर्च कररहेहैं. अब यहप्यारीका प्रेमरस पानकरके इसे पारितोषिककेसंग बिदाकरना चाहिये.

दुर्जनबंधु–(स्वगत) हाय ! हमने कैसापापकिया है ? और इसका क्या प्रायश्चित्त होगा ? गोविन्द ! गोविन्द !! अब हमारी सब नास्तिकता धूलमें मिलगई. संसारी लोग ! अबकभी तुम दुर्जनका विश्वास न करना न करना.

ठीककहाहैः–(दोहा) छिनहुन दुर्जनसेकरै प्रीतिरीति पतियाय।
अमियबचनबोलैहृदय.हालाहलअधिकाय ॥ (गमनोद्यत)

वीरेन्द्रदेव–ठहरो २ तुमें उचित पारितोषिक मिलेगा. (दुर्जनबंधु इसबचनकोसुन और इसकामर्मसमझ भागनेकेलिये पांव बढ़ाताहै और वीरेन्द्रदेव उसकाहाथथामकर पासबैठालेता है)तुमघबराओमत ! हमतुमें रसपानकर शीघ्रबिदाकरतेहैं.

दुर्जनबंधु–(हर्षितहो–स्वगत) अहाहा ! वाहरे दुर्जनबंधु ! क्याही मूंजीको जालमें फँसायाहै किसकी ताकतथी कि इससिंह का सामना करता.

वीरेन्द्रदेव–(पुनः पात्रोत्थानकरके) अहा ! यह प्रियतमाकाभेजा स्वर्ग दुर्लभ सुधारसहै.

(स्वगत) भूतभावन भवानी पति भगवान् भोलानाथ भावुकभक्त का भावभरी दृष्टिसे सदैव भलाकरैं (पात्रमुँहसे लगाताहै)

दुर्जनबंधु–(महामुदितहोकरमंदस्वरसे) अहाहा ! अबलिया!२ बस ! अबमयंकमंजरी हमारे फंदेसे कबछूटसकती है, चलो अब बसंतको यहीं ठिकाने लगाय आजही उससुन्दरीसे अपना मनोरथ पूर्णकरूं (मंदहास्य)

वीरेन्द्रदेव (स्वगत–घबराकर) हैं ! हैं ! ! यहतोविषहै. हाय !हाय !! अबहमारी बुद्धि इतनी ठोकरखानेपर ठिकाने आई ;हाय! यहचांडाल दुर्जनबंधुहै. हेराम! सत्यानाशी बसंतने हमारा भी सत्यानाशकिया (क्षोभसे आधारस सहसाकंठके नीचे उतरजाता और आधा उसीपात्रमेंउगलदेताहै) क्योंरे चांडाला (इतनासुन दुर्जनतीव्रतासे उठकरभागा चाहता है कि वीरेन्द्र पात्रभूमिमें रखकर बेगसे उसे पृथ्वीपर पछाड़, छातीपरचढ़के तरवार खींचलेताहै)

दुर्जनबंधु–(बिकलहो) हाय ! हाय !! मैंने क्याकिया २ नाथ! उपकार का यही क्या पारितोषिकहै ? अरे ! क्योंमें स्वामिनीका संदेशा लेकर यहांआया. हा ! दैव ! इसीलिये मयंकमंजरी ने मुझे भेजाथा (स्वगत) हायरे अब कहान कहाँ तुमारी नास्तिकतागई ? सत्यहै ! गालबजानेवाले सत्यानाशी देखें कि बुरेकर्मोका यही उचित प्रतिफलहै.

(दोहा) सबै हृदयके पापको हरिहर देखत वार।
बिनादिये नाहींरहैं उचित दंड उपहार ॥

अब पुराण धर्मशास्त्रके निन्दक पिशाचगणकहांहैं ? (प्रगट) नाथ ! बचाओ २ हायराम ! हेराम ! ! अरे बापरे ! दादारे ! मैयारे ! मरेरे ! हायरे !

वीरेन्द्र०–(क्रोधसेलाल२ आंखेंकरके)रेचांडाल ! नराधम!! नर पि-

शाच ! नीच ! अरे ! दुर्जन, दुष्ट, दुर्विनीत ! ऐसाछल ? इतना निर्भीक, तैं प्यारी के नामको कलंकित करनेकेलिए उसका दूत बनाथा ? नर राक्षस ! अबअपने बाबाबसंतको क्योंनहीं पुकारता, हत्यारे ! चल बसंतकोभी तेरेपीछे हम भेजतेहैं. लेअधम अबतू ईश्वराराधनतोकरले. देखतेहैं कि कौन इससमय तेरी रक्षाकरताहै. अरे धर्मद्वेषी, पापी. देख तेरी मायाका कैसा प्रतिफल मिलताहै.

दुर्जनबंधु-(विकलस्वरसे) हायबापरे ! मरे ! २ नाथ ! मुझनिर्दोषी परक्षमाकीजिए. निरपराधी ब्राह्मणका प्राणजाताहै. हायरे मरेरे ! (चिल्लाताहै)

वीरेन्द्रदेव (छातीदबाके और क्रोधसे अपनाओठ दांतोंसे दबा२के) रे सत्यानाशी, पामर, नपुंसक ! ऐसायुग अभी नहीं आया कि अन्त्यज और शूद्रभी महर्षि विश्वामित्र का दृष्टान्त दिखा दिखाकर ब्राह्मण बनबैठेंगे. अरे क्रूर ! दोषी ! होके तू निर्दोषीही अभीतक बनताजाताहै. विश्वासघाती ! देख ! शूद्र होके ब्राह्मण बनता, नीच ! इस ढिठाई का बदला कैसा धर्मराज तुझेदेते हैं. ठीकहैः- "अन्तः प्रच्छन्न पापानां शास्तावैवस्वतो यमः" अबहमने तुझे खूबही चीन्हा. अरे कृतघ्नी आजतो तूहमें मारही चुकाथा; पर ईश्वरहीने इस समय हमारी सहायताकी. वाहः-

झूलना ॥

रामकोनामसुनि मुक्तिकेधाम पुनिनेहकेठाम उनि शत्रुता-रच्यो। सोइमनमान कियप्रेम पहिचानगुरु देवकीआन हिय नेहधारच्यो ॥ कालकेगाल बिषबूंद बहुव्याल जिनकीन रछ-पाल ममकालटारच्यो। आजतोदेखि श्रीकिशोरि मनपेखि यह कर्मकेरेखपर मेखमारच्यो ॥

हाय हाय ! दीनबन्धोः ! कुटिल कराल कलिकाल में काल रूपी नर राक्षसों से कैसे धार्म्मिकों का उद्धार होगा ?

नाथ ! तुमीं जानो . रक्षा करो, हे शिव ! २—

दुर्जनबंधु—(रोकर) अरेबापरे बाप, हाय दैयारे दैया, मरेरे. अरेकोई बचाओरे ! महाराज, महा-राज—बचाओ २ अब-छो-ड़-दो ३

वीरेन्द्र०—अरे धृष्ट ! तेरा बुराहो ! विधर्मी कहांका. अरे यम-लोकमें भी स्थान तुझे नहीं मिलेगा, पापी, नजानें तुझे किसनर्ककी व्यवस्था मिलेगी, यह भगवान् यम धर्मराज-ही जानें (तीव्रतासे एकखड्गमारता है, और दुर्जनबंधु द्विशिरहो मृतकहोजाताहै; पश्चात् शवको उठाकर बाहर जंगलमें प्रक्षेपकर अपने स्थानपर आकेविषकणकी उग्रता से गिरकर अचेतप्रायहोजाता है)

(हाथमें कमण्डलुलिये जाबालि ऋषिका प्रवेश)

जाबालि—(प्रेमपूर्वक) (दोहा) जगसिरजै मेटैभरै धरैनाटकाकार।
सूत्रधार संसारको मंगलमय निरधार ॥

पुनः—(दोहा) जटाजूट सिरगंगछबि व्यालमालबिधुभाल।
लैत्रिशूलअरधंगशिव उमासहित रछपाल ॥

सारंगराग ॥

"सारंग" जयतिजय शशिशेषर शिवईश।
बसैबाम दिसिबाम मनोहर प्रेम भरितउरदीस ॥
भजैशारदाशेष सनकमुनि देवादिकहु मुनीस।
श्रीकिशोरि प्रभुदयाधामह्वै गये अबैक्योंरीस ॥

(ध्यानावस्थितहो आगेबढ़ते २ शिवमंदिरमें जाकर भ-वानी पतिकी पूजाकरतेहैं, और फिरती समय साश्चर्य) हैं ! यहां यह सब क्या कर्म काण्डहुआहै ? शिव ! २ यहां रक्त प्रवाह कैसा ? हरे ! २ (समीपजाकर) हाय ! (मद्य देखके) अरे नहीं नहीं, विष !! हृदय विदीर्णहुआ (वीरे-न्द्रदेव को पहिचानकर) बेटा बीरेन्द्र ! गोविन्द ! २ अरे अवंतीपुरके प्रियपुत्रवीरेन्द्रकी यहदशा? शंकर ! २ हा ! यह किसचांडालका षड़यंत्रहै ! पर यहसब रक्तप्रवाह दिखाता

है यह कहांसे आया ? हरेकृष्ण ! २ (वीरेन्द्रकीनाड़ीबिचार पूर्बकदेखकर-कुछहर्षसे) भला अभीतो इसमें प्राणशेष हैं. प्रभो ! तुमारी महिमा अनंतहै. दीनबंधो ! तुमारी इच्छा. नाथ ! इसकी सहायताके हेतु दासको तुमींने प्रेरणाकर भेजा तो अब इस निर्दोषकी रक्षा केवल दयालु, तुमारेही हाथमें है. हे ! जगन्नाथ ! धर्म्म तुमारेही आश्रयसे निर्भीक खड़ाहै (बिचारकर) ठीकहै " जबतकश्वासतबतकआस" अभीइसके जविनकी आशाहै, आगे ईश्वरेच्छाः—

(दोहा) कठिन कामहू होतहै कियेबिपुल उपचार।
रसरी काटै शैलको सरिता बहै पहार॥

हाँ ! हाँ ! अबशीघ्रही इसका उपचारकरनायोग्यहै. भगवन् तुमींजानो (मुखपर छींटामारता और जलदेताहै) नाथ ! निरपराधीबच्चेकीसहायताकरो (जटामेंसेकुछजड़ी निकाल कर अंगुलियोंके बलसे उसकारस वीरेन्द्रकामुख बलात् खोलकर देताहै और यह कंठकेनीचे उतरजाताहै. यहदेख कर ऋषिका मुखारबिंद हर्षोत्फुल्ल होजाताहै.

अहा ! :-(दोहा) दयासिंधुकी महिमा. बरनि न जाय।
चींटी शैल उठाये. उड़ि उड़िजाय॥

गोपीजनबल्लभकी अशेषकृपा इसपर है, तो अबप्राणकाभय सर्बथाजातारहा(ठहरकर)हाँ!एकबार और नूतनजड़ीकारस यदि दियाजायतो तत्काल अमोघगुण दायकहो (सोचकर) अब विलम्बकी आवश्यकता नहीं है, आश्रमकीओर शीघ्र चलना चाहिए, पिछे सबरहस्यभेद मालूम होतारहेगा. "हरेकृष्ण हरेकृष्ण कृष्णकृष्ण हरेहरे; हरेराम हरेराम रामरामहरेहरे" (यहीबारम्बार पढ़ते२ चलेजातेहैं और इधरभोजनादिकी सब सामग्रीलिए अनेक वितंडाबाद सोचताहुआ प्रसन्न वदन अनुरागबल्लभ आताहै)

अनुराग०— (दोहा) बंकटीलो प्रेमपथ जाको वार न पार।

मिलैथाह डूबै नतो तरुवारनकी धार ॥ (आगेबढ़ता है) (रक्तदेखकर) हैं ! यहक्या अमंगल दिखलाईदिया?(ठहर कर) यद्यपि रक्तप्रवाहका दर्शन क्षत्रियोंकेलिएतो मंगलही है पर यहां यह कहांसे आया ? (शीघ्रतासे आगे बढ़ताहै) (घबराकर) हाय ! २ प्यारे मित्रकी यह दशा किसने की हेराम ! २ (आँसूगिराते २ पाइर्वमें विषपात्रदेख और विचार कर) नारायण ! २ यहतो प्राणघातक ! हालाहलहै शिव! २ अरे किस नरराक्षसका यह कर्महै ? हाय ! देखकर हृदय विदीर्ण हुआजाताहै (रोते २) हाय ! प्यारे ! यहक्या अनर्थ हुआ ? हमलोगोंको अनाथकर तुम कहां पधारे ? हेराम ! अनाथिनी मुग्धबाला मयंकमंजरीकी यह समाचार सुनके क्या दशाहोगी ?

प्रभो ! जैसी तुमारी इच्छा ! हाय किसशत्रुपक्षीका यह कामहै. सोचनेसे जानपड़ताहै कि यह बसंत या सुमंतका षड़यंत्रहै. हा ! सत्यानाशी पामर! अरेचांडाल सत्यानाशहो तेरा, पिशाच. तुझेकहीं नर्कमेंभी स्थानमिलेगा (रुदनकरते २)

(सवैया) नहिंछोड़े बुरेमगको कबहूं करिपापसदा सुरलोक चरै।
परकी तियसंपतिदेखतही अपनावनको हियरोसिलरै ॥
सहिकैसिरजूतिन कीबरषातबहूं हियलाज न नेकुकरै।
नहिंपाइकिशोरिकीसंपतिको 'नरकी' नितआपतआगजरै॥

(क्रोधसे आंखेंलाललालकरके गंभीर स्वरसे) हाय ! मित्र तोगये पर इनके मारनेवाले सालेको अभी इस्काप्रतिफल देताहूं; बिना उसदुष्टका बधकिए अब मुझे चैनकहां? (सब साहित्य पटक और झपटके तलवार खींचकर शीघ्रतासे निकल जाताहै और नेपथ्यसे उसके अश्वोंकी टापकाशब्द सुनाई देताहै)

(परिचाकेसंग मयंकमंजरी आती है)

मयंकमंजरी–प्रेमसे(दोहा)–यहीप्रीतिकीरीतिअलिबिनमांगेहियदेत।
तऊनमांगिमोंमिले भखिनिगोड़ीहेत ॥

देखेंकब प्रानप्यारेके दरशन होतेहैं. दोनों सखियोंको वहीं बैठाकर बड़ी २ कठिनाई खेलकेतो यहांतकआई ! (ठहर कर) अरेदई ! मेरी दाहिनीआंख निगोड़ी क्यों फड़करही है ? हाय ! भगवन् ! त्राहि ! २ देखो विचारी अबलापर दयाकरना. हेनाथ ! अबप्रानपतिका जादेबियोग नहींसहा जाता. हेभगवान् भवानी नायक ! दुःखिनीपर दयाकरो.

"रागजोगिया" भवानी नायकगतिमेरी ॥
गजकपित्थवत दशाआपनी कही सकलटेरी ।
रिनियां निज चरननकीकीजै काटि दुःखबेरी ॥
हरोपापत्रयताप त्राहिप्रभुदयादृष्टि हेरी ।
श्रीकिशोरिकी ओर निहारो आशापूरिघनेरी ॥

(आगेदौड़कर गौरीपतिको प्रणाम करके घूमतीहै) प्राणनाथकहां है ?

(सबव्यवस्थादेखकर) हाय !२यहक्या ? खून यहां कैसा? अरे यह प्राणनाथ ऐसे क्योंसोये हैं (प्रेममेंमत्तहो वीरेन्द्रसे लपटकर) नाथ ! दासीसे कौन अपराधभया जो इसकी ओर नहीं देखते. प्यारे उठो२इसवेसमें तो तुमकभी नहीं सोतेथे आजक्याहै ? क्या इससिमय सबरास्तेकी थकाहटनिकाललोगे ? (खूबहिलाती और जगाती है पर बीरेन्द्र नशेसे अचेतही बनारहताहै) हैं ! यह कैसा है ढँग,प्यारे! "जागतही सोवतरहै वाको कहाजगाय" प्यारे ! अबमेराशरीरकांपा जाताहै और समयभी थोड़ाहै, और हमेस ऐसी हँसीभी किसकामकी हाय ! तुम क्यों इसअभागिनीसेरूठ गए ? प्यारेउठो ! २ जल्दी अब उसनर पिशाचका बधकरो और अपने बीरनामको चरितार्थकरो दोनोंसखियां तुमारी राहदेखरहीं हैं (बहुतजगाती है पर बीरेन्द्र नहीं उ-

ठता, और मयंकमंजरी विषपात्रको देखकरकांपउठती है) हाय! २ यहक्या ? मद्यहै . रामराम ! यहभी तुमारा कर्म है ? प्यारेनहीं २ क्षमाकरना . अरेराँड़ जीभ ! तू निर्दोष पतिकीनिन्दा करनेपरभी नहीं गलगई (बिचारकरके) यह तो बिषहै . हाय ! और यहलोहूकैसा (ठहरके) हे राम ! क्या प्यारेने इसे पीतोनहींलिया ? हा नाथ ! किसबैरीने कबका यह बदलालिया राम ; अरे मुझे पथकी भिखारिनी कंगालिनीकरके चुपचापतुम कहाँ सिधारे (शिरमें कराघात करके रोतीहै)

तांबूलबाहिनी–राजेश्वरी ! सोचमतकरो और बिनाकोई ठीकबात बिचारे दुख न सहो–

मयंकमंजरी -हाय! अबभी क्यासंदेह रहगयाहै? अरी तांबूलबाहिनी बसप्यारी अब तू मेरी चिताकी तयारीकर कि मैं जल्दी प्राननाथके पास पहुंचकर सेवाकरूं. हाय! वो मेरीबाटदेखतेहोंगे . हाय प्रानप्यारे ! (रोते २ अचेत होजाती है और ता० वा० घबराके रोते २ जल लाने बाहरजाती है और उतनेहींमें जड़ीलिए जाबालिऋषि आते हैं) (नेपथ्यसे) गोबिंद दामोदर माधवेति "(पुनः)"अजातपक्षा इवमातरंखगाः"

जाबालि०–(प्रवेशकरके) ऐं यह अबला कौनसी और किसकी, मूर्छितपड़ीहै ? (समीप पहुंच और बिचार पूर्वक देखकर) आहो ! अब सब वृत्तजाना ; प्रभोः ! तुमारी लीला मानव बुद्धिसे अगम्यहै . नाथ ! तुमारा अद्‌भुत कौतुक कौनजान सकताहै ? प्रथमबीरेन्द्रके मुखमें जड़ीकारस निचोड़ते हैं और तदनंतर जलसेंचनकरके मयंकमंजरीको सचेतकरतेहैं)

मयंकमंजरी. (संज्ञालाभकरके उन्मादिनीकी भांति) नाथ ! तुम क्यों मुझे ठगतेहो ? मैंकभी तुमारी बात न सुनूंगी चलो हटो. हाय ! मैंतो भिखारिनि अबवही भिक्षालूंगी. यदिइच्छा

हो कृपापूर्बकदो, और न दोगे तो अच्छाजानेदो, तो मैं अपना प्रान तुरंत देतीहूं. हाय ! प्यारे कहाँभागे, तनिकतो ठहर जाते (खड़ीहो, होकर फिर गिरके अचेत होजाती है)

जावालिऋषि--हेकृष्ण! बड़ेसंकटमें प्राणपड़ा है, इसकन्याको तो तात्कालिकोन्माद होगया(सोचके)प्रभोः मृगांकमौले! तुमारी महिमा,हा ! सुमंतनेकैसाकठोर दुराचार किया है.छिः २ और कलजुगी पापी पंडितोंने भी कैसा धर्मको कठपुतली बना लिया है. हरे हरे ! (उन्मादोन्मोचकमंत्र से अभिमंत्रित करके जलको छिड़कता है और मयंकमजरी सचेतहो उठबैठती है)

मयंकमंजरी–हा ! प्राननाथ ! तुम मुझे किसके भरोसे छोड़के चले गए, इतनी निठुराई तो तुममें कभीभी नथी, कौनसाऐसा अपराध दासीसे बनपड़ा जो आश्वासन तक नहीं करते, और जो कदाचित् होभी तो तुम खुसीसे छमा न करोगे तो मैं किसके सामने हाथ जोड़ पैरोंपर लोटूँगी. जीवितेश्वर! क्या इसी दिनके लिये मैं जीतिरही ? इसीलिए तुमनेभी इतना अलौकिकप्रेम दर्सायाथा ? हा ! मैं नहीं जानतीरही कि मेरे फूटे कर्मोंमें यही लिखारहा (छातीमें कराघातकर के जावालीऋषि को देखती और अचेत प्रायहो-(स्वगत) हाय ! यह कौनहैं (चीन्हके)(झपटकर पावोंमें गिरपड़ती है) नाथ ! गुरुदेव ! अपराधक्षमा–मुझे बचाओ. देखोमेरे सामने जमदूत मेरेप्यारेको लिएजाते हैं-(रोती है)

जावालिऋषि–(मयंकमंजरी को गोदी में उठाके–गद्गद स्वर से) सती कुलकी महिमा बढ़ानेवाली, बेटामयंकमंजरी ! शान्त हो ! पुत्री ! किसकी सामर्थहै कि सतीके पतिको कोई हर सके. सावित्री ने अपने सतीत्वके बलसे सत्यवानको पुनः जीवित कियाथा, सो तू बेटाशान्तहो २ औरमतघबरा(आंसूपोंछके) बेटा ! सुनो घबरानेका समयनहीं-सावधानहो !

मयंकमंजरी–तातसत्य है. पर अब तो हमारा सर्वस्व लुटगया हम क्या करें ? (रोदन)

जावालिऋषि–(आश्वासन करके) सुनोबेटा ! यह सब दुःख तुमारे पिता के प्रतापसेही भया. अस्तु ! भावी बड़ी प्रबलहै, पर यह हमकहे देते हैं कि तू चिर सौभाग्यवती होगी, किन्तु इससमय धैर्य्य धारणकरो. देखो बेटा जो कहीं दुष्ट बसंत यहां आजायगा तो व्यर्थ तुमारी और वीरेन्द्रकी जान ले लेगा, क्योंकि इससमय वीरेन्द्र .... (रुकगया)

मयंकमंजरी–गुरुदेव ! जब मेरासर्ब नाशही होचुका तोफिरमरनेही से क्याडरहै ? हाँ ! यहलालसारही कि प्यारेके गोदमें सुख से सिरधरके मरती, पर आज भी मैं उन्के पाने के लिये सुखही से मरूंगी.

जावालिऋषि–ना बेटा ऐसानहीं करना-क्यातुम उन्मादिनी भई हो ? देखो तो वीरेन्द्र का स्वास चलरहाहै (स्वासकानाम सुन, तीब्रता से ऋषि की गोद से उतर वीरेन्द्रकी स्वास देखतीहै. और जीवितजान कुछ स्वस्थ होती है)

मयंकमंजरी–पूज्यचरण ! यहक्या लीलाविस्तारहै. कुछ समझ में नहीं आता.

जावालिऋषि–(स्वगत) इस रमणी रत्नका बिशुद्ध प्रेम अचल है, सच्चीबात सुनके कभी यह धीरनहीं धरेगी, परझूठभी तो नहीं कहनाचाहिए (प्रगट) बेटा ! वह जो पात्रमें तुम रस देखरही हो, उसके नशेसे बीरेन्द्र अचेत हैं यह हमने नाड़ी देखकर अनुमान कियाहै और अभी यह बिना पाँच चारघंटे के सचेत नहींहोंगे, फिर तबतक तुमारा यहाँ रहना उचित नहीं होगा; ईश्वर नकरै कि वह दुष्ट यहाँ आजाय नहीं तो बेटा महा लंका काण्ड उपस्थित होजायगा.

मयंकमंजरी--(घबराकर)तो हेनाथ! अब जो आप कहें वही दासीकरै.

जावालिऋषि--बेटा ऋषियों की बात मिथ्या मत जानना.

मयंकमंजरी–(सभय) नाथ यह आप क्याकहते हैं ? मैं मरनेतक तो इसे मिथ्या समझही नहीं सकती, यदि सूर्य पश्चिम उदय हो और अग्निसे हिमकी उत्पत्तिहो, पर सर्वकाल दर्शी महर्षियोंकी वाणी मिथ्या नहीं होसकती है कदापि नहीं !! इसलिए जो आपकी आज्ञाहोगी वही मैंकरूंगी.

जावालिऋषि-पुत्री! जाओ, तुमशीघ्रही अपनेहृदयबल्लभको पाओगी (मयंकमंजरी चरणोंपर गिरकर प्रणाम करती है–और इसे उठाकर) तनये ! इस समय यही उचितहै कि तुम यहाँसे शीघ्र प्रस्थानकरो-देखो ! हम फिरभी तुमे सचेत करते हैं, क्योंकि यदि वह दुष्ट देरहोनेसे कदाचित् यहां चलाआवेगा तो निरीह अचेत वीरेन्द्रको कभी जीता नछोड़ेगा और कहो कि तब तुमारी इस आशालता की क्यादशा होगी ? अतः तुमारे जानेसे वो सब किंचित सावधान रहेंगे.

मयंकमंजरी–(घबराकर) नाथ ! भगवान् ऐसा न करें ! प्रानप्यारे का कुछभी–

जावालिऋषि–तथास्तु ! अच्छा अब तुमजाओ, और देखोबेटा त्रैलोक्य में किसीकीभी सामर्थ्य नहीं है कि तुमारीसी सती पति परायणाका सतीत्त्व नाशकरसके. तुम निश्चिन्त रहना, चैतन्यहोनेपर हमवीरेन्द्रको शीघ्रही तुमारे समीप भेजेंगे. (जललिए ताम्बूल वाहिनी आती है और मयंकमंजरीको सचेतदेख और गुरुवरका दर्शनकर आश्चर्यसे)

ताम्बूलवाहिनी--स्वामिनी ! यह क्या ? ये कौन महा पुरुषहैं ?

मयंकमंजरी-अरे तूभूलगई वाह ! ये हमारे कुल देव नहैं.

ताम्बूलवाहिनी--हाँ ! हाँ !! ठीकहै अब चेतआई (दंडवतकरती है)

जावालिऋषि–सुखिनीभव-(मयंकमंजरी भवानीपतिको प्रणामकर और पतिकाचरण स्पर्शकरके चलते २ जावालिसे) नाथ ! दासीपर कृपादृष्टि रखना और हमारे उचितानुचित अपराध को क्षमाकरना (चरण स्पर्श पूर्वक बंदना करती है)

जावालिऋषि--वीर प्रसूभव ! (दोनों गईं) अब हमभी चलें (वीरेन्द्रके समीप एकपत्र डालकर प्रस्थान.)

वीरेन्द्रदेव--(सचेतहोकर) गोबिन्ददामोदर! हरीहर!! २ अहा जगदीश्वरकी कृपासे आजबड़ेभारी कालग्रहसेबचे (इष्टदेव को प्रणामकरता है) यह क्या है ? (पत्रखोलकर पढ़ता है. "तुमारे अचेत होनेसे सबलोग नवद्वीप सिधारे. अब तुम शीघ्र वहाँजाकर बिचारीअबलाका उद्धारकरो." (आश्चर्य से) ऐं ! "सब लोगन व द्वीप सिधारे" ? ऐं ! हाय हमारी इसदशा से प्यारी के हृदय में कैसी चोटलगी होगी. हरे हरे ! अब क्याकरें ? अस्तु ! जो होनीथी सो हो गई. अब यहाँ उपेक्षाकरना भी व्यर्थ है (सहसा उठकर बाहर आता और अश्वारूढ़ होकर प्रस्थानकरता है)

(शीघ्रता से अनुराग बल्लभका प्रवेश)

अनुरागबल्लभ--अरेचांडाल ! नर नाशक ? कबतक तू बचेगा ? और तूजानता है कि बिना तेराप्रान नाश किये मुझे सुख और चैन मिलेगा ? कभीनहीं ! स्वप्नमें भीनहीं (चारोंओरघूम कर) ऐं यहस्थान सूना क्यों है ? मित्र कहांगए ? (कटार ज्योंही अपने कंठमें मारनाचाहता है त्योंही आकाशवाणी होती है) "बेटा अनुराग! धीरधर. वीरेन्द्रने सकुशल नवद्वीप की यात्राकी,सो तूभी वहींजा और अब तेराभीकल्याण होगा (तलवारको म्यानमें रखकर) हैं ! यह किसनेअमृत बर्साया ? क्यासचमुच मित्रवंगदेशगए ? और उन्हें किसने जीवदान दिया ? हे दयामय ! तुमारी गति मान व बुद्धि के अगोचरहै (बाहरजाकर वीरेन्द्र के अश्वकोभी नहींपाता और झाड़ी में दो टुकड़े दुर्जनबंधुके देखताहै) अहाहा! घोडा नहीं है इससे जानपड़ताहै कि ठीक मित्रगए. तो वाह यह पापी यहांपड़ा पड़ा अपनेपापोंका फल भोगरहाहै ? (सहर्ष) खूबभया बचाजी को उचित प्रतिफल दियागया (उसका

सिर लेकर और वस्त्रसे आच्छादित कर स्वयंअश्वपर आ-रूढ होजाता है)

(घबरायाहुआ आनन्दवल्लभ आताहै)

(आनन्दबल्लभ)--अहा! नजाने मेरे आनेमें देरहोनेसे मित्रने क्या क्या नसंदेह कियाहो, पर कामतो बनगया (मंदिरमें जा-कर चारोओर घूमताहै) वाह यह तो सूनसान पड़ाहै, किसी का चिह्नभी नहीं दृष्टिपड़ता . क्या मेरे आनेके पहिलेही वे लोग अन्यत्र कहीं चलेगए ? कदाचित् ऐसही हो तो फिर चलो उनलोगों का अब अनुसंधानतो लें .

इति तृतीयांकः ॥

अथचतुर्थाङ्क ॥

(स्थान बसंत देवका एक सुसज्जित प्रकोष्ठ उसमें बसंत बिचार मुद्रासे बैठाहै)

बसंतदेव–हाय ! एक महीना होताआया, अभीतक प्रिय परमबंधुदुर्जन नहींलौटा, क्या कारणहै ? क्यों उसे बिलम्ब लगा ? उधरमंत्रीमहाशय!बल्के अबहमारेप्रियससुरजीभीनहींआए, और उन्होंने तो शीघ्र आनेका प्रणभी कियाथा तिसपरभी नहीं आए ? और यहाँसे कई एक पत्रभी गए परंतु किसी का कुछपताभी नहीं लगता . न उत्तरही आया (बिचारकरताहै) और बीरेन्द्रका भी कुछपता नहीं लगता, यह क्या गड़बड़ाध्याय है कुछसमझमें नहीं आता (ठहरकर) जो होय ! अच्छा अबसरोजनी को निकालकर कामिनी और सौदामिनी को अपनी गणिका बनाऊं और मयंकमंजरी तो अर्द्धांगिनी होहीगी . हा ! हृदय विदीर्ण होताहै कि हमारी पहिली स्त्री, छिः छिः जो कुलटा थी, निकलगई. उस्का आंसू मयंकमंजरी से पुँछगया, और क्या अबकदापि मयंकमंजरी हमारे पंजे से छूटसकती है ? (सोचता है) हाय ! यह बालिका तो किसीतरह हाथपर चढ़तीही नहीं पर आशायहीहै कि उसबुड्ढे ने बड़ाभरोसा दियाहै जोहोय, योंनमानेगी तो फिर क्याहोगा, एक दिन बलप्रकाश पूर्वक काम सिद्धकरलेंगे. क्योंकि अब बिनाजालसाजी कियेकार्य पूर्णनहीं होगा हां ! इससमय प्रिय दुर्जनबंधुहोता तो कैसा काम निकलजाता. (क्रोधमेंभरी आलुलायित केशी सरोजनी का प्रवेश) (घबराकर) हाय ! हाय ! आजफिर यह हत्यारिनी आई ? (भयसे विहूवल होताहै)

सरोजिनी—क्योंजी बसंत! मेरीबातों के जवाब देनेका आजहीकरार है न? तो जल्दीकहो, क्यातुमसुझे छोड़ोहीगे? हाय! मैंने तुमारे लिए कुल, लोक, लाज, सभीको मिट्टी में मिलाया और तुमने वादाकर और कसम खानेपरभी अपनी बातें न निबाहीं—

दोहा अरे जालिया जातको जुलमी जालिम जोर।
करि बरजोरी लीनमन मृदुमुसुकानि मरोर॥
धानपान औखान छुटि तरफरात नितप्रान।
मैं तेरे हिय में पगी जानै सकल जहान॥
अबतो कठिन बनो निठुर कहो कीजियेकाह।
चाहतिहारी मोहिअरु तोहि और की नाह॥
(बैठके अँसुवाढार पुकार पुकार रोनेलगती है)

बसंतदेव--(स्वगत) आजकल तो इसने एक महाप्रपंचनाधाहै और इधर यह ऐसा अनुराग दिखारही है कि मानो हमी को चाहती है:—

(सवैया) देखिकिशोरि जू मोहिअबै. मचलावति मैनपगी मतवारी।
आँखिन आँखमिलायरहे. फिरैसंग न छोड़त नेकुदिलारी॥
छातिनसों लपटीहीरहै. गहे अंग अनंगन चंग बिचारी।
चैनमचावत चारुचितै. वह लावति कूर घनी गहियारी॥

(प्रगट) क्यों तुमे इससे क्या? क्या तुमारा इतना दिन हमीने काटाहै या तुम कभी हमारीही रहोगी? किसी ने कहाहै:--

(सवैया) नाहिनहै परतीत किशोरिजू.जो नितयार नएनकोलावै।
साजिसिंगार अटारचढ़ी. उझकार उरोजभले सुरगावै॥
मैन मरोर भरी बनिता. नितनूतन संगिन रंग दिखावै।
चाखत माल हराम सदा. धनछोड़ि न नेकुकछू मनभावै॥

औरसुनो! (कबित्त)--काहूको सुनावै बैन काहूको दिखावै चैन. अंजन लगावै नैन सैन मुसकावै पै। एकन चुरावै मनउरज

उतंग संग. एकन डरावै ऐन मौज मन आवै पै ॥ मंजन लगावै दंत अंग लचकावै हंत. कौनेमें लगावे घात बात समुझावै पै। भनत किशोरी जोर जोबन ज़लूस भरी. कुलटा बिसेखि बहु यार नित लावै पै ॥

सरोजनी (क्षुब्धहो) रेकपटी! कटेपर और नोनदेताहै. भला मैं कुलटा, गणिका होगई. हाय रे करम! तेरे लिये तो क्वारी कन्याने अपनासत्यानासकिया हाय! उधर ब्याहकी तयारी रही पर तेरे बहँकाने में और इधर जवानी की तरंगों से दसदिन धीर न धरके तुझे मनप्रान समर्पन किया उसका यही फल निकला. हा! इसनेकीका यह बदला. हेराम! अधर्मका यही फलहै.

बसंतदेव--(हँसकर) तो ल्यो तुमारा कुमारपन हमने उतारदिया अब "नष्टेमृते" के बचनानुसार दूसरा व्याह करलो या वेश्यापन धारनकरो हम इस यात्रामें मित्र दुर्जन बंधु की कृपासे बहुत देशोंकी कुलटा नारी देखीपर तुमारी समता तो कोई नहीं करसकती. देखोः—

(कबित्त) सुरतप्रचारमें चतुरकरनाटीलाटी. लंपटी दिवानीनार दक्खिनी नपीरकी। माल्वेमरेठी मस्तगूजरी गुमानीजानी. चेतसीसयानी बंगवालीनैन पीरकी ॥ तुरुक तिलंगी हुणा यारकी न संगी. जंगीजोरखतरानी सानी लचकसरीरकी। अतुलअधीर शानबेनजीरबड़ीधीर. आफतनजीर ऐसीलेडी कासमीरकी ॥

सरोजनी--दूररेपापी! नराधम! अपनी मा बहिनोंको नहीं कहता, संसारकी स्त्री. क्या सभी ऐसी हैं? अपनी घरवाली की ओर तनिक देख, यही इन्हीं सब गुनोंसे वो छकेछबीले के संग यात्राकरनेगई है. देख, हत्यारे तेरीकैसी दसाहोती है. अच्छा कह अब क्या इच्छाहै? जलदी बोल.

बसंतदेव-(क्रुद्धहो) हरामजादी. कुलटा! दूरहो सामने से, नहीं

अभी दुर्दसा सहित निकाल बाहर करूंगा. हट्‌जा सामने से. छिनारकहींकी.

सरोजिनी–हाँ! यह शानशेखी! रह! सत्यानाशी, देख अबलागन निरादरके आगे प्रानधन कोईचीज नहीं समझतीं (तीब्रतासे एक पत्र बसंतके आगे फेंक कंचुकीमें से छुरी निकाल कलेजेमें मारलेती और मृतहो पृथ्वीपर गिरपड़ती है)

बसंतदेव–(घबराकर) हायसरोजिनीने, यहक्याकिया (कलेजेसे छुरी खींचकर) हाय! अरे प्यारी सरोजिनी,बेशक हम बड़ेपापी हैं. हाय हमने तुमारा सर्वस नाशकरकेभी तुमारी योग्यता नहींजानी हाय हमें यहनहीं विदितथा कि तुम अभी मानव लीला वरण करोगी (रोताहै)

(हाथ में संदूक लिए एकभृत्यका प्रवेश)

भृत्य–(स्वगत) हाय! बीबी सरोजनी तो यहां मरीपड़ी हैं (घबराकर) हाय! जानपड़ताहै कि इन्हींका यहकर्महोगा.हाय!२ नजाने कितनी स्त्री इनकी दयासे इसदसाको पहुँची होंगी (आगेबढ़कर प्रगट) स्वामी का भलाहोय. आप के एक नातेदारके यहां से यह एकसौगात आई है, परआदिमी ने कहाहै कि लाखकाम छोड़कर इसे पहिलेदेखें इसमेंसायत कोई "मयंकमंजरी„ का हाल है.

बसंतदेव--(चमकके) ऐं! क्याकहा? कैसा! "मयंकमंजरीका हाल" लाओ २ अरे! गनेस,इसशवको लेजा और चुपचाप नदीमें प्रबाहित करदे. देख!कोई न जाने, खबरदार! २ (चुपकेसे हाथोंमें दोअशरफी देताहै) और-सुन! जो इस सौगातको लायाहै उसे बुलाला.

गनेस-जी- बहुतअच्छा उन्हें बुलालातेहैं (शवको एकसंदूकमें रखके लेजाताहै)

बसंतदेव--खैर! यहरांड़ तो गई,अब इसका पश्चात्ताप क्या. इसेदेख-

ना चाहिए कि कितनेदिनोंसे आशा लगाए २ आजससुरार की सौगात आई है.

(संदूकखोलता और उसमेंसे दुर्जनबंधुका कटासिर और एकपत्र निकलताहै) हाय हाय! यह क्याभया? हाय. अरे यह मित्रका सिरहै. ऐं, अरे प्रान निकलने चाहताहै. हाय! सरोजिनी तुमारे सरापसे हमें आज बंधुबियोगभया (सिर हाथमें लेकर रोते २) हाय! मित्र किस हत्यारेने तुमारीयह दशाकी? हायइसपत्रको तो देखो, और अभी क्या २ इसमें अशुभ समाचारदिये हैं (पत्रखोलकरपढ़ताहै) "पापियोंके लिए यही उचितदंड है. पृथ्वी ऐसे२ घोरनारकी जीवों का भार नहीं बहन कर सकती. रेदुष्ट बसंत! अबभी तू धर्मपथारूढ़हो, नहींतो एकदिन तेरीभी ऐसीही गतिहोगी.

तेराशत्रु, किम्बाहितैषी."

हाय! यह किसकाकर्म है? जानपड़ताहै कि यह वीरेन्द्रको छोड़के और दूसरेका कर्मनहीं है (भयनाट्य करताहै) हा! ब्राह्मणकन्यासरोजिनी.रामराम! स्मरणहोनेसेहृदयविदीर्ण होताहै (सरोज़नीके पत्रपर दृष्टिपड़ती है और उसे उठाकर पढ़ताहै) हा! इसमें देखें क्याप्रपंच है. (पत्रपाठ) प्यारे बसंत! मुझे पूरानिश्चयहै कि तुमारी पुरुषोंमें भ्रमर योनिहै. खैर! तुमने हमारे मनकीथाह न ली जहां केवल तुमारी मूर्तिछोड़के कुछभी नथा, मेराहृदय मरते २ तुमारे प्रेममें पूर्णरहा. खैर! मैंने जोकुछ अनुचितबात कहीसुनी हो उसे दुश्चारिणीकीजान क्षमाकरना, और तुमने जोकिया अच्छाकिया पर परलोकमें मैंजरूर तुमारापल्ला पकड़कर न्याय कराऊंगी. देखो तुम जो जीचाहे कहो पर मेरातन सिवाय तुमारे, हवानेभी हमेनहीं देखाहोगा; क्या तुमारे त्यागनेपर मैं संसारकी धूलउड़ाके औरभी पापकी वृद्धि करती? अच्छा! अबजानेदो, मेरी सबसंपति तुमारीदीहुई

और निजकीभी जो अनुमानसे दसलाखकी है, उसकापूरा अधिकारी तुमेही करतीहूं पर तुमे जो उचित समझपड़ेतो मेरेउद्धारके लिएभी कुछ धर्ममार्गमें लगादेना, आगे जैसी इच्छा.पर एकबात यह यादरखो कि मयंकमंजरी सती है उसकी ओर कुदृष्टिसे यदि देखोगे तो तुमारा कभी भला न होगा.बस और क्या मैं अबतुमको कहूं?........,,

"प्यारीभगनीगण!

पूरीजवानीतक कभी क्वारी न रहना हमारी उम्रवाली सहेलियोंकीतरह पापपंक्तिमें न फँसके उचित समयपर पाणिग्रहणकर,सतीधर्मकी वृद्धिकरना -कलंकहृदया-सरोजिनी"

बसंतदेव-(महाबिकलहो) हा! कैसाकांड आज उपस्थितहुआ कि उधरतो ऐसा२ आपदेकर सरोजिनीगई इधर हमारे हृदय पर अनेकाऽनेक वज्रपात सदृश दारुण दुःख उपस्थितहुए. हा! यहहमारे बज्रहृदयने सचमुच उस सरला का मन नहीं चीन्हा.प्रिये! सरोजिनी! तुम्हारी सबआज्ञा हमारे शिरोधार्य्य है; पर "मयंकमंजरी" के लिये यदि आजन्म दुःसह यमयातना सहनीपड़े तबभी मैं छोड़नेकानहीं. हा! मित्रकी जब याद आती है तो कलेजा फटताहै. मित्र! तुमारे मरने से आज हम पूरे अनाथ होगए. आज हमारी दहिनी भुजाकटगई. हा! तुमारेबिना कैसे हमारे प्रानबचेंगे? (रुदनकरताहै) (प्रबेशभृत्यका)

गनेस- (घबराकर स्वगत)हाय! कोई प्यारेकी खबरआई होगी, तभी स्वामी इतने दुखी दीखतेहैं हां!बीबीका जिउलेकेअब सोच कररहेहैं (मुन्डदेखकर सभय)हाय! यहक्या अरेअ-बयह किसका सिरहै. रामराम! न जाने इनके मारे कितने जने का जीवजैहै (डरते २ प्रगट) धरममूरत! जो- ई-चीज-दिहिन- रहा- उन-कातो-अबकहीं पतानहीं लगता,-हमबहुतखोजा, सरकार!

बसंतदेव–(घुड़ककर) चुपरह! (ठहरकर) ओ! सुन! इससिरको भी नदीमें फेक आ.

गनेस– जोमरजी! (मूड़संदूक में रखभागताहै)

बसंतदेव–(ठहरके) हाय! हाय! बुराभया, अरेगनेस ३! हाय! यहतो नहींबोला जानपड़ताहै कि निकलगया. हा ! इस प्रिय मित्र की तो मुझे क्रिया करना था, सो इस तरह फिकवा दिया. हा ! (रोतेरोतेकुछ ठहरकर) खैर ! अब इस सोचही से क्या? चलो आजइनदुखों को प्यारी मयंकमंजरी के सहबाससे दूरकरें (जाताहै) (बसंतदेव का चोरमंदिर) (एककोनेमें मलीनबेशसेबिषएण भाव धारण किये मयंकमंजरी बैठी रोरही है)

मयंकमंजरी–(आंसूगिराते २) हायदई मेरे कौनसे पूर्व जन्मकेपाप उदय भये जो इस नरराक्षसके पालेपड़ी, हा ! नाथ ! पति परमेश्वर ! तुमारी सेवामें दासी से कौन अपराधभया जो अभागिनी की सुधभूलगए. गुरुजीने तो बड़ी २ आशाऐंदी हैं, क्यावह सब झूठहोंगी. नहीं २ राम राम ऋषि लोगोंके बचन कभी झूठे नहीं होते. और गुरुजनो के वचन में अबिश्वास करने से बड़ापातक होताहै. पहिले जब मैं कथा पुरानों में सुनतीथी कि "श्रीजानकीजी अशोकबन में बैठी है और सत्यानाशी रावण सामने खड़ा खड़ा लोभ दिखा रहाहै और लालच देरहाहै पर सीतामहारानी केवल धिक्कारने के उसहत्यारेकी ओर भ्रूक्षेपभी नहीं करतीथीं" तब जनकनंदिनी की भीतरी दसाका अनुभव मैं नहीं करसक्ती थी. हाय ! आज मेरे हृदयनेभी जाना कि सीतामैया को भी कदाचित् इसदासीसे अधिक मनस्ताप नहीभयाहोगा. (सहसा बसंतदेव प्रवेशकर कुछ दूर चौकी पर बैठता है) हाय हाय ! आज फेर रावणका नातीआ पहुंचा(रोतीहै)

बसंतदेव–(मयंकमंजरीकी ओर देखकर–स्वगत) अहा ! मेघाच्छन्न

चंद्रमा भी कभी मलीन भयाहै ? यद्यपि अभी इसका मलीनवेश है पर सुन्दरता मानो इसके प्रत्येक अंगोंसेउछल उछलकर बाहर निकली पड़ती है. अहा उसदिनकिशोभा, हा भुलाए नहीं भूलती. ओहोः-

(कबित्त) कंचन बरनधानी चीरकीफबनमुख.बीड़ीकी रचन अंग भूषन बहारहै। मृगमद भाल उर मालकान कुण्डलत्यों. नाकमें बुलाक नूरनूपुर सिंगारहै॥ भनतकिशोरी छुद्रघंटिका घुमेर दार. कंचुकी दरार मांगबेंदीहू लिलारहै। अंजन नयनमन रंगन जलूसजोर. ठाढ़ीचितचोर किये सोलह सिंगारहै॥

(प्रगट) क्योंप्यारी ! क्यातुममुझे सदाबिदसी और विरानाही पुरुष समझोगी ? क्यामुझचातककी आसाप्रेमबारि देकर पूरी न करोगी ? मैंतो सदा तुमारा मोललियाहुआ दासकी भांति सबप्रकार सेवाकरने को मुस्तैदहूं. क्याअभी तक तुमे मेरी सच्चीप्रीतका परिचयनहींमिला ? अगर तुम कहोतो अभी मैं जलती आग में कूदपडूं अथवा और जो इच्छाहो कहो मैं उसे सिरआंखोंसे पूराकरूं.परएकबार प्रेम दृष्टिसे मेरी ओर देखदो, क्योंकि तुमदेखे बिना, देखोमेरी कैसी बुरीदसाहोरहीहै. प्रिये तुमारे बिरह में रोते २ आंखे फूलकर पकौड़ी बनगईं (कटाक्ष करके) क्याकहूंप्यारीः--

(कबित्त) ऐरी जान गतियां से हतियां हजारोंजीव. बतिआं न मानै नीचजतियांननाखियो। पतियां गंवाईं प्यारी बतियांभुलाईं हाय. रतिआं नआई ऐसी मतियां न भाखियो॥ लतियां कुचाल तेरी दँतियां सुलाललाल. हालगले लपटिललाम सुखचाखियो। घतियां किशोरि मोपै बहुतकरी है आज. मौनधरि छतियां छिपाये जिनराखियो॥

(स्वगत) (कबित्त) सारीहैरँगीली कुचकंचुकी कसीली मुख.पानहू की खीलीबोलै बचनरसीली है। पायजेब नूपुर कमर बंद कड़ाछंद.हारकान फूल नथबाली जुल्फकीलीहै॥ सुखदासिं-

गारन के भारसें लचीसीजात. सखिन के साथ डोलें बागन छबीलीहै। श्रीकिशोरिजूको मनमानिक चुरावैसैन-लपकि लजीली यह आफत परीलीहै ॥

मयंकमंजरी–(बिकलतासे–स्वगत) हाय ! पृथ्वीमाता तू सीताजी कीतरह मुझेभी क्यानहीं स्थानदेती ? कि मैं तुझमें समा जाऊं. अबयह रोजरोजका अपमान नहीं सहाजाता. हाय ! प्रीतमकी आसालगाए कबताईं मैंयह दुसहदुःख सहतीरहूं. मनने क्याकहा "जबतक सीता ने सहीरहीन" ऐं ! क्या उनके ऐसा सामर्थ मुझमें है ? कभीनहीं तबक्यों ऐसेपापी प्रानको रखें, जो इतन दुखदाई भयाहै हाय ! इसपशुकी बातोंसेतो मेराहिया फटाजाताहै. मेरे कौनसे पाप उदयभए जो प्रीतमप्यारेसे ऐसादारुण वियोगभया ? प्यारे ! प्राण नाथ! केवल तुमारीही आसासे येअभीतक प्रानपखेरू उड़े नहीं. पर अबदेर न लगानाः–

(सवैया) परदेसपिया उतछायरहे. केहिभांतिपठाऊं उन्हे पतियां।
दिनडोलत बागतड़ागनमें, नित रोवतजात कटी रतियां ॥
कहोकाह किशोरि उपायअबै. इतपावसमास दहै छतियां।
पिकदादुर मोर पपीहरारी. बदराभए प्राननके घतियां ॥

पर क्याकरनाहोगा तबतक इसदुष्टको किसीतरह जालमें फाँसना चाहिए–(प्रगट) सुनोंजी ! मुझसे जबान सँभाल कर बातचीत करना, नहींतो अच्छानहीं होगा. (क्रोधसे)

(सवैया) जाहुचले निजधामअजू. यहचालबुरी तुमने गहिलीनी।
आइइतै नितरार करो डर. छेड़तलाज नहीं कछुकीनी ॥
त्यौंहिकिशोरि करोबतियां तुव.मातपिता सगरो हमचीनी।
एक कहोगे कड़ोड़ सुनोगे. तबै समुझाय तुमै हमदीनी ॥

बसंतदेव–(स्वगत– सहर्ष)खैर! रुखाईही सही, लेकिन इतनेदिनों पर आज बोलीतो सुनाईपडी. हमारे जानतो आजइसप्रान प्यारीने सूखे धानोंपर अमृतबर्षायदिया. मानो सुधासागर

में इसने निमग्नकरदिया (प्रगट)प्यारी तनिकइसगुलाम की भी खबरलो ! —

(दोहा) सुनितेरी खूबीभरी मैं अतिभयो बिहाल।
लगी आगबिरहागिउर रही देह में खाल॥
चितैचाहिअँखियानसों हँसिमुहदेहुदिखाय।
नातो तेरे बिरह में चलो प्रानअकुलाय॥

देखो प्रिये ! यह तुमारे पिताका पत्रआयाहै (देता है)

मयंकमंजरी–(आतुरहोपत्रपढ़ती है) "बेटा ! —हमकईकारणोंसे नहीं आसके, और अबबिशेष बिलम्बभी उचितनहींहै.अतः तुम बसंतदेव के सँग प्रीति पूर्बक पाणिग्रहणकर सुखसे काल यापन करो.

तुमारा शुभचिन्तक—सुमंतदेव ?"

(पत्रदेखके–सभय) हाय ! नजानो पिताजीको मेराप्रान क्योंभारी पड़ाहै.अगरयह सोचें किपत्रयह जालीहै तो अक्षर भी उन्हीके ऐसे दीखतेहैं तोऐसी अवस्थामें हेनाथ ! तुम्हीं इसअभागिनी हरिणीको इसदुष्ट नाहरके चंगुलसे बचाओ (रुदन) हाय! अबइसपापीसे मैं कैसे अपनापिंड छुड़ाऊं. देखो लोगकहतेहैं कि कमल इसआशासे रातकोभी जीता रहताहै कि पुनः प्रातःकाल दिनेशके दर्शनहोंगे. औरइसी आशासे कुमुदिनी भी कालबिताती है कि अमावास्या के बाद फिर कलानिधि के किरणों से अपनेको संतुष्ट करूंगी. यदि इन दोनोंसे सूर्य और चन्द्रका मिलाप रोकदियाजाय तो क्याकभी भी वो प्राणरखसकतेहैं, चन्द्र बिना रजनीकी शोभानहीं होती, परबीचमें यदिकोईराहुआजायतोक्याहो ? हानाथ ! तुमारे पुनर्मिलाप के लालच से इतनी घोर यंत्र-णासहनकररहीहूं सबकुछ भोगरहीहूं. परतुमकहांहो,नाथ ! अब मेराकाल समीपहै, अब इससमय तुमेएकनजर देखते

तो जीकी जीहीमें न मेरेसाथ जाती.खैर ! नसही हृदयमें भी तो तुमी तुमहौ न (अश्रुपात)

बसंतदेव-(सस्मित कटाक्षकरके) क्यों हृदयहारिणी ! अब हम से भागकर कहां जायगी ? अब जादे दुःखनदो क्योंकि प्रान बिकल होरहाहैः-

(सवैया) आवनरोज कहोसजनी परकौनदिना हँसिकै अपनैहौ ?।
देतदगा चितचोर चितै उत औरनको गरवाँनित लैहौ ?॥
चाल बिहाल कियोतबहू नहिबाल रसाल सुभालगवैहौ।
जान किशोरि समाननआन बसंत सोकंत दुरंत न पैहौ॥

मयंकमंजरी-(क्रोधसे) रे ! दुष्टपापी ! तेरे क्या कोई मा बहिन भी नहीं है अरे वहींजाके पशुवृत्ति चरितार्थकर अगर ऐसाही मदान्ध है.तो मैं तेरे मुखपर भी नहीं थूकूंगी (शरीरकांपने लगता है)

बसंतदेव-प्यारी तुम राजाकी रानीबनोगी और मैं सदाके लिए तो गुलाम बनाहीहूं देखो यह असंख्य धनदौलत सब तुमारीही है. और संसार में कोई ऐसा पदार्थ नहीं जो तुमचाहो और वो तत्क्षण न मिले, तिस्पर मेरे ऐसा बेदाम ताबेदार तुमें स्वर्गमेंभी नहीं मिलनेका.

मयंकमंजरी--रे सत्यानाशी ! दुराचारी ! दुर्बचन कहते २ क्यों तेरी जीभ नहीं गिरपड़ती? क्यों?दुर्भाव देखनेसे किसी शुशीला पर तेरीआँखें नहींफूटतीं ? अरे दुर्नीत ! किसी सुचरित्राके हारबनानेकी इच्छाहीसे बाताहत कदलीकीतरह तेरादेह नहीं मिट्टीमें मिलजाता ? अरे पिशाच ! अपने इस धन दौलतसे काष्टभार मँगाकर क्योंनहीं अपने शापित पिंडको अग्निमें होमकरता ? तेरे ऐसे कुमार्गी और ऐसी २ तुच्छ चीजोंपर मैं क्या, मेरीदासीतक न थूकेंगी.

बसंतदेव--(हाथजोड़के सस्मित कटाक्षपूर्बक) मेरीप्यारी ! क्यातुम अपने बाबाकीभी बात न मानोंगी और इसीप्रकारनिःकारण

हठकी बेड़ियों से अपनेतई जकड़ेरहोगी देखो जबवो तुमें हमारेहाथ समर्पण करचुके तबतुमको क्या अधिकारहै कि उनकेश्रेष्ठ वचनोंका. उल्लंघनकरो और हमभीउनके वचनों का निरादरकर तुमको तुमारी भावपूरित बातोंपर छोड़दें? यह कदापि संभवनहीं—

प्रियतमे!--(सवैया) अबक्यों कलपावतीहौ सजनी.रजनी नितजात चलीकटती। कितनो समुझाय बुलायरिझाय. मनाय रिसाय तऊहटती॥ नितआँख लड़ाय छकायसबै. फुसलाय किशोरि हमैंजटती। फुलवारी सदा न रहै जगमें.तवधाय गलेनहिं क्योंसटती॥

बस!अबप्यारी यहनखराछोड़दो औरएकबार गलेलगजाओ-बसयही केवल प्रार्थनाहै. क्या मुझेछोड़ तुम अभीतक बीरेन्द्रकी आशा लगाएहो? वोमृगतृष्णाछोड़दो भलाकहीं अब उसका पताभी है? अतः सुन्दरी चाहे कुछहो पर मैं अभी तुमे गले लगाकर चिरतप्तअपने हृदय को शीतल करूंगा.

मयंकमंजरी—अरे दुर्मते! मतवारे! तैं क्यों नहीं यमलोक सिधारता जा तू वहीं बहुतसी सुन्दरी तुझे वहां मिलजायँगी. खूबही अपने मौसेरे भाई दुर्जनके साथ चित्त शीतलकरना.यहां क्यों मुझे व्यर्थ छेड़ताहै मैं तोआपतेरे तीक्ष्णबचन बानसे बिधी चलीजातीहूं. हाय! अबनहीं सहाजाता(दीर्घकरुणापूर्वक रुदन)

बसंतदेव(करजोड़)क्योंप्रिये!किसीतरहनमानोगी?(अग्रसरहोनाहै)

मयंकमंजरी-रेनराधम! तेरी सामर्थ्यहै कि तू मेरी पबित्रदेहीको स्पर्श करके कलुषितकरैगा. खबरदार! हा! देख प्रह्लादनेभी पिता की धर्मबिरुद्ध आज्ञानहींमानाथा तो फिरकैसानृहरिभगवान नें उस्की सहायताकी. हेनाथ!दयासिंधु! यहदासीभी पिता की इसगर्हित आज्ञाको नहीं मानसकती,अबतुमी इसकाउद्धार द्रौपदीकी तरहकरो. देख!सत्यानाशी!(छुरीदिखाकर)

जोतूजराभीआगे बढ़ा तो तेरे मुखमेंही छुरी पेसढूंगी अथवा मैंहीमररहूंगी–

बसंतदेव(स्वगत)हाय? आजतो सरोजिनीका शापप्रत्यक्षहुआ चाहता है. पर हिम्मत नहीं छोड़नाचाहिए. धनागार में प्रायः सर्परहते हैं. उरबसी के हेतु पुरूरवाने कितने दिनोंतक तपस्या की थी. तो क्या मैं इससुन्दरी के लिए जी जानतक नहीं खोसकूंगा. परन्तु थोड़ी और रसिकताकरनी चाहिए (प्रगट) प्यारी! यदिप्रानही लेना तुमको प्रियहै तो क्या चिंता है देखो मैं तयार होताहूं कि नहीं. तुम किसी बातपरभी तो अपनी इच्छा प्रगटकरो अच्छालो तुमभी क्याकहोगी, लो! मैं तयारहूं. आओ? किंतुहमकोशोचहोताहै कि तुमारेकोमल हाथोंमें कहीं दर्द न होजाय अतः मुझेछुरीदो मैंहीं अपने कलेजेमें मारलेताहूं और तुमे संतुष्ट करताहूं. पर यहनहीं तुम खेयाल करती कि यह तो बिनमारेही मररहा है–

(दो०) लखि तरुनीके तरुन कुच अंग अंग जरि जात।
पै उर लाएही सरस सीतल अंग सुहात॥
तरुनी कुचअलिलुकिरही अजबआगधुँधुआत।
दूरहिसों जारत तरुन हिय लागि सीतल गात॥
खोलिकंचुकी डारिसखि दैचुम्बनसुखसार।
अरी लागिउर मोहिंकर बिरह सिन्धुके पार॥

मयंकमंजरी (मयंकमंजरी छुरीलिये सचेतखड़ी रोती है)सत्यानासी!

बसंतदेव (स्वगत)हाय! यहछोकरी तोबड़ीही ढीठनिकली अगर अब जोकहीं तनिकभी आगेबढ़े तो अवश्य खूनखराबा करदेगी. क्याकहें हमतो अबकभी इसपिशाचिनीसे जीतनहीं सकेंगे. क्योंकि कईदिनसे बराबर बिविध प्रकारका प्रलोभन देकरके समझारहेहैं. पर किसतिरह राहपर नहींआती. पहिलेतो इस नेअपनेबाबाके आनेतक छमामांगाथा परजब वे नआए. और मैंने जाली चिट्ठी दिखाई तो वो उसे सच्चीजानके यह फैल

निकाला. भाई! अब कठिनभई. और आगे अबबढ़नेसे काम बिगड़जायगा . यहींसे जो कुछ कहनासुननाहो करनाचाहिए (प्रगटबिद्रूपकटाक्षकरके) ऐ मेरी प्रानप्यारी, ले अब बहुत सताया, अबतुम जरा गलेसे लगालो तो सबमेरी कसक मिटजाय. हाय देखो मैं मराचाहताहूं और तुझे कुछ भी तरसनहीं आती. (कपट रुदन)

मयंकमंजरी--अरे ! कसाई ! हत्यारे क्यातेरे कुलकी सबस्त्रियां मरगईं, छिः छिः निर्लज्ज ! बुराहो तेरा (क्रोधसे आंखें लालहोजाती हैं और सर्वाङ्ग कांपता है)

बसंतदेव--(रिससे) अबतुम सीधी तरहसे समझानेपर न राजीहोगी ? देखो अभी मैं बलपूर्बक अपनी इच्छा पूरी करताहूं . बिना जबरदस्ती के तुम हाथ नहीं आओगी अच्छा क्या चिंताहै पर मैं तो यहउत्तमनहीं समझता कि तुमको दुःखदूं इसलिए बारम्बार बिनय करताहूं कि तुम अब मुझसे छूटने की आशाको जलांजलि दे बैठो.

(मयंकमंजरी के पकड़ने के लिए बसंतदेव आगे पांवबढ़ाता है और पर्य्यंक के नीचे से बीरेन्द्रसिंहकी भांति झपटके उसे पटक छातीपर उसके चढ़बैठताहै— और मयंकमंजरी के हाथसे छुरी गिरजाती और वो आवाक्हो गिरपड़तीहै)

बसंतदेव–(महाभयसेकाँपताहुआ) आप–कौन-देवताहैं? अरे२दयाकरके मुझे छोड़दीजिए (गिड़गिड़ाकर) मुझनिरपराधीको क्यों मारतेहैं ?

बीरेन्द्रदेव–(क्रोधसे) रेपापिष्टनराधम ! हमतेरे कालहैं.नारकी ! ले अब तू मराचाहताहै. अपनेकर्मोंके क्षमाके लिए ईश्वरके समीप प्रार्थना करनाहो तो करले. दुष्टकहींका. (छातीपर रगड़ादेताहै)

बसंतदेव (अधीनतासे) प्रभो! दयाकर मेराअपराध क्षमाकीजिए और दासको छोड़दीजिए मैं व्यर्थमाराजाताहूं.छोड़िए २ (रोदन)

बीरेन्द्रदेव-अरे अधम पाखंडी! अभीतक तू निरपराधी बनताहै. देखइस ढिठाईका कैसा मजामिलताहै. नष्ट! तेरी सामर्थ्य है कि तू मेरी प्रियासे असभ्यभाषणकरे. देख मैं अभी तेरी जिह्वा काटडालताहूं. और तेरासिरभी दुर्जनबंधुकी तरह धड़से जुदाहुआ चाहताहै (ग्रीवापरखड्गरखताहै)

बसंत-(घबराकर)-हाय मरे, अबसबमेरा अपराधक्षमाकर आजन्मके लिए दासबनाइए. फिरकभी ऐसी धृष्टतानहींकरूंगा. हाय दुहाईहै महाराजकी मुझे न मारिये (रोतेरोते-स्वगत) अब निश्चयभयाकि दुर्जनबंधुकाप्राण इन्होंनेहीलिया. और उस्कासिर, भेजा रेजीवन्मृत! नपुंसक! तैंनेहीमेरे मारने केहेतु बिषभेजाथा? तो अब क्यों नहीं सन्मुख में अपनी सामर्थ्य दिखलाकर क्षत्रियकुलको कृतार्थ करता. देख तो सही मैं बारंबार कहेदेताहूं कि अब तू शीघ्र दुर्जनकी गतिको पाताहै और वह नर्कमें तेरी राह तकता और तेरेमित्रताका दंडभरताहै (बधोद्यत)

बसंतदेव-(महाकोलाहल करके) हायबापरे अबमरे! हेराम! २ अरे दुहाई महाराजकी दुहाई स्वामिनी मयंकमंजरीकी अरे बचाओ! २ स्वामिनी! आजसे मैं प्रणकरके कहताहूं कि तुमे अपनीमा बहिन तुल्य देखूंगा हा! भगिनी! मेरा प्रानबचाओ, हायरे मरे! २ (अचेत होजाताहै)

मयंकमंजरी-प्राननाथ! अब यह अधम अपनी सजाको पहुँचगया और जिसमुहँसे मुझसे कूट करताथा उसी मुखसे "मा" "बहिन" का प्रयोगकिया, इसलिये ऐसेकायरके खूनसे हाथ भरके अपनी बीरतामें कलंक न लगाओ, छोड़दो दुष्टको अपने कियेका फलपावेगा--

बीरेन्द्रदेव (सहसा तल्वार म्यानमें रखकर) प्यारी! यद्यपिपापियों के बधसे पृथ्वीकापाप दूरहोताहै, और उनकेमारनेमें कभी

भी पाप नहीं है, पर तुमारी इच्छानुसार इसअधमने जीव दानपाया. पर मैं इसे थोड़ासा प्रसाद जरूरही चखाऊंगा; जो इसे आजन्म यादरहेगा; और संसारभी जानेगा कि अधर्मसे चलनेमें यह फल निकलताहै--

(चकमकसे अग्नि निकाल और उसमें अपनीनामांकित मुद्रा लाल करके बसंतदेवके चूतड़ोंपर मोहरकादागकरदेता है, और वो उस्की वेदनासे अचेत होजाताहै, अनंतर वीरेन्द्र मयंकमंजरीको कंठाश्लेषपूर्वकचोरमार्गसे निकलजाताहै.)

मयंकमंजरी(गलेलग और कपोलचुम्बनकरप्रमोदसे)प्यारे! तुमयहां कबसे चुपचापआके बैठेथे? और क्योंकर यहां आने पाए? मैंने तो देखाभीनहीं--

बीरेन्द्रदेव-(प्रेमसे आदरपूर्बक) प्रिये! हम यहां कई एक दिनों से आएथे, और रात दिन तुमारेअनुसंधानकेलिए प्रच्छन्नरूप से नगरभरमें घूमआए पर कहींभी तुमारापतानलगा और न बसंतही कहीं दीखपड़ताथा परंतु आज एक वृद्धादासी ने तुमारी सबकुशलमुझे बुलाकर प्रेमसेकहा, और चोरदरवाजेसे लाकरहमें यहां तक पहुंचागई. हाय! प्यारी उस समयकी दशातुमारी हमक्याकहैं ऐसीतुमबिषण्णऔर चिंतामग्नथी किहमाराआना तुमे जराभी बिदितनहुआ. हाय! उससमय हृदयफटाजाताथा जबकि वहदुष्ट तुमे कटुबचन कहताथा. क्याकरताकेवलछटपटाकेरहगया और यहभीचित्तमें आया कि समयपाऊं तोमैं अपनेको प्रगटकरूं. लेकिन प्रिये. एकबातकाहमें संशयहै कि वह वृद्धाहमें परिचितकी भांतिपहिचानकर उन्हेंगुप्तबातों औररहस्योंका भेदकहदिया क्यावो मुझे पहिचानतीथी. अस्तु! बृद्धावस्तुतःएकस्वर्गीय रमणियोंमेंसे है.

मयंकमंजरी-(हँसके) वाहरे तुमारापत्थरकाकलेजा. धन्य! कैसे तुमसे मेरी इतनी गंजना देखी गई? छिः क्या लज्जाकी

बातहै. प्यारेवो वृद्धामानोहमलोगोंके उद्धारकरनेहीकेलिए यहाँ आईथी.अहा आज वो न होती तो कभी प्रान न बचते. उसने हमलोगों का बड़ा उपकार किया और रक्षाकी.

बीरेन्द्र (हर्षसे)–सहस्त्रों धन्यबाद उसपरमपिताको है जिसने इसी दिन के लिए मुझे जीवन दिया था नहीं तो . (रुकताहै)

मयंकमंजरी–(घबराकर) "नहीं तो" क्या ? यह क्या कहानाथ ?

बीरेन्द्र–क्या तुम मन्दिर में गईथी ?

मयंकमंजरी–(आक्षेपसे) वाह ! अच्छा इकरार घरसे करकेचलेथे. मैं तुमसे मिलनेके लियेगई और तुम उधरमदिरापीकर ऐसे अचेत होगयेथे कि कितना जगानेपर भी न जागे.

बीरेन्द्र (आश्चर्यसे) अरे ! मदिराका हाल तुमसे किसने कहा ?

मयंकमंजरी–क्या कहूं तुमारी वो दशा देखकर मैंभी मराचाहती थी कि इतनेहीमें तुरन्त गुरुदेवने आनकर जड़ी तुमे खिलाई. और हमेभी समझा बुझाकर बिदाकिया नहीं तो मैंतो बिदाहोईचुकीथी.

बीरेन्द्र––(हँसके) प्यारी ! वो मदिरा नहींथा. क्या तुमजानती हो मैं मदिरा पीताहूँ--

मयंकमंजरी (परिहाससे) क्यों बात उड़ातेहो, मैंनेअपनी आंखोंसे देखाथा छिः यहभी तुमारी आदत है ? राम राम.

बीरेन्द्र-·प्यारी तुमारे बड़े भाग्यहैं जोतुमने मुझेफिरसे पाया, और ईश्वरकीदयासे गुरुदेवने जानबचाया नहीं तो हाय ! :–

मयंकमंजरी (घबराकर) हाय! क्या ? क्यों उसपात्रमें क्याथा ?

बीरेन्द्रदेव--दुष्ट दुर्जन बंधुने बिषलाकर दियाथा और उसेतुमारा भेजाहुआ कहाथा.

मयंकमंजरी--हाय ! २ (व्यग्रभाव) तो क्या तुमने उसेपीभी लिया था (कांपती है)

बीरेन्द्र––पीते तो क्या फिर यह सुख देखनेमें आता ? एकअणुने

तो यह दशाकी पर मैंने उसे उसी अवस्थामें बधकरडाला. और आगे जो हुआ तुमे मालूमहै--

मयंकमंजरी--(आँसूगिराकर) हा नाथ यह दुर्दशा ! हेराम ! जिसने ऐसा घोरपाप कुकर्म किया उसको हमने क्यों बचाया जीवितेश्वर ! मुझसी अधमाकेलिए तुमे कैसे २ कष्टसहने पड़े--(दीर्घ निश्वास)

बीरेन्द्र--प्यारी ! बीतिहुई बातकाशोच छोड़दो. क्षत्रियबीर अभयप्रदान करके पुनः उसपर दृष्टि नहीं करते (मयंकमंजरी के आँखका मार्जनकरताहै) अहा ! हम सचेत होकर एक पत्रमें तुमारेयहां आनेकी व्यवस्था देखकर चले आते हैं. और हां ! वो दोनों मित्रोंकी, न जानेहमें खोजते २ क्या-क्या दशाभई होगी.

मयंकमंजरी--ईश्वरउनलोगोंकाकल्याणकरेगा, औरईश्वरकीकृपासे अबदिन अच्छेआगए सबोंसे मिलाप होजायगा. प्यारे कहीं अब जो फिर गुरुदेवजीके दर्शनहों तो मैं उनका चरण धो धोकर पीऊं.

बीरेन्द्र (सहर्ष) सहृदये ! वे हमारेही गुरु नहीं हैं. संसार उन्हें ऐसाही मानताहै भाग्यबश वो वहां पहुँचगए थे. अथवा ऋषिगण त्रिकालज्ञ होते हैं और हमारी यह दशाजानकर उन्होंने जीवदान दियाहो. अहा ! गुरुका धर्म यहीहै. कि प्रपन्नका उद्धारकरें. किन्तु संसारमें जो केवल स्वार्थ परतासे धर्मको अधर्म और अधर्मको धर्मकह अपनी पशुवृत्ति चरितार्थकरते हैं. वो शुद्धगोरूयागेरू हैं. प्रिये!हमें पूर्णआशा है कि गुरु बर्य्य हमलोगोंको पुनः दर्शनदेकर अवश्यकृतार्थ करेंगे. क्योंकि सदैव सर्बतो भावसे गुरुमें ईश्वर बुद्धिकरनाही मनुष्यका मंगल और श्रेयहै.

मयंकमंजरी--अहा ! बड़ेआनन्दकी बात कही. यह मेरेहृदयमें लिख गई (बातें करते २ आगे बढ़ते हैं) (नेपथ्यसे) सखी

मुझे निजमें कोई दुःख नहीं है केवल सखीके लिएही मैं मररहीहूं.--(दूसरेस्वरसे--) सचहै सखी. न जानैं इस समय प्यारी कैसे संकटमें होगी. अहा उसबुढ़िया बिचारी का भलाहो जो हमलोगोंको आश्वासन देकर अभीतक उस पापी दुष्टसे बचाए है.

बीरेन्द्रदेव--(चौंककर) यह किसका स्वरहै ?

मयंकमंजरी--(क्षोभसे) प्राननाथ ! इधर आइए (दोनोंआगेबढ़के) इस कोठरीमें मेरी दोनों सखी बंदहैं. अभी इन्हें इसबंधन से छुड़ाओ) बीरेन्द्र तीव्रतासेतल्वारकीमूठसे तालातोड़ता हैऔरभीतरसे कामिनी औरसौदामिनीनिकलतीऔरप्रिया प्रीतमको सामने देखके महा आनन्दित होजाती हैं (तीनों सखीपरस्पर गलेसेगलेमिलतीं और आनंदाश्रुबरसाती हैं)

बीरेन्द्र (प्रेमाश्रुभरके) आहाहा ! आजका दिनभी धन्य है, और यह दृश्य भी थोड़े आनन्दका नहीं है ?

(दोहा) मिले बड़भागन सदा प्रेमिनको सहबास।

कामिनी----जबै दयाउरमें उगै पियहि पुरावै आस॥

अहा ! महाराज ! आप भले आए ; आपकी बाट देखते२ अँखियाँ तो पथरा गईं. पर आपही के आशाजालमें हम लोगनके प्रान पखेरू अभीतक फँसेरहे.

मयंकमंजरी-(सखियों से मिलकर साश्रुनयन) प्यारी सखी ! थोड़ादुःख सहके जोजन्मभरके लिये सुखमिले तोवहदुखभी सुखही के समान जानना चाहिये. और प्यारी मुझे तो हृदयेशके देखतेही सबदुखभूलगये.

सौदामिनी-सखी अबदुखकाहेका.यहां तो केवलहमलोगोंको तुमारेहीदुखसे दुख और सुखसे सुख है. और आज ऐसेभयंकर समयमें राजकुमारके आने और इनके दर्शन करनेसे सब दुखभूलेही नहीं किन्तु सपनेकी नाईं अलोपहोगये. मानो कुछ थाही नहीं.

मयंकमंजरी [बीरेन्द्रसे] नाथ ! अब उसबिचारी बुढ़िया को भी संगहीलेते चलो नहीं तो उसके प्राण न बचेंगे, यहसबहाल जानकर बसंत उसे कभी जीतानछोड़ेगा .(आगे बढ़कर कोनेमें बैठीहुई वृद्धाकोभी संगकरलेती है)

मयंकमंजरी–[सस्मित] बूढ़ीमा ! अबतुम कुछ भयमतकरो

वृद्धा–[सबलोगोंको देख घबराकर] नहीं रानी-ई-ई-को-ओ-न-हैं [कांपती है]

मयंकमंजरी–डरोमत तुमनेतो हमलोगोंके प्रानबचाए हैं. जिन्हेंतुम लेआईथी ये वेही हैं. क्यातू भूलगई ?

कामिनी–बुढ़ियामाई ! अबतुमारा कोईबाल बांकानहीं करसकता.

सौदामिनी–बूढ़ी अबभीतुमे डरलागहै ? [हि हि हिहि.]

(वृद्धा हँसकर अपना वेष तुरंत परिवर्तन करडालती है, और सुकेशीका स्वरूप धारण करलेतीहै. यह आश्चर्यमय कौतुक देखकर सब लोग भय, लज्जा; हर्ष और आश्चर्य नाट्य करते हैं)

वीरेन्द्रदेव–(पांवपर गिरकर) अहा ! मा यह वेश तुमने क्यों लिया और तुमने तो बड़े२ वीरोंके कानकाटे, तभी तुमने हमे पहिचानकर यहांतक पहुंचाया.

मयंकमंजरी–(गले लपटकर रोते२) चाचीजी इतने दिनोंतक तुमने मेरी सेवाकी और कभी एक दिन भी नहीं चीन्हपड़ी, हाय ! मुझे कौन नर्क होगा ? जो मैंने तुमसे अपनी टहलकराई .

सुकेशी–बेटा (आँसू पोंचकर) मयंकमंजरी ! इसका सोच मतकरो, समय पड़नेपर सब कुछ करना पड़ताहै (कामिनी और सौदामिनी मिलकर प्रेमनीर गिराती हैं)

कामिनी–अहा ! चाची तभी तुमने हम लोगोंको इतना आश्वासन देदेकर अबतक जीती जागती रखा, नहीं तो क्या हम लोग इस दुष्टसे कभी बचतीं--

सौदामिनी--(हाथ पकड़कर) पर जाहिर क्यों न भई मां ?

सुकेशी--उसमें हेतु रहा, हमारे जाहिर होनेमें तुमलोग और भी अधीरहोतीं अगर जो कहीं बात फैलती तो हमलोग मारी जाती. केवल उस दुष्टसे रक्षा करनेके लिएही मैं यह वेश बनाके उसके यहाँ इस कामके लिएही नियतभईथी.

वीरेन्द्रदेव--मा ! बड़ा चमत्कारहै. रात दिनके सहवास रहनेपर भी न चिन्हाईदीं. हद्द होगया.

(नेपथ्यमें)

हायबापरे दौड़ोरे२ हाय मरे! अबदमगया कोई दौड़ो २ बचाओरे२ हायहाय ! शपथहै,अबकभी धर्म बिमुखनहोऊंगा.

सब--(वीरेन्द्रसे) महाराज! यह कौन चिल्लारहाहै ?

वीरेन्द्र-- (हँसकर) यह वही दुष्टअपनी बुरी नियतका फलभोगरहाहै जैसाजो करेगाईश्वर जरूरहीउसे वैसा प्रतिफलदेगा. (ठहरकर)अब यहां ठहरनेकी आवश्यकता नहीं चलोयहां से प्रस्थान करें

सुकेशी--हां यदि कोई उसनष्टके हल्लाकरनेसे इधर भी आनिकलेगा तो नाहक ही लोहाखड़कनेकी बारी आजायगी.

सौदामिनी- हां! हां, ठीक कहा, कहां तो अभी कितनी आफतसेबचेहैं

कामिनी--तोचलो भाई अबअपने ठिकानेही बैठके बातकरेंगे.

मयंकमंजरी--(धीरसे) क्यों प्यारे [कटाक्षकरतीहै]

बीरेन्द्र [मंदस्मितपूर्वक आंखोंसे इशाराकरके] चलोअबघरचलें

[धीरे धीरेसबगए]

इतिचतुर्थाङ्क

अथपञ्चमाङ्क ॥

(स्थान अवंतीद्वीपका पान्थ निवास)

(अनुराग बल्लभ और प्रेमबल्लभ बैठे बातें कररहे हैं)

अनुरागबल्लभ—हाँ ! मित्र ! तबराजाने क्याकहा ?

आनन्दबल्लभ--मित्र ! तुमें खूब बिदित है कि सुमंतने अपने कुचक्रसे महाराजको अपना अनुयायी बनालियाथा .

अनुरागबल्लभ--इसके कहनेकी कोई आवश्यकतानहीं. हाँ! जिन्होंने उसदुष्टके छलमें पड़के अपने प्रियपुत्रकाभी माननरक्खा. झटपकड़नेको सेनाभेज दिया . हा !

आनन्दबल्लभ--यही सबबातें जानकर मैंने युक्ति और राजकुमारकी अनुमतिसे प्रथमही महाराणी स्वर्णमयीको समस्त पत्र दिखादिया . और सब हालसमझाकर उन्हें ऐसापक्काकिया कि उन्होंने तुरंत राजकुमारकी आशा पूरीकरनेका पक्का प्रण किया .

अनुरागबल्लभ--वाह वाह ! यह बड़ेही आनन्दकीबात भई क्योनहो फिरतो "आनन्द" की सभीबातें आनन्द देनेवाली होती हैं . पश्चात् क्याभया ?

आनन्दबल्लभ--ईश्वर अनुकूलहुआ और क्याभया ? महाराणी ने तत्क्षण महाराजको बुलाकर राजकुमारके मारनेवालापत्र, जो मंत्रीके षड्यंत्रसे रचागयाथा और राजकुमारको भी सब पत्र दिखाया, और बहुत बिलाप करके पुत्रकी मनोकामना पूरीकरनेकी प्रार्थनाकी .

अनुरागबल्लभ--हाँ हाँ यहींपर तो महाराजका अभिप्राय खुलेगा.

आनन्दबल्लभ—हां ! सुनो जिसकी आशा न थी वही भया. महाराजने मंत्रीका सबछलजानकर अग्निशर्म्माका रूप

धारण करके मंत्रीके बधकरनेका बिचाराकिया, किन्तुमहारानीकी,मेरी, और राजकुमारकीप्रार्थना और इच्छानुसार प्राणदंड देनेकी अपेक्षा मंत्रीको कैदकिया.

अनुराग बल्लभ--अहाहा--वाहवाह! तुमनेतो आजआनन्दसागरहीमें पूर्णतः मग्नकरदिया, वाह! अत्युत्तमभया, नहींतोमंत्रीको बधकरनेसे महाअनर्थ और प्रियबीरेन्द्रको मनस्ताप और मयंकमंजरी को असह्य दुःखहोता--

आनन्दबल्लभ-- प्रिय! मंत्रीजीतो कारागार बास न करते, किन्तु इतनी बातबढ़ने परभी उनकी कुटिलतानछूटी--

अनुरागबल्लभ--सोक्या? अबकैसीकुटिलताशेषरहगई? सोभीकहिए.

आनन्दबल्लभ--महाराजने प्रथममंत्री को बहुत समझाया कि "तुम अपनी पुत्रीको अबभी हमारे तनयको समर्पणकरकेअपना मानसंभ्रमबचाओ, तबतुमें पूर्बवत् स्थान और मानामिलेगा" हा! कष्ट! इतने परभी उसदुष्टने प्रियकुमारको कन्या देना अस्वीकार किया. अस्तुः--

(दोहा) सबैबनै बानक बहुरि. सुखद सनेह उसीर।
जबैजानिचितवैं छिनहु.करुनाकरजदुबीर॥

अनुरागबल्लभ--वाहवाह! महाराज के मुखमें उस समय साक्षात् सरस्वतीजीने बास किया और अपने अनुकूल सबबातेंकहवादीं. अहा!!--

(दोहा) बंदौराधाश्यामजुग. चरणकमल मकरंद।
जाके सुमिरतही कटै. भ्रममाया केफंद॥

आनन्दबल्लभ--वह भी सब ठीक होगया? मंत्रीके स्वीकार न करने पर महाराजने उन्हे साथ लेकर ससैन्य इधर यात्राकी है. आह!मंत्रीके कुकर्मसे व्यर्थ राजका उलटफेर होना संभवहै.

अनुरागबल्लभ--(आश्चर्य से) क्या महाराज सेना समूह सहित इधर आते हैं? भावी बड़ी प्रबलहै.

(दोहा) नंदन वनके फूलसों. लपटिरह्यो अलिजाय।

पै दुर्भागन सो इतै. कुटज लग्यौ मनमाय॥

आनन्दबल्लभ--हाँ! जब महाराज इधर यात्रा करचुके तब मैंने घोड़े की डाकद्वारा शिवमंदिर की ओर प्रस्थानकिया, परंतु उसे सूना देख तालाश करता २ यहाँ आया. किन्तु आगे यहाँ भाग्यसे भेंटभई. भाई, अनुराग! कल्ल तुमने तो खूब मजाकिया. दुर्जनका सिर देखके बसंत बचाकी बुद्धिही उड़गई होगी ह. ह. ह. ह.! हाँ! इस दुष्टके सिरका हाल तुमने न कहा॥

अनुरागबल्लभ--मित्रकी दुर्दशाका हाल तो तुमे विदितही है.

आनन्दबल्लभ--हाँ वह तो हम तुमसे सुनचुके.

अनुरागबल्लभ--किन्तु उस समयकी दसा न पूछो मित्र! उस समय अनंत दुःख और क्षोभके मारे मुझे कुछ भी सूझ नहीं पड़ताथा. मित्रके बैरीकी खोज मैंने बहुत की किन्तु कहीं पता न लगा. इसमें मुझे महान कष्ट उठाना पड़ा, पर भाग्यवशात् वो दुष्ट झाड़ीहीमें मिला और सब कौतुक तो तुम सुनही चुकेहो.

आनन्दबल्लभ–अहा! सबतो भया पर (स्वगत) हा! कामिनीकी तीखी चितवन प्राणमारेडालती है. नजाने कबमेरे भाग्यके भी सितारे चमकेंगे. परन्तु जहाँतक हम देखते हैं वोभी तीखे. तरल कटाक्षों से मेरे हृदय पच्छीका आखेट किया चाहती है. औ समय२ पर अनेकों भुलावे बतारही है क्या कहूं अहा! उसकी छबिः–

(सवैया) सब साजसिंगार खुमार भरी. चढ़िऊंची अटारपै राधैरही।
गतियां हुमकी मगुमानभरी. मुसुकान अमोल अगाधैरही॥
रतिरंगभरी भटू कामकला. अबलामन छोरिकै बांधैरही।
लखिप्यारीकिशोरिहमैतिरछायकेसीधीचितौनिकीसाधैरही

अनुरागबल्लभ–(स्वगत) अहा! "सीधी चितौनि" यहइन्होंने धीरे से क्याकहा? (ठहरकर) हाँ! इनकीआंखोंमें कुछ आनन्द

का दम्बिनीकी झलक दीखपड़ी. ठीकहै और कुछनहीं यह प्रेमानुराग है. अहा ! क्याकहूं.इधर सौदामिनीनेभी मुझे ऐसी चकाचौंधी देरखीहै कि कुछ बसनहीं चलता कितनाही उद्योगकरताहूं पर छिनभरभी सामने नहीं ठहरती, अपनी चांचल्यताके आगे तो चपलाकोभी मात किएडालती है. और जबमैं कुछ बिनम्रभाव से कहाचाहताहूं कि तुरन्त अनेक प्रकारके कोरे आश्वासनहीं, (सोचके) रहोआनन्द को आजछकाऊं (प्रगट) क्योंमित्र ! "सीधी चितौनिकी साधैरही" यह कौनसे "पाणिनि" के सूत्रका अर्थ वारहस्य समासान्तमन्त्रकोघोषरहेहो. अच्छालाओमैंइसकीपूर्तीकरूं

(सवैया) सबसे मुसकायकरै बतियाँ. घतियाँ हमरेसंग नाधेरही।
हँसके बिहरै सँग औरनके. हमे दूरहीसे लखि व्याधेरही॥
भला एहूकिशोरिजू होतकहूं. नित औरनको अवराधेरही।
मुखतेजबकामिनिनामधरो. तबसीधीचितौनिकोसाधेरही॥
(हँसताहै) क्यों ? ठिकभई न ?

आनन्दबल्लभ–वाहजी ! कविजी ! यह क्या बकउठे ? औरयह कौनसी उत्तमसमस्याकी पूर्तीकी. क्यामुझे इसकाउत्तर देने नहींआताः—

(सवैया) सबभाँतिनसों समुझायथकी बतियाँ हठकीउरसाधेरही।
ठहरैनाछिनौं आँखियानअरी बिजरीसी छरीघर साधेरही॥
अबकाह किशोरिकिहूं मनकी नहि एककथा कहिसाधेरही।
अकुलाय सबै रजनीतड़पूं तऊंसीधी चितौनिकसाधेरही॥

(नेपथ्यमें घनघोर गर्जनध्वनि) (दोनोंकान लगाकरसुनतेहैं)

अनुरागबल्लभ-अरे यहबज्र एकदम कहांसे घहरायपड़ा ? देखो तो कानकेपड़दे फटगए

आनन्दबल्लभ–सचतोमित्र!चलो २ देखैंयहअब क्यानयाउपद्रवउठा.

(पुनः वज्रध्वनि)

अनुरागबल्लभ–भाई जल्दी उठो चलोदेखे अबक्या आफतआई ?

(दोनों शीघ्रतासे गए)

(नवद्वीपाधिपति राजानरेन्द्रसिंह सभामें बिराजमानहैं और मंत्री अनंतदेव, तथा अन्यान्य पारिषद और गुरवी जन बैठेहैं)

नरेन्द्रसिंह-हां!कविसुदर्शनजी ! कहिएआपनेउससमस्याकी पूर्तिकी ?

सुदर्शन–[वद्ध करसंपुट. खड़ेहोकर) नरनाथ!आपकी आज्ञाहोऔर मैंनकरूं ? तैयारहैः अभीनिवेदन करताहूंः-

(कवित्त) संगमनवीनसिसकीनकरिमीनसम. उछरिधरीनधरै भाग निचहतिहै । ज्योंज्यों पियप्यारे भरिभुजसों प्रसूनसेज.त्यों त्योंकुचकरदै सुनीबीको गहतिहै ॥ एकौ नबसाई सारी रजनीगँवाई कुचकलसकपोल छतसुधिनालहतिहै । प्यारी की उनींदी वाअटारी उतरनआज. चढ़िरही चित्तनाउतारे उतरतिहै ॥

पुनर्य्यथाः–

(कबित्त) उझकिउझकि बकिझकि छकिछकिपिय. प्यारी दोउतकि तकि आसनकरतिहै । लपटिझपटिसटिसटिगठिगठिअंग. तंग कुचकलस मरोरन लरतिहै ॥ चूमिचूमि कैरव कपोल लोल झूमिझूमि. रतिरसरंगरचि धूमनधरति है । प्यारीकी उनींदी वाअटारीउतरनआज. चढ़िरही चित्तना उतारे उतरतिहै ॥

नरेन्द्रसिंह–वाह ! वाह ! कबिजी ! क्याखूब ! बहुतउत्तम [मुद्रार्पण] अच्छाअबकुछ नागेशजीका वो अपनाबनाया भयामलारहो क्योंकि समयहै.

नागेश--(सहर्ष)जोआज्ञा.(तंबूरालेकर गाताहै)

रागबियोगबेल्ली ॥

आयाघन घेर पावस में घटाघन छायरही
सजनप्यारे सिधाएरी मजादरसायरही ॥ आया० ॥

लगे दादुर पपीहामोर कोइलगायरही ॥ आया० ॥
धराधुन घेरिगरजे चंचला चमकायरही ॥ आया० ॥
अरे सौतिन के जागे भाग पिय उरलायरही ॥ आया० ॥
गले लगलग किशोरीके उमंग सरसाय रही ॥ आया ० ॥

मलार ॥

औरभीः– सखिनसंग बिहरत नन्द दुलारे ॥ टेक ॥
रस सिंगार बनबन बिहार दोऊ मेघन परत फुहारे ॥
कोयलकीर मोर दादुर मिस देखत देव बहारे ॥
श्री किशोरि आनँद की मूरति राधाश्यामपियारे ॥

नरेन्द्रसिंह–वाह आपकी गान विद्या एवं कविता चातुरी अपूर्व है कि मलार सुनतेही आखोंमें प्रेमघनछागए. (मुद्रार्पण) (मंत्री से) हां! यह सब तो हुआपर आजकल कोई राज्यसंबंधी नूतन समाचार तो नहीं है!

अनंतदेव–(विनम्र) नाथ! आपके विष्पक्ष न्याय और प्रतापसेसर्व दिक् मंगलही मंगलहै. परन्तु नजाने अवंतीपतिने किस कारण से चढ़ाई कीहै–

नरेन्द्रासिंह--(आश्चर्यसे) क्याकहतेहो? "अवंतीपतिने"? क्या यह सत्यहै? वो तो हमारे परम प्रिय हैं. तो अकारण यह क्यों महाभारतखड़ाभया?

अनंतदेव--महाराज! इसकाठीकठीक कारणअभी बिदितनहींहुआ- (नेपथ्यमें घोरशतघ्निध्वनि) (सबचकितहो एकदूसरे को देखते हैं)

(द्वारपालका प्रवेश)

द्वारपाल--(अभिवादनकरके) महाराज कीजयहो. अवंतीपतिकीसेनाने चारों तरफसे सेनागार घेरलियाहै, और उनकी ओरसे एकदूतभी आयाहै, जैसी आज्ञाहो.

नरेन्द्रासिंह–[शीघ्रतासे] हाँ! अच्छादूतको शीघ्र [ससंभ्रम] भेजो. [द्वारपालका प्रस्थान] [मंत्रीसे] क्योंजी? अभीतक

यह विदित नहींभया कि इनउपद्रवोंका हेतुक्याहै ?

अनंतदेव--कृपासिंधु ! अब दूतके आनेसे संपूर्ण विदितही होजायगा-

[दूतका प्रवेश]

दूत-- [राजोचितबंदनाकरके] महीश्वर ! हमारेस्वामीनेआपका मित्र भावसे कुशल पूछाहै, और एक विषयमें आपकी सम्मति चाही है ॥

नरेन्द्रसिंह--[हँसकर] महाराजकी दयासे हमारा संपूर्ण कुशली है. कहो महाराजतो सपरिवार प्रसन्नहैं ?

दूत-- आपकी कृपासे--

नरेन्द्रसिंह--महाराजने क्या आज्ञाकी है ?

दूत [सविनय] महाराजने यह कहा है कि आपके मंत्रीके पुत्रने हमारे मंत्रीकी कन्या लेजाकरके कैदकिया है. अतः आप उसकन्याको युक्तकरें अन्यथा संग्रामका निमंत्रण स्वीकार करें क्योंकि उसकन्यासे हमारे महाराजके चिरंजीवितनय का पाणिग्रहण होचुकाहै.

नरेन्द्रसिंह--[क्रुद्धहोकर मंत्रीसे] क्योंजी इनआपत्तियोंका कारणतो तुमाराही कुल है. और तुम अभीतक कहतेथे कि" इसका हेतु नहीं जानते". यह रहस्य आपने हमपर पूर्वही प्रगट क्यों न किया? और यह किस धर्मशास्त्र में है कि दूसरे की पत्नी हरलेना ? क्या रावण की व्यवस्था तो तुमारे यहाँ नहीं चलती ? जो इस प्रकार व्यवहार ग्राह्य है ; तिसपर ऐसे २ महाराजों के साथ ऐसी अनीति। हरे हरे ! अस्तु ! अब तुमारी क्या इच्छाहै.?

अनंतदेव--[आश्चर्यसे सविनय] स्वामिन् ! ईश्वर साक्षी है. इस विषयमें मैं विंदु विसर्ग भी नहीं जानता. अभी आपके मुखारविन्दसे यहबात सुनताहूं. और मैं अभी जाकर उस कुलाङ्गारको आपके समीप उपस्थित करताहूं. आप जैसा उचित समझिए उसको दंडदीजिए [सेनापतिसे] साह-

सेन्द्र ! तुम उस दुष्ट लड़केको जहाँ पाओ पकड़लाओ.

साहसेन्द्र--जो आज्ञा--[जाताहै]

नरेन्द्रसिंह--[दूतसे] देखो हम अभी महाराजका कार्य करतेहैं. क्योंकि व्यर्थ एक छोटीसी बातपर लड़के भारतका श्राद्ध करना क्या हमलोगोंको उचित है. एक देशमें जहांतक संभवहो आपसमें घनिष्ठता रखनी चाहिए.

[बसंतदेवको लिए साहसेन्द्रका प्रवेश]

बसंतदेव--[राजा और पिताको प्रणाम करके] दासके लिए क्या आज्ञा है ?

नरेन्द्रसिंह--पशु कहींका , अपराध करके और फिर आज्ञा पूछताहै ?

अनंतदेव--क्यों रे ! कुल कुठार ! तू अवन्तीपति के मंत्री की कन्या क्यों लाया ? अधम ! क्याब्याही बालिका से पुनर्बिवाह करके सनातन धर्मका सत्यानाशकरेगा ? [घूरताहै] दुष्ट ! तिसपरभी राजकुलकेसंग ऐसी धृष्टता ?

बसन्तदेव-- [अतिबिनीत भावसे] प्रभो ! जो आपकी इच्छाहो सो कीजिए दासनिस्संदेह इसविषयमेंदोषीहै. किन्तु एकप्रार्थना मेरी यहहै कि यदिसब पूर्ब की घटनावलीको कृपाकरसुन-लीजिए तो मैं बड़ाआपका उपकृत्यहोऊंगा और दासकी निर्दोषता भी प्रगटहोजायगी.

नरेन्द्रसिंह--हांहां ! शीघ्रकहो ? पर विशेष बिलम्बतक सुनते रहने का अवकाशनहीं है.

बसंतदेव--अवंतीपति के मंत्री ने मुझे स्वयं बुलाकर बड़े आग्रह के साथ निजकन्याको मेरे साथ करदिया . महोदय ! स्वयंही बिचारकरें कि यदि मैंबलात्कार उनकी कन्याहरलाता तो आजतकमंत्री महाशय चुपचाप बैठेरहते ? नाथ ! मुझे कदापि नहीं मालूमथा कि उनकी कन्या बिवाहिता है-- और राजकुमारकेसाथ !!! हरेहरे !

नरेन्द्रसिंह--अच्छा जो हुआ सो हुआ. अबशीघ्र उसकन्याको उपस्थितकरो !

बसन्तदेव--[नम्रतासे] दयाकरकेसबवृत्तान्तकहनेकी आज्ञादीजिए-

नरेन्द्रसिंह--अच्छाशीघ्रकहो--

बसंतदेव--मैंने उसकन्याको मंत्रीजीकी आज्ञानुसारही गुप्तरक्खाथा. क्योंकि वे यहीं आकर उसका बिवाहकरनेके लिए कृतसंकल्पथे, अतः इसीकारण मैंने उस बालिकाको गुप्त रक्खाथा कि बिवाह होनेसे स्वयंही सबबातें प्रगट होजायँगी; किन्तुनाथ ! कलस्वयं अवंतीपति के पुत्र बीरेन्द्र सिंहउसकन्याकोमेरेयहाँसेहरलेगए-

नरेन्द्रसिंह--[क्रोधसे लालआँखेंकरके] यदि तू अभी कन्याको नहीं प्रगटकरेगा तो तुझे प्राणदण्डकी आज्ञादीजावेगी--

अनंतदेव--[नरेन्द्रसिंहसे] यदि प्रभुकी अनुमतिहो तो इसे बन्दी करके अवंतीपति के समीपमें भेजदूं. वो जैसे चाहेंगे इससे कन्यालेलेंगे--

नरेन्द्रसिंह--अभी तनिकठहरजाइए[बसंतदेवसे]क्योंक्या कहतेहो ?

बसंतदेव--[कांपताहुआ] यदि अपराध क्षमाहोतो अवंतीपति के राजकुमारका प्रसाद, जोवे मुझे देगएहैं [धीरेसे] दिखादूं-

नरेन्द्रसिंह--हाँ ! क्या हैं और कहाँहै ? जल्दी दिखाओ ?

[चूतर खोलकर मुहर दागनेका चिह्न दिखाताहै और लज्जासे सब सिरनीचा करलेते हैं-]

अनंतदेव--[प्रसन्नतासे] वाह ! अच्छाहुआ, उचित पारितोषिक तो मिला, ऐसेको ऐसाही चाहिएथा.

नरेन्द्रसिंह--[बसन्तदेवसे] चलाजा सामनेसे.दुर्नीत ! मूर्खकहींका [स्वगत] तो अबतो यह निश्चयहुआ कि इसके पास कन्यानहीं है .

[बसंतदेव चलाजाता है]

अनंतदेव--[दूतसे] तुमने तो सब चरित्र देखा न ?

नरेन्द्रसिंह-[दूतसे]महाराजसे सबसमाचार,जो जोतुमनेदेखाहै, बिधिवत् कहदेना, और हमभीमहाराजसे भेटकरनेकेलिये आतेहैं—

दूत- [सहर्ष]महाराजधन्यहैं! यदि सबनृपगण परस्पर ऐसाही प्रेमिकबर्तावकरें तो क्यों फूटका और वैरकाप्रवेश भारतमें हो, किन्तुसभोंकी मति मदांधताने हरली है.अहा! इन्हीं गुणोंसे आपकाअचल प्रतापहै.

[कबित्त]जाके राजकाजतें लजातसुरराजलखि. भूलिजातराजनके राजानिज काजको। मंत्री वरबीररणधीर औ अमीरधीर. करै नित नौलनर सुखदसमाजको ॥ नीतिते करतराजपच्छपाततेनराज. काज निजधर्मसों अतुलसुखसाजको। भनत किशोरी प्रजापालितासदाही रहै. नीतिसों करोर बर्ष राजियतुराजको ॥

पुनः ॥

[कबित्त]राजको प्रमानजाको सकलजहाँनबीच.कीरतिकबित्तफहरातआसमानमें। दुर्जन नरनसब सुजनसमानकिये. मेल सों रहतअजासिंह जंगलानमें ॥ छात्रिनके छत्रपतिपतित उधारनत्यों.बड़ेबड़ेराजनको जीत्योएकआनमें। भनतकिशोरीश्रीनरेन्द्रजूदिनेसदेव. जीवहुकरोड़ बर्ष राजहुजहानमें ॥

नरेन्द्रसिंह--वाहजीवाह! तुमकबिभीहो?श्यावास.क्योंनहो.जबतुमारे महाराजगुणरत्नाकरहैं. तो उन्के समीप रत्नोंकी क्याकमतीहै?[मुद्रार्पण] [दूतप्रणामकरके एकओरसे औरसबकोई दूसरी ओरसे जाते हैं]नगरकाप्रान्तर—पटबस्त्रकेआलयमें महाराज महेन्द्रसिंह और मंत्री सुमंतदेव तथा परिषद् वर्ग बैठे हैं और शिविर सुसज्जित है रहरहकर सैनिकों का कोलाहलहोताहै)

महेन्द्रसिंह-हाय! दूतके मुखसे संपूर्ण वृत्तान्तसुनातो सही परपुत्रक्या यहांसे कहाँबिदेस सिधारा. हेदेव! अबकैसे और कहांकुमा-

रकापतालगेगा! क्योंजी अबतुमारी क्याइच्छाहै?

सुमंतदेव--नाथ (बद्धकरसंपुट)महीपते! हाय! नजाने कैसेकुचक्रमें फँसकर मैंने यह अनर्थ कुकर्म कियाथा! हा! हृदयबिदीर्ण होताहै. मुझपापीको तो नर्कमें भी स्थाननमिलेगा. नाथ! वहतो सतीकन्याथी; जिसने उभयकुलकी लाजरक्खी-नहीं तो कहीं वो मेरी इच्छानुसार पुनर्बिवाहकरलेती तो कैसा मुखमें करखालगता? कितने पुरुषे नर्कमें जाते? और हाय! हमारीतोनजानें क्यादशाहोती, यहकौनकहसक्ताहै!(आंखों में आँसूभरआए)

नरेन्द्रसिंह-(पश्चात्तापसे) अस्तु! जोभयासोभया अबउसका सोचही क्या! औरजो आपने अपने कृतकर्म पर इतनापश्चात्ताप किया यही आपकेलिए उक्तकर्मका प्रायश्चित्तहोगया. परन्तु अब कभी अधर्म पथपर पांवनरखना चाहिए. और इससे निरंतर सावधान रहनाचाहिए.

दो०--सदाधर्म में मतिकरैं जबलौं तनमें प्रान।
कालकबैधरि खायगो थिरतानाहिं निदान॥

(ठहरकर) परन्तु कुमार अब कहां? उस्का अनुसंधान करना उचितहै——

सुमंतदेव-(सविनय)महाराजइसका कुछसोचनकीजिए, राजकुमार जहांहोंगेप्रसन्नहोंगे, यदि ईश्वरअनुकूलहै तो उनसेशीघ्रही भेंटहुआ चाहतीहै. (नम्रतापूर्बक) नाथ! आपके अशेष गुणोंने मुझसे अधमका गुरुतर अपराध क्षमाकरके पुनः सम्मानकेसहित पूर्वपदपरही उपयुक्तरक्खा, क्या यहथोड़ी उदारता एवंअनुकंपाका कार्यहै? अहा! इसेतो अत्रभवान् संसारमें परम प्रसिद्ध हैं. और यह स्तुति कदाचित् कविने आपहीके अर्थ कहीहैः—

(सवैया)--याछितिपै बहुबीरभए पुनिसासन राजकियो सबही है।
पै तुवराज समान न आन जहाँनभयो सुखमूल कभीहै॥

त्योंपुनि आननहोयकभी यहनीति किशोरि कलामसहीहै।
साजहुनीति विवेकभरे जगजीवन जू जबलौं ये मही है॥

(नेपथ्यमें महाकलरवध्वनि—सबकान लगाकर सुनते हैं)

महेन्द्रसिंह—यह कैसा कोलाहल होरहाहै?

सुमंतदेव—महाराज! अभी इसका निर्णय होजाताहै.

(नेपथ्यमें)

[कबित्त] स्वस्तिश्री धरामहराज महाराजआज सकल समाज देवराज छबिधारेहैं। उज्जइनबंशकुलकमलदिवाकरत्यों शीलरतनाकरअनूपछबिवारे हैं॥भनतकिशोरी छेम छत्रिन के छत्रपति कौतुकदराजकाज बिमल बहारे हैं॥ मिलनमही पवर बिरदविशेषबहुअति अनुरागनिसों इत हिपधारे हैं.॥

(सबसुनकर चंचलहोजाते हैं और सहसा द्वारपाल प्रवेश करताहै)

द्वारपाल--(बन्दनाकरके) धर्मावतार! सकल परिकरोंके साथ नव द्वीपपति बड़े धूमधामके सहित आपसे मिलनेके लिए इधरही चलेआते हैं. और महोदयके शिविरमें प्रवेश करचुके हैं. (गया)

महेन्द्रसिंह--उन्हींके बंदीजनोंने यहबिरद पढ़ाहोगा. (प्रसन्नतानाट्य)

सभसभासद--सत्यहै धर्मावतार! (सबहर्षितहोजातेहैं)

सुमंतदेव--अब तो महाराजकी पधरावनी करनीचाहिए.

महेन्द्रसिंह(ससंभ्रम) हाँ! हाँ! शीघ्रचलो हमलोग आगेसे चलकर महाराजकी अगवानी करें,

सब०----बहुतठीकहै पृथ्वीनाथ!इसप्रकारका व्यवहार सर्वोत्तमहोगा- (सबआगे २ जाते. और मध्यहीमें दो महाराजाधिराजों से परस्पर सम्मिलन होताहै. और अवंतीपति नवद्वीप पतिसे तथा सुमंतदेव. अनंतदेव से एवं और परिषद लोग अन्य सभासद वर्गोंसे अभिवादन पूर्वक कंठाश्लेषकरकुशल प्रश्नकरते हैं. और रंगभूमिमें चतुर्दिक् आनन्द छाजाता

एवंनेपथ्यमें बाजे बजनेलगते, शतघ्नीध्वनि होनेलगती है और सबके मुखपर आनन्दकाचिह्न छाजाताहै और सब आलयमें आतेहैं]--

सुमंतदेव--अब महोदयवर्य्य विराजें.

[दोनों प्रजापालक नृपति सिंहासनाधिरूढ होते हैं, और संपूर्ण सभासद गणराजाज्ञासे उचित २ आसनोंपर यथा-स्थान अभिवादन पूर्वक बैठते तथा नेपथ्यमें सन्नाटा छा-जाताहै.]

नरेन्द्रसिंह--आपके श्रीचरणके पधारनेसे आज यहभूमि परमपुनीत और शुभ्रशोभाको प्राप्तभई तथा हमलोग इसअनुपम अ-मोघ दर्शन लाभसे नितान्त अनुगृहीत भए.

महेन्द्रसिंह--[प्रसन्नहोकर] धीमन् ! यह आपका सौहार्द है, किन्तु आपके अपूर्व दर्शनसे जो हमलोग कृतार्थहुए. यह सुख संवाद अनिर्वचनीयहै. परन्तु इसकेहेतु प्रियमंत्री महाशय हैं. अतः ये इससुखके कारण और धन्यवादार्ह हैं.

सब--सत्य है--और इन्हीं महापुरुषके कर्तव्य कौशलसे हमलोगभी परस्परसम्राटसम्मिलनऔर सुनीतिसंलापसे सानंदितहुए

अनंतदेव--[अवंतीपतिको प्रणामकरके] नाथ ! यदि कोईदोष किसी कारणसे गुणहोकर प्रगटहोतो महान आनन्द होताहै, और इसस्थलमेंतो वो प्रत्यक्षहीभया. अतः इसदासके तनयका दोष निजस्वभाव जनित दयासे मार्जितहो; यही सानुनय प्रार्थना है.

महेन्द्रसिंह--[हँसकर] अब इसबातके कहनेकी क्या आवश्यकताहै ? कारणके नरहनेसे उसका कार्यभी नहीं रहता. अतएवजब मंत्री के दोषक्षमाहुए. तोआपके निर्दोषी पुत्रकाअपराधक ब शेष रहा ?

सब-- अहाहा! धन्यप्रभो.ऐसाही है अहा ! यहउज्वल उदारगया !!

नरेन्द्रसिंह- राजन्! चिरंजीवि कुमार कहां हैं ?

महेन्द्रसिंह-नृपाल! अभीतकउनका कोई अनुसंधाननहीं मिला—

[नेपथ्यमें]

"भविष्यति परंश्रेयो प्रसन्ने श्रीनिकेतने—
नतथा श्रम शीलाभ्यां पुरुषार्थेन सर्वदा,,

(सबकानलगाकर सुनतेहैं)

नरेन्द्रसिंह--अहा! यहआशा बाणी का क्या अर्थ है? और किधर से किसने कहा? (ठहरकर)--
हां समझे महाराज! कुमारआयाचाहते हैं.

महेन्द्रसिंह-आपका आशीर्बाद कदापि असत्यनहीं होगा. (सहसावीरेन्द्र प्रबेशकर दोनों नृपोंको प्रणामकर दोनों मंत्रियों को अभिबादनकरताहै, और यह दृश्यदेखकर सभी आवाकहोजातेहैं. और सभी एकमुख होकर अशेष आशीर्बाद देतेहैं. तथा नेपथ्य में मधुरस्वरसे बाजाबजताहै)

महेन्द्रसिंह-बेटा! बिनाकहे सुने इतने दिनों तुम हमारी आखोंकी ओट हो कहां क्याकरतेथे? देखो! तुमारे बिरहमें हमारी कैसी दशा होरही है. (आंखोंमें आँसूभरआए)

वीरेन्द्रदेव--(आखोंमें आसूंभरकर) पिताजी! अब मुझ अधम का अपराध क्षमाकीजिए. हाय! मैं ऐसा पाषाण हृदय भया कि मेरेलिये आपने अतिशय कष्टउठाया (सुमंतदेवसे) देव! मैंने आपके साथभी बड़ीढिठाईकी है. किन्तु बालक जान क्षमाकीजिएगा.

(सम्पूर्ण लोग इनकी बातें सुन प्रेम पूर्ण और अश्रु पूरित होजाते हैं)

सुमंतदेव--कुमार! मुझे जो कुछकहनाथा सोतो तुमीने कहदिया.हा! मैंनेभी कैसा २ तुमारे लिए पापकर्म किया? अस्तु! हरेच्छा! परकहो मेरे आँखोंकी पुतली, मेरी पुत्रीकहां है?

नरेन्द्रसिंह--वाह! यही हमभी पूछना चाहते थे.

(अवगुंठनवती तीन बालाओं का प्रवेश, तथा राजाकी

बंदनाकर और सुमंतदेव के पावोंपरगिर मयंकमंजरी रोती है, और दोनोंसखी पार्श्वमें खड़ी अश्रुबिसर्जनकररही हैं)

सुमंतदेव- बेटामयंकमंजरी ! मैंने तुम्हारे सुकुमार शरीरमें असंख्य यमयातना सदृश क्लेश समूह पहुंचाकर–पिताका नहीं-केवल राक्षस का धर्मदर्साया था. हा! ऐसी कुसुम सी सुकुमारी अबलापर इतना अत्याचार ! व्याधा की नाईं मैंने इस सुकुमारीको इतना कष्टदिया!! (आंसूगिरपड़े) हा, भावी बड़ीबलवती है (दीर्घनिश्वास)

दोनोंनृप–अबपुरानी बातों पर इतना पश्चात्ताप करना वृथा है. मंत्रिन !

सब- यथार्थ है, अबजोकर्तव्य है वो करना उचितहै.–महाराज !

सुमंतदेव--(मयंकमंजरीका आँसूपोछकर) पुत्री ! अब तुमारी आँखोंसे चिरकाल तककेलिये आँसू बिदाहुआ, अबखेद न करो; बेटा ! (मयंकमंजरीका हाथ बीरेन्द्रदेवके हाथमें देकर) युवराज ! आज सबके सन्मुख तुमारे हाथमें मैंने अपना प्राणधन समर्पणकिया, यद्यपि-कुमार ! तुमें मैंने महा दुःखदेकर शत्रुका पूरापरिचय दियाथा. किन्तु तुम अब यहीसमझो कि मयंकका अमृतलेना महाकठिनहै, और उसकेलिये महाकष्ट उठाना पड़ताहै.

(सबहर्षितहोजातेहैं और धन्य २ कीध्वनिसे सभामंडप गूंजजाताहै)

(वीरेन्द्रदेव प्रणामकरके कुछकहाचाहताहै पर कंठरुद्ध होजाताहै)

नरेन्द्रसिंह--अहा ! आजकैसे आनन्दका सागर उमड़पड़ाहै.

महेन्द्रसिंह--इसमें क्या संदेहहै. बड़ेभाग्योंसे ऐसादृश्य देखनेमें आता है--) अचानक अनुराग बल्लभ और आनन्द बल्लभ प्रवेश करतेहैं और राजा तथा मंत्रीको प्रणामकर वीरेन्द्रदेवसे आश्लेषकर प्रेममें गद्गदहो नयननीर बरसाते कुशल प्रश्न पूछनेकी चेष्टाकरते और सबआश्चर्यित और आनन्दित होजातेहैं)

महेन्द्रसिंह–अहाहा येहमारे युवराजके प्राणाधारमित्रभीआगए ठीक है आनमें आनन्दही होताहै.

नरेन्द्रसिंह--इसमें क्या संदेह, और हमतो यही ईश्वरसे प्रार्थना करतेहैं कि ऐसाहीसुखमयदृश्य नित्यनूतन देखनेमेंआवे-

अनुरागबल्लभ-(बीरेन्द्रदेवसे) प्रिय मित्र!हा! नजाने तुमारे बिना हमलोगोंकी क्याक्यादुर्दशा भई, और तुमने भी अवश्य हमलोगोंके नरहनेसे दुःखभोगा होगा–

आनन्दबल्लभ- (गद्गदस्वरसे) बिशेषकहांतककहें, तुमी देखो कि तुमारे बिरह में हमलोग कंकालमात्रावशेषरहगए.

बीरेन्द्रदेव-हमारे हृदयमें जोतुमलोगोंके न रहनेका जितनादुःखथा, वो कहने में, मित्र ! हम पूर्णतः असमर्थ हैं.

सब– भया! महाराज!बीतेको बिसारिये. अरे यहतो हमलोगों के परमानन्दका समयहै (सबक्षणभर आनन्दमेंमग्नहोजाते और नेपथ्य में बैताली गाते हैं)

"रागसोरठ" जियै जुग जुग यह जोरी भोरी-
रहै पिया पीतम दोऊ सुखसों उर आनंद वोरी
सदा बिहँसि बिहरै बिनोदसों प्रीति पुनीतअथोरी
श्रीकिशोरि आनन्दकी सरिता बहै सदा छितिछोरी-

रागयथा रुचि

पुनश्च-- करैं दोऊ प्यारी प्रिय अनुराग।
सदा सनेहनेहमें पागे अनुरागे जियजाग॥
बिहँसि २ बनिताबातन सों अरसिपरसिहियपाग।
श्रीकिशोरि जोरी जुगजीवै निबहै सदा सुहाग॥

(गीत के अनन्तर महा कोलाहल होता है)

महेन्द्रसिंह- यहकलरव कैसा होरहाहै?

एकसभ्य–(सविनय) नाथ ! दानाध्यक्ष इसआनन्दकी बधाई में याचकोंको अयाची कररहे हैं. उसीका यह घोररव है.

(सबसुनकर मुदित होते हैं)

वीरेन्द्रदेव--(पितासे) पूज्यचरण ! ये दोनों मेरे प्राणाधार मित्र हैं. और हमारी प्रतिज्ञाकी आशासे जीतेहैं, यदि तातकीआज्ञा होतो इनकी भी बाञ्छा पूरीकरके मित्रधर्मको सत्यकरूं.

महेन्द्रसिंह–पुत्र ! तुम समर्थहो, और अधिकार तुमें है, जो चाहो सो करो.

वीरेन्द्रदेव–जैसी आज्ञा. (कामिनीका हाथ आनन्द बल्लभके हाथ में और सौदामिनीका हाथ अनुराग बल्लभके हाथमें ग्रहण करादेते हैं और सम्पूर्ण सभा महा आनन्दितहो जय जय ध्वनि करती है)

नरेन्द्रसिंह–अहा ! नजाने संसारका सुख सौख्यआजही समाप्त हो जायगा ?

महेन्द्रसिंह–(प्रसन्नहोकर) नरेन्द्र ! यही तो अनुभव होताहै.

वीरेन्द्रदेव–(मित्रोंसे) प्रिय मित्रगन ! लो आजमैं अपने प्रणसे उरिण भया अब तुमलोगोंको उचित है कि इनबालाओंको आजन्मसुखसे रख आनन्दसे कालयापन करना.

(दोनों लज्जितहो सिरनीचाकरलेते हैं)

सबकेसब--हाँ ! अब तो यही उचित है.

(महात्मा जावालिऋषि आते हैं, और सबसभा उठखड़ी होती तथा चरण बन्दना करती है एवं परम प्रतापशाली दोनों नृपति ऋषिवर्यको सिंहासनाधि रूढकर आपसन्मुख बद्धकर संपुट खड़ेहोजाते हैं)

महेन्द्रसिंह--(चरमें प्रणिपात करके) प्रभो ः आपधन्यहैं, केवलपरोपकारही आपका ब्रतहै. आपके सन्मुख शत्रुमित्र उदासीन सबसमान हैं. और संसारमें आपकी कीर्ति किसीसे छिपी नहींहै. मेरेबड़े भागजो गुरुवर्य्यने ऐसे आनन्दके समयचरण दर्शनदिया.

नरेन्द्रसिंह--इस्में क्या संदेहहै ? प्रभुवर, तो सनातनसे हमलोगोंके गुरूहैं और महात्माओं का स्वभावही ऐसाहोता है. तिस्में

नाथ शान्तिकेअवतार हैं.(मयंकमंजरीचरणमेंगिरकेप्रणाम करतीहै,और जावालिऋषि उठाकर प्रेमसेकंठमेंलगालेतेहैं)

जावालिऋषि--पुत्री ! तू सतीगणोंमें अग्रगण्या है, तेरीकीर्त्तिसंसार में अचल रहेगी (वीरेन्द्रकेहाथमें मयंकमंजरीका हाथदेकर) यह मैंने अनुरागसे वीरेन्द्रदेवको मयंक अर्पण किया. जा, पुत्रीतू सदैव अपने पतिकी प्यारी होगी--बेटा! वीरेन्द्र ! सदैव नीतिसे प्रेम निर्वाह करना.(वीरेन्द्र प्रणामकरता और चारोओरसे जय २ और धन्य २ कीघोरध्वनि होने लगती है)

वीरेन्द्रदेव--अपने प्राणदाता गुरुवर्य्यकी शिक्षा शिरोधार्य्य है.

जावालिऋषि--(महेन्द्रसिंहसे) राजन् ! विशुद्धप्रेम,सतीधर्म, धर्मकी महिमा, पापकाफल, राजनीति, मैत्रीआदि संपूर्ण चमत्कारिक विषयोंको तुमनेदेखा. अब और कोईइच्छा है ?

महेन्द्रसिंह- नाथ! जबकि आपकी अमोघ दया दास पर है तब फिर क्या कमती दासको है. जो पूज्य चरणार्बिन्द को परिश्रम दे. कोई इच्छाशेष नहीं जिसको यह कहे. केवलइतनाही कि यदि प्रभू! प्रसन्नहैं तो यह बरप्रदानदीजिए:-

पालहि प्रजा नृप प्रेम सों. सबएकता महँ चित धरैं।
पियसों मिलै अनुरागि तिय.धरमहु सुखहि सेवनकरैं॥
अनुराग बागपराग पौनहु. चारिदिसिकोमलहरै।
सब मेटि अंध परंपरा आनँद मही मंगल भरै॥

सब०- बस ! यही इच्छा हम सभोंकी है क्योंकि इतनेही में सबका कल्याणहै.

जावालिऋषि. तथास्तु ! हम तुम लोगों की दृढ़ भक्ति से प्रसन्नभए क्योंकि तुमलोग परम देशानुराग व्रत पारायणहो-

(रंगभूमि में आनन्द छा जाता . नेपथ्य में बाजाबजता और भुशुंडिध्वनि होती तथा धीरे२ परदागिरताहै.)

इति

आनन्दरघुनन्दन नाटक

जिसका नामही आनन्दी है तो उसके चरित्रोंकी नाटक क्यों न आनन्दीहोगी--इसमेंभी उन्हीं मर्यादा पुरुषोत्तमके चरित्रोंका सुधा तड़ाग भराहुआहै--रामरस रसिकोंको तो अवश्यही अवलोकन करना चाहिये--

हनुमन्नाटक

बख्शीराम जमादारकृत--बहुत उत्तम देखनेके योग्य पुस्तक है--

विद्याविलासी व सुखबन्धनी नाटक

भारतवर्षमें जोकि बहुधा बालकपन में बिवाह कियाजाताहै और उसके बुरेपरिणाम नहीं बिचारेजाते और बिवाहादिमें जो फ़ज़ूलखर्चीहोती है-- उसीका विषय इसमें दर्शाया गयाहै--विद्याविलासियोंको तो अवश्यही देखना चाहिये--

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक

ब्रजबासी दासकृत--छन्दोंमें महा विवेक और महामोहका युद्ध दर्शायागया है--यह नाटक ज्ञानी पुरुषोंके अवलोकन करनेके योग्य है-- इसके पढ़ने से ज्ञानकी वृद्धि और मोहकानाश होताहै--

तिलिस्मफिरंग

इसमें अपूर्व२ जादूकरनेकी युक्ति व अंगरेज़ोंके उत्तम२ अलौकिक खेलवर्णित हैं--जिसको प्रथम डाक्टरगिरी करी साहबकी अंगरेज़ी किताब से पं० मोतीलाल उल्थाकार महकमागवर्नमेंट पंजाबने छपनेकेलिये व प्रसिद्धहोनेके लिये उर्दूमें तर्जुमा कियाथा—सन् १८६८ ई० में मतबा अवधअखबार को उक्त पं०साहबकी ओरसे इसपुस्तक के छापनेका अधिकारमिला और छापीगई—-पश्चात् मतबानेअपनीओरसे नागरीमेंतर्जुमाकराकर छपवायादेखनेकेयोग्य है-

अजायबुल्मख्लूक़ात

नागरीमें--इसमें सम्पूर्ण सृष्टिके वृत्तान्त व आकाशादिकी उत्पत्ताका वर्णनहै और उचित २ स्थानोंपर चित्रभी लगे हैं—

अवशिदेखियेदेखनयोग्य ॥

महाभारत भारतखण्ड आल्हा ॥

प्रकटहोकि व्यासकृत महाभारतके भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा आदि १४ पर्व्वोंका उल्था आल्हाकी रीतिपर बनाया गया है जिसके पढ़नेसे तुरन्त बीरता दर्शाती है यदि आल्हाके तौरपर साज बाजकेसाथ गाया जावे तबतो कैसाही कायर व क्लीवहोवे —जिससमय भीष्मपितामह भीम अर्जुन व कर्ण अभिमन्यु आदिककीलड़ाई पढ़े या सुने तुरन्तही बीरता उत्पन्न होआवेगी एकतो इसके पढ़ने सुननेका माहात्म्य दूसरे गानविद्या की तानका आनन्द है—विशेषकर आल्हाआदि गानविद्या रसिकों व इतिहास वेत्ताओं के तो अवश्य अवलोकन करने योग्य है— छापा व काग़ज़ अच्छा है हरूफ़ बड़े हैं जिल्द बँधीहुई है मूल्य चौदहों पर्व्वोंका २) दो रु० व डाकमहसूल ।)= है—अलग २ पर्व्वें न मिलेंगी—

वाजपेयि पण्डितरामरत्नशर्म्मा
नवलकिशोर प्रेस लखनऊ
हज़रतगंज
